786

अल्लाह की डाली हुई बिना
जिस पर लोगों को पैदा किया (रूम : 30)

दीने फ़ितरत

دینِ فطرت

प्रोफेसर डाक्टर मुहम्मद मसऊद अहमद
एम.ए., पी.एच.डी.

इदारा मसऊदिया 5, 6/2, ई0 नाज़िमाबाद, करांची

1426 हि0/2005 ई0

अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर
लोगों को पैदा किया। (रूम, 30)

दीने फ़ितरत

(دین فطرت)

प्रोफ़ेसर डाक्टर मुहम्मद मसऊद अहमद

(एम. ए., पी. एच. डी.)

मुतरजिम (अनुवादक)

डाक्टर नईम अज़ीज़ी

इदारा मसऊदिया

5, 6/2 ई. नाज़िमाबाद, कराची (सिन्ध)
इस्लामी जम्हूरिया, पाकिस्तान 2005 ई.

प्रकाशन पब्लिशर के हक़ में सुरक्षित

किताब का नाम : दीने फ़ितरत

मुसन्निफ़ (लेखक) : प्रोफ़ेसर डाक्टर मुहम्मद मसऊद अहमद

मुतरजिम (अनुवादक) : डाक्टर नईम अज़ीज़ी (बरेली शरीफ़)

पब्लिशर : इदारा मसऊदिया, कराची

तादाद : एक हज़ार (पहला एडीशन)

क़ीमत : 60-00 रुपये

मिलने के पते :

1. नुसरत एजूकेशनल सोसाइटी (रजि.), शाही जामा मस्जिद, फ़तेहपुरी, देहली - 110006
2. मकतबा जामे नूर, 422, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली - 110006
3. रज़वी किताब घर, 425, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली
4. कुतुबख़ाना अमजदिया, 425, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली - 110006
5. फ़ारूक़िया बुक डिपो, 422, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली - 110006
6. रज़ा इस्लामिक एकेडमी, 104, जसोली, बरेली - 243003
7. आलाहज़रत दारुल कुतुब, 28, इस्लामिया मार्केट, बरेली
8. क़ादरी किताब घर, इस्लामिया मार्केट, बरेली - 243003
9. मकतबा रहमानिया, मो. सौदागरान, बरेली - 243003

अर्ज़े मुतरजिम

(अनुवादक का निवेदन)

प्रोफ़ेसर डाक्टर मुहम्मद मसऊद अहमद साहब की शख़्सियत को किसी इन्ट्रोडक्शन की ज़रूरत नहीं। वह माहिरे रज़वियात भी हैं और इन्टरनेशनल फ़ेम के राइटर और स्कालर भी हैं। आप की उर्दू किताब "दीने फ़ितरत" हिन्द-ओ-पाक में बहुत मक़बूल हुई। इस किताब में प्रोफ़ेसर साहब ने क़ुर्आन शरीफ़, तौरैत (Torah), ज़बूर (Psalms) और इन्जील (Evangle) वग़ैरह आसमानी किताबों (Revealed Books), हिन्दू, सिक्ख और पारसी धर्म वग़ैरह की ग़ैर आसमानी मज़हबी किताबों जैसे वेद, पुराण, रामयण, गुरूग्रन्थ और जिन्द ओस्ता वग़ैरह तथा ग़ैर मुस्लिम स्कालरों और Orientalfists के हवालों से साबित किया है कि इस्लाम "दीने फ़ितरत" (Nature's Own Divine Religion) है और रंग, नस्ल, क़ौम, इलाक़ा और देश के भेद भाव के बिग़ैर सारे इन्सानों का दीन है जो अल्लाह तआ़ला का अता किया हुआ दीन है और उसके हां सिर्फ़ यही दीन है।

प्रोफ़ेसर साहब ने अहादीस (Traditions of The Holy Prophet); ब्रिटिश नव मुस्लिमों और भारतीय नव मुस्लिमों के एतराफ़ात (Confessions) से भी इसी सच्चाई को उजागर किया है।

इस किताब की स्टडी मुसलमानों के इलावा ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी फ़ायदे मन्द होगी।

प्रोफ़ेसर साहब ने "दीने फ़ितरत" के हवाले से दुनिया के तमाम इन्सानों और ग़ैर मुस्लिमों को इस दीन की तरफ़ बुलाया है और उन्हें उनके अस्ली घर की तरफ़ लौटने की दावत दी है और इसे सबसे बड़ी कामयाबी बताया है, जो हक़ है।

प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊद अहमद की फ़रमाइश पर मैंने उनकी उर्दू किताब "दीने फ़ितरत" का तर्जमा किया है लेकिन तर्जमे के नाम पर सिर्फ़ लिपि की तब्दीली पर बस न करके

हिन्दी तर्जमा बल्कि किताब की भरपूर तर्जमानी (Interpretation) की कोशिश की है ताकि उर्दू भाषा से वाक़िफ़ और नावाक़िफ़ मुस्लिमों के इलावा हिन्दी भाषी और ग़ैर मुस्लिम रीडर्स को भी किताब की स्टडी में दिक़्क़त न हो। कठिन अरबी, फ़रसी और उर्दू शब्दों के हिन्दी और अंग्रेज़ी बदल दे दिए गए हैं और आम हिन्दी शब्दों और गंगा जमुनी भाषा का इस्तेमाल किया है!

हो सकता है प्रूफ़ रीडिंग में कुछ ग़लती रह गई हो लेकिन इससे मैटर को समझने में परेशानी नहीं होगी।

क़ुर्आन शरीफ़ की आयतों और हदीसों को अस्ल टेक्स्ट (अरबी) में न लिख कर सिर्फ़ उनके तर्जमे पेश किए गए हैं।

उम्मीद है कि यह किताब मक़बूल होगी और दीन की तबलीग़ का एक अच्छा ज़रिया बनेगी।

डाक्टर नईम अज़ीज़ी
104, जसोली, बरेली शरीफ़

786/92

अपनी बात

प्रोफ़ेसर डाक्टर मुहम्मद मसऊद अहमद

अल्लाह तआ़ला ने एहसान फ़रमाया, हमको इन्सान बनाया, छोटा सा जहान बनाया, देखने के लिए आँखें दीं, सुनने के लिए कान दिए, सूंघने के लिए नाक दी, चखने के लिए ज़बान दी, पकड़ने के लिए हाथ दिए, चलने के लिए पैर दिए, सोचने समझने के लिए दिमाग़ दिया---फिर दिल दिया गोया सब कुछ दिया---चारों ओर ही नहीं, छओं दिशाओं में नेअ़मतें ही नेमअ़तें हैं। गिनते गिनते थक जायें, नेअ़मतें ख़त्म होकर न दें --- कैसा करम फ़रमाया---फिर राह दिखाई और राह पर चलाया, इमाम-ओ-मुक़तदा (Leader) बनाया, करम पर करम फ़रमाया --- मगर बहुत से इन्सानों ने उसका एहसान न माना, अपनी-अपनी राहें ख़ुद चुन लीं, हालत यह हो गई :

जाता हूँ थोड़ी दूर हर इक राहरौ के साथ
पहचानता नहीं हूँ अभी मन्ज़िल को मैं।

अल्लाह ने ज़िन्दगी दी, बे-आसरा न रक्खा, दस्तूरेहयात (Code of Life) भी अता फ़रमाया, दीने फ़ितरत (Nature's Own Divine Religion) से सरफ़राज़ फ़रमाया।

दीने फ़ितरत उसी वक़्त से मौजूद है जब से दुनिया क़ाइम हुई। एक लाख चौबीस हज़ार से कम या ज़्यादा नबियों और पैग़म्बरों ने अल्लाह की मख़लूक़ को उसकी तालीम दी। इन्सान के इस धरती पर क़दम रखते ही दीने फ़ितरत इस्लाम भी नाज़िल हो गया था। यह दुनिया के सब मालूम ख़ित्तों में पहुँचा और अब नामालूम ख़ित्तों में भी पहुँच गया।

यह कहना कि दीने फ़ितरत सातवीं सदी ईसवीं में आया और उसी सदी में सब कान्टीनेन्ट में भी आया, तारीख़ी हैसियत से सही नहीं, इसी भ्रम को दूर करने के लिए यह किताब लिखी

गई है। इस सच्चाई को समझने के लिए चन्द दुनियावी सच्चाइयों का जानना भी ज़रूरी है जिसके लिए हम क़ुर्आन शरीफ़ से पूछेंगे क्योंकि यह दुनिया की अकेली सबसे सच्ची और ख़री किताब है जिसमें सारे जहान की बातें है, दुनियावी तारीख़ (सांसारिक इतिहास) का यह एक अहम माख़ज़ (महत्वपूर्ण स्रोत) है जिसको मज़हब ओ मिल्लत के भेद भाव के बग़ैर दुनिया के अक्सर स्कालरों ने तसलीम किया है जिसकी डिटेल इसी किताब में आती है।

क़ुर्आन शरीफ़ के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले इन्सानों से अपनी बन्दगी का वादा लिया (सूरा आराफ़, आयत न. 172) इस लिए अल्लाह के सब रसूलों ने यही पैग़ाम दिया और यही तालीम दी कि अल्लाह की इबादत करो (सूरा नहल, आयत न. 36)। बन्दों से वादा लेने के बाद रसूलों से अपने ख़ास महबूब नबी पर ईमान लाने और उनकी मदद करने का वादा लिया इस शर्त पर कि वह इन रसूलों के सामने आ जायें (सूरा आले इमरान, आयत न. 81)।

अल्लाह तआ़ला ने दुनिया वालों की हिदायत (guidance) के लिए नबियों और रसूलों को भेजा। ज्यों-ज्यों दुनिया फैलती गई और इन्सानी समाज फैलता बढ़ता चला गया तो नबियों और रसूलों के सिलसिले को एक ज़ात पर ख़त्म किया जो सारी दुनिया के लिए और सारे इन्सानों के लिए काफ़ी है---सब रसूल (Messengers) दीने फ़ितरत का पैग़ाम लेकर आते गए और अपनी-अपनी ज़बानों में (सूरा इब्राहीम, आयत न. 4), अपनी-अपनी उम्मतों (nations) को बताते गए (सूरा नहल, आयत न. 36)। कोई उम्मत बाक़ी न बची (सूरा क़सिस, आयत न. 59), सबने याद रक्खा, याद करते रहे और उस आने वाले महबूब की दुहाई देते रहे (सूरा बक़रा, आयत न. 89) हर आसमानी किताब (scriptures) में आपका ज़िक्र मौजूद है, इसलिए हर उम्मत के लोग आपके आने से पहले आपको इस तरह जानते पहचानते

थे जिस तरह अपने बेटों को जानते पहचानते हैं (सूरा बक़रा, आयत न. 146; सूरा अनाम, आयत न. 2)। मगर जब सातवीं सदी ईसवी में वह ज़ाहिर हुए और एलान फ़रमाया :

तर्जमा (अनुवाद) : तुम फ़रमाओ ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।

(क़ुर्आन : सूरा आराफ़, आयत न. 158)

आपने तो सब इन्सानों से ख़िताब फ़रमाया (सम्बोधित किया), हर रंग के इन्सान, हर नस्ल के इन्सान, हर क़बीले (tribe) के इन्सान, सब को उनके पास आना चाहिए था मगर बहुत सों ने पीठ फेर ली---यह क्या हुआ? होना तो यह चाहिए था कि जिसके चर्चे सदियों से चले आ रहे थे, जिस पर ईमान लाने के लिए हर नबी (prophet) अपनी उम्मत को हिदायत कर रहा था (निर्देश कर रहा था), सब को उस नबी पर ईमान ले आना चाहिए था मगर जो ख़ुशनसीब थे वही ईमान लाए बाक़ी नहीं।

ज़माना गुज़रता गया, सच्ची बातें छुपाई जाती रहीं मगर सच्ची बातें छुपा नहीं करतीं, वह ज़ाहिर होकर रहती हैं---जब वह ज़ाहिर हुईं तो नैपोलियन ने क़ुर्आनी तालीमात की रोशनी में एक बेमिसाल हुकूमती सिस्टम क़ाइम करने की बात की जो इन्सानों को ख़ुशियाँ दिला सकती है और जार्ज बरनार्ड शाह ने कहा :

"I prophecied about the faith of Muhammad that it would be acceptbable tomorrow as it is being acceptable to the Europe of today."

(A Collection of writing of some of the eminent scholars voking Muslim Mission 1935, p 77; Ref-Islam, The Religion of All Prophets, 1990, p 57)

तर्जमा (अनुवाद) : मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दीन (धर्म) के लिए यह भविष्यवाणी की है कि जिस तरह आज यह यूरोप के लिए मान्य होने लगा है उसी तरह

कल भी मान्य होगा।

और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने तो साफ़ लफ़्ज़ों में कह दिया :

"वह ज़माना दूर नहीं जब इस्लाम हिन्दू मज़हब पर ग़ालिब (overcome) आ जाएगा।" (सय्यारा डाइजेस्ट, लाहौर, क़ुर्आन न. अप्रेल 1970 ई. पेज न. 37)

1947 में सबकान्टीनेन्ट (पाकिस्तान, हिन्दोस्तान, बंगलादेश) में मुसलमानों की तादाद 50 करोड़ से भी ज़्यादा होगी।

ख़ालिस हिन्दू धर्म के मानने वाले शायद अब इस तादाद में मुसलामानों के बराबर हों। अगर तरक़्क़ी की यही रफ़्तार रही तो टैगोर की भविष्यवाणी सच साबित हो सकती है।

जैसा कि अ़र्ज़ किया गया कि सच्ची बातें छुपाए नहीं छुपतीं। संस्कृत के एक ब्राह्मण विद्वान, आधुनिक युग के स्कालर और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी (भारत) के पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय ने हिन्दुओं की मज़हबी किताबों और वेदों को खंगाला तो वह बड़ी सच्चाई खुल कर सामने आ गई जिस को सदियों से छुपाया जा रहा था। उन्होंने कालकी अवतार "कलयुगी अवतार-जगतगुरू" नामक एक रिसर्च पेपर लिखा और इसमें हिन्दुओं को दावत दी :

"हिन्दू मज़हब के मानने वाले जिस कालकी अवतार का इन्तेज़ार कर रहे हैं वह अस्ल में मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ही हैं जो आज से 1400 साल पहले ज़ाहिर हो चुके इसलिए हिन्दुओं को अब किसी 'कालकी अवतार' के इन्तेज़ार में वक़्त बरबाद न करना चाहिए और फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लेना चाहिए।"

(अख़बर नवाए वक़्त, मुल्तान, इश्यू 19, दिसम्बर 1997 ई.)

आधुनिक युग के हर स्कालर का यही फ़ैसला है कि हमें इस्लाम क़बूल कर लेना चाहिए गोया इस दीने फ़ितरत को जो सब इन्सानों के लिए है। इस फ़ैसले पर ठंडे दिल से ग़ौर करना चाहिए। यह दावत किसी सच्चाई को छोड़ने की बात नहीं कर

रही बल्कि एक बड़ी सच्चाई को क़बूल करके अपने घर में आने की बात कर रही है, अपने वतन में रहने की बात कर रही है मगर अक़्लमन्दी की जितनी ज़रूरत है दीवानगी उतनी ही बढ़ती जाती है। एक अमरीकी जर्नलिस्ट ने तो यहाँ तक तजवीज़ दी कि मक्का पर एटम बम गिराया जाता, जर्नलिस्ट के ऊपर ऐसा फ़ालिज गिरा कि डाक्टर हैरान रह गए। (नऊ़ज़ुबिल्लाह Allah forbid) !

(जंग अख़बार, कराची, इश्यू 4, मार्च 2002 ई.)

किताब लिखने का मक़सद यह है कि हम सच्चाईयों से मुँह न मोड़े, सच्चाईयों को मान लें और दीने फ़ितरत में दाख़िल होने के लिए ग़ौर-ओ-फ़िक्र करें, तास्सुबात (prejudice) और जज़बात से ऊपर उठ कर सोचें और समझें।

इस किताब को निम्नलिखित ग्यारह अध्याय (chapters) पर बाँटा गया है।

1. (इफ़्तिताहिया-प्रारंभ) मज़हब की ज़रूरत
2. दीने फ़ितरत इन्सान की पैदाइश से पहले
3. दीने फ़ितरत इन्सान की पैदाइश के बाद
4. दीने फ़ितरत और हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम
5. दीने फ़ितरत हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के नबूव्वत के एलान के बाद
6. दीने फ़ितरत और क़ुर्आन शरीफ़
7. दीने फ़ितरत और दुनिया के मज़ाहिब (दुनिया के धर्म)
8. दीने फ़ितरत - इस्लाम
9. दीने फ़ितरत के ख़िलाफ़ तहरीकें (Movements)
10. दीने फ़ितरत की चन्द झलकियाँ
11. दीने फ़ितरत---सलाए आम (Open Invitation या call for all mankinds)
12. हर्फ़े आख़िर (Conclusion)

इस किताब का मौज़ू "इस्लाम" ही है क्योंकि दूसरे

आसमानी मज़हबों का वजूद इसी से टूट कर बना है। कोशिश की गई है कि बिना किसी तास्सुब व तंगदिली या जानिबदारी या तरफ़दारी के दीने फ़ितरत के बारे में पढ़ने वालों के सामने सच्चाईयाँ पेश कर दी जायें। अब क़बूल करना न करना इनका काम है।

कुछ उम्र का तक़ाज़ा है कि 72 साल उम्र हो चुकी है। एक के बाद एक बीमारियाँ और उस पर भांति-भांति की मसरूफ़ियात ने इतनी मोहलत न दी कि जिस तरह दिल चाहता था उस तरह किताब लिखी जाती। जो कमियाँ रह गई हैं वह आने वाले पूरी कर सकते हैं। किताब में शाायद कुछ बातें दोबारा आ गई हों। जब बात सुनानी हो तो एक बार काफ़ी है मगर जब दिमाग़ में जमानी हो और दिल में बिठानी हो तो दोबारा आ जाने में कोई हरज नहीं। 1997 ई. में किताब का मैटर जमा किया फिर 1998 ई. में मक़सूद हुसैन साहब उवैसी ने 2002 ई. में आर्टिकिल का दूसरा फेयर मैटर तय्यार किया और अ़ल्लामा रिज़वान अहमद नक़्शबन्दी, प्रोफ़ेसर हाफ़िज़ सय्यद मक़सूद अली और मौलाना इक़बाल साहब ने दोबारा मैटर को देखा। अल्लाह इन सब को अच्छा बदल दे। भाई शुएब इफ़्तिख़ार साहब ने इसकी कम्पोज़िंग की और जनाब हाजी मुहम्मद इलियास साहब "इदारा मसऊदिया" की तरफ़ से इसको पब्लिश कर रहे हैं।

मौला तआ़ला सभी हज़रात को अच्छा इनाम दे और इस किताब को मुझ फ़क़ीर के लिए आख़िरत (Hereafter) का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन!

मुहम्मद मसऊद अहमद
कराची, सिन्ध
पाकिस्तान
24 मुहर्रम 1423 हिजरी
6 अप्रेल 2002 ई.

दरीचे :-

1. इफ़्तिताहिया (प्रारंभ) - मज़हब की ज़रूरत
2. पहला बाब (पहला अध्याय) - दीने फ़ितरत इन्सान की पैदाइश से पहले
3. दूसरा बाब - दीने फ़ितरत इन्सान की पैदाइश के बाद
4. तीसरा बाब - हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बेअ़सत (annunciation) से पहले
5. चौथा बाब - दीने फ़ितरत और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम
6. पाँचवा बाब - दीने फ़ितरत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत के बाद
7. छटा बाब - दीने फ़ितरत और क़ुर्आने करीम
8. सातवां बाब - दीने फ़ितरत और मज़ाहिबे आ़लम (दुनिया के धर्म)
9. आठवां बाब - दीने फ़ितरत : इस्लाम
10. नवां बाब - दीने फ़ितरत के ख़िलाफ़ तहरीकें (Movements)
11. दसवां बाब - दीने फ़ितरत की चन्द झलकियाँ
12. ग्यारहवां बाब - दीने फ़ितरत सलाए आम (Open Invitation)
13. हर्फ़े आख़िर (Conclusion)

The Prophecy runs as follows

(नीचे लिखी भविष्यवाणी इस तरह है)

Original Sanskrit Text

(अस्ल संस्कृत के शब्द)

एतस्मिन्नन्तिरे मलेच्छ, आचार्य्येण समन्वितः।। महामद इति ख्यातः शिष्य शाखा समन्वितः ।।५।।

नृपश्रेव महादेवं मरुस्थल निवासिनम्।। गंगाजलैश्र संस्नाप्य पंचगब्यसमन्वितैः। चंदनादि भिरभ्यचर्य तुष्टाव मनसा हरम ।।६।। भोजराज उवाच। नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थल निवासिने। त्रिपुरा सुर नाशाय बहुमाया प्रवतिंने ।।७।। म्लेच्छैर्ग प्राय शुद्धाय सच्चिदानन्द रुपिणे। त्वं मां हिकिंकरं विद्धि शरणार्थ मुपागतम् ।।८।।

Translation :

Just then an illiterate man with the epithet of Teacher, Mahammad by name, came along with his companions. Raja (Bhoja in vision) to that great Deva, the denizen of Arabia purifying with the Ganga water and with the five things of cow offered Sandal wood and pay worship to him O denizen of Arabia and Lord of the Holies to thee is my adoration. Othon who has found many ways and means to destroy all the devils of the world! O pure one from among the illiterates, O sinless one, the spirit of truth and absolute master, to thee is my adoration! Accept me at thy feet.

(Bhavishya Purana, Parv 3, Khand 3, Adhyay 3, shalok 5-8)

And again

Original Sanskrit Text

।।अथर्ववेद २०/१२७।।

इदं जना उपश्रुत नरांशस स्तविष्यते।

षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आरुशमेषु दद्महे ।।१।।

उद्रायस्यं प्रवाहिणों बघुमंन्तोहिंदेशे।

रथस्य नि जिंहीष्ते दिवईष्माण उपस्पृंश ।।२।।

एष ऋषये मामहे शतं निष्कान्दश स्रजः।

त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ।।३।। -------- (१)

Translation :

O people, listen to this emphatically! the man of praise (Muhammad) will be raised among the people. we take the emigrant in your shelter from sixty thousand and ninety enemies whose conveyance are twenty camels and she camles; whose loftiness of position touches the heaven and lowers it.

He gave to Mamah Rishi hundreds of gold coins, ten circles, three hundred Arab horses and ten thousand cows. (Atharva veda, Khanda 20, Sukta 127. Mantra 1-3)

(भविष्य पुराण – अथर्ववेद, काण्ड २०, सूक्त १२७, मन्त्र १-३ : हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की आमद और आपकी शान का ज़िक्र)

786

इन्तिसाब (Dedication)

इन्सान के नाम

✶ जिसके लिए धरती बनाई गई।
✶ जिसके लिए आकाश सजाया गया।
✶ जिसके लिए दरिया बहाए गए।
✶ जिसके लिए बूटे लगाए गए।
✶ जो न होता तो कुछ न होता, अल्लाह ही अल्लाह होता।
✶ जो न होता तो बुलबुल के चहचहे कौन सुनता?
✶ रंग बिरंगे धनक कौन देखता?
✶ लालाज़ारों का नज़ारा कौन करता?
✶ कोहसारों की हवा कौन खाता?
✶ जो न होता तो हर मौजूद परेशान होता।
✶ सितारे तरसते रहते।
✶ बर्ग-ओ-बार (पत्ते और फल) फड़कते रहते।
✶ पानी बरसता रहता।
✶ नदी नाले बहते रहते।
✶ जो न होता तो वीराने आबाद न होते।
✶ जो न होता तो ज़िन्दगी का लुत्फ़ न आता।
✶ जो न होता तो हर चीज़ बे मक़सूद बे मानी नज़र आती।
जिसके दम से रौनक़ है
✶ जिसके दिमाग़ से उलूम (विद्या) फूटते और फ़ुनून (कला) जन्म लेते हैं।
✶ जिसके हौसले के सामने शम्स-ओ-क़मर ज़ेर हैं।
✶ जिसकी हिम्मतों के सामने बहर-ओ-बर सज्दा रेज़ हैं।
✶ जिसके दम से जन्नत भी आबाद है, दोज़ख़ भी आबाद है।
✶ जिसने राज़ों से पर्दा उठाया।
✶ जिसने मदफ़ून (गड़े हुए) ख़ज़ानों को निकाला।
✶ जिसने नज़र न आने वाली हक़ीक़तों को नज़र के सामने

ला खड़ा किया।

✶ जिसकी पेशानी में सज्दे की तड़प है।

✶ जिसके दिल में दर्दे मोहब्बत की कसक है।

✶ जिसकी आँखों में सोज़े दुरूं (आन्तरिक भावनाओं) के आँसू हैं।

✶ जो कुछ नहीं सब कुछ है।

✶ जो इल्म की कान है, जो फ़न की शान है।

✶ जो हुनर की आन है।

✶ जिसके लिए अल्लाह ने काबा बनाया।

✶ जिसके लिए अल्लाह ने दीने फ़ितरत (Nature's Own Divine Religion) बनाया।

✶ जिसको सीधे रास्ते पर चलाया।

✶ जिसको क़ायद-ओ-राहबर (Leader & Guide) बनाया।

✶ लाल-ओ-गौहर जिस से शर्माते है।

✶ सीमो ज़र (धन दौलत) जिसके पैरां तले पामाल होते हैं।

✶ जो फ़क़ीरी में भी शाही करता है।

✶ जो क़ुव्वतों का सरचश्मा (स्रोत) है।

✶ जो रिफ़अ़तों (ऊँचाईयों) का मीनारा है।

✶ जिसके इल्म की उड़ान ने दुनिया को हैरान कर दिया।

✶ जिसके फ़न की नुमाइश ने हुस्न-ओ-जमाल का गुलशन खिला दिया।

✶ जिसकी कारीगरी ने जहान में ग़लग़ला बपा कर दिया।

✶ जो नेकी पर आए तो अब्रे बारॉं (बारिश का बादल) है।

✶ जो बदी पर आए तो जलती हुई आग है।

✶ जिसके सामने पहाड़ रास्ते की धूल है।

✶ जो संवर जाए तो एक जहान संवर जाए।

✶ जो बिगड़ जाए तो एक जहान बिगड़ जाए।

हां ऐ इन्सान!

तू कहां दर बदर फिर रहा है।

तू कहॉं भटकता फिर रहा है?

दीने फ़ितरत तेरे इन्तेज़ार में राह तक रहा है।

Authencity of the Qur'an

Thanks to its undisputed authenticity, the text of the Qur'an holds a unique place among te books of Revelation, Shared neither by the Old nor the New Testament.
(Maurice Bucaille : The Bible, The Qur'an and Science, p 126)

इफ़्तेताहिया (प्रारंभ)

मज़हब की ज़रूरत

दुखी इन्सानियत को कोई ग़मख़्वार चाहिए, कोई दर्दमन्द चाहिए, कोई हमदर्द चाहिए --- कोई ग़मख़्वार नहीं, कोई दर्दमन्द नहीं, कोई हमदर्द नहीं --- जाएं तो कहाँ जाएं, किसको दिल का हाल सुनाएं? कोई नहीं सुनता, सब अपनी-अपनी में लगे हैं --- तनपरस्ती के इस दौर में मोहब्बत नापैद हो गई, ख़ुलूस का पता नहीं।

उठ गई यूँ वफ़ा ज़माने से।
कभी गोया किसी में थी ही नहीं।

जानवरों का भी समाज है, इन्सानों का भी समाज है, वहाँ किसी दस्तूरे हयात की ज़रूरत नहीं --- यहाँ दस्तूरे हयात के बिग़ैर चारा नहीं --- वहाँ क़दरें नहीं, यहाँ क़दरों के बिना गुज़ारा नहीं --- यही वह फ़र्क़ है जो दोनों समाजों को अलग-अलग कर देता है। अल्लाह की मख़लूक़ (प्राणी) बहुत हैं लेकिन प्राणियों का सरताज इन्सान है। हम क़ुर्आन से जी चुराते हैं कि वह मुसलमानों की किताब है --- नहीं-नहीं वह तो सब की किताब है।

क़ुर्आन की सच्चाई को और बड़ाई को बहुत से ग़ैर-मुस्लिमों ने माना है जिसकी कुछ तफ़सील आगे आएगी। सरे दस्त कुछ हवाले पेश करता हूँ :

1. Palmer : The Quran - an English Translation, Introduction, p Lix
2. Wherry : Commentry on the Kuran, vol 1, p 349
3. Snock Horgrangi : Muhammadenism, p 18
4. Millian Mur : Life of Muhammad, Introduction, p xxiii
5. Philip K. Hitti : History of Arabs, p 123
6. Torrey : Jewish Foundation of Islam, p 2

7. Bosworth Smith : Muhammad & Muhammadanism, p - 22 (Ref : Minaret, Karachi, Oct 1998, p 17)

अगर हम क़ुर्आन खोल कर देखें तो उसमें इन्सानी अ़ज़मत की बहारें नज़र आती हैं। इसी क़ुर्आन में यह फ़रमाया :

तर्जमा : "बेशक हमने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।" (सूरा वत्तीन, आयत 4)

सबसे अच्छा बनाया और सारी दुनिया को इसका आधीन किया। दिल खोल दिए, दिमाग़ रौशन कर दिए। वह इन्सान जो पत्थरों, पेड़, पौधों और सूरज, चाँद, सितारों के सामने झुकता था उसको उसकी बड़ाई से आगाह किया और एलान कर दिया।

तर्जमा : "और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद मुसख़्ख़र (वश में) कर दिए।" (सूरा इब्राहीम, आयत 33)

तर्जमा : "और तुम्हारे लिए रात और दिन मुसख़्ख़र किए।" (सूरा इब्राहीम, आयत 33)

तर्जमा : "क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है।" (सूरा हज, आयत 65)

तर्जमा : "और तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आसमान में हैं और जो कुछ ज़मीन में है अपने हुक्म से।" (सूरा जाशिया, आयत 13)

इन्सान पर अल्लाह का ख़ास करम है, ज़मीन पैरों तले है, पानी भी पैरों तले है और ऊपर से भी बरस रहा है, जड़ी बूटियाँ भी पैरों में लोट रही हैं, हर बूटी हज़ार मर्ज़ों का इलाज और हज़ार मरीज़ों का इलाज है। हम भूल जाते हैं, नेअ़मतों को नहीं देखते, इधर-उधर देखते हैं, सबकी नेअ़मतें देखते हैं मगर अपनी नेअ़मतें नहीं देखते, हमारे अन्दर नेअ़मतें, बाहर नेअ़मतें, आगे नेअ़मतें, पीछे नेअ़मतें, दाएं नेअ़मतें, बाएं नेअ़मतें, ऊपर नेअ़मतें, नीचे नेअ़मतें, नेअ़मतें ही नेअ़मतें हैं फिर भी हमें नज़र नहीं आतीं, हवस और हसद ने हमारी बीनाई छीन ली। काश हम देखते, काश हम अपने मन में इसको पा लेते।

अपने मन में डूब कर पा जा सुराग़े ज़िन्दगी।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन।

हर इन्सान अल्लाह का बन्दा है, हर इन्सान आदम की औलाद है, हर इन्सान हज़रत मुहम्मतद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की उम्मत है --- गोया हर इन्सान के इन्सान से तीन रिश्ते तो हैं यह बड़े दायरे हैं फिर मुल्क-ओ-वतन, रंग-ओ-नस्ल, क़बीलों, बिरादरियों और ख़ानदानों के छोटे-छोटे दायरे हैं। हज़रत मुहम्मतद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने बड़े दायरों का ख़्याल रखा और जंग की हालत में अपने दुश्मनों के लिए दुआ फ़रमाई :

तर्जमा : "ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत दे, वह मुझे नहीं जानती।"

(1. इत्तिहाफ़ सादतुलमुत्तक़ीन शरहे अहयाउल उलूमुद्दीन; किताब का नाम; बैहक़ी दलाइलुल नबूवा; किताब; से' नक़्ल, बैरूत में छपी, जिल्द 8, पेज 258

2. मुल्ला मुईन वाइज़ काशफ़ी मआ़रिजुन नबूवा, पेज 254)

आपने दुश्मनों के लिए इसीलिए दुआ की कि वह अल्लाह के बन्दे थे, आदम की औलाद थे, आपकी उम्मत थे इसी लिए वह एक तरह से रहम-ओ-करम के हक़दार थे।

अनगिनत लोग मज़हब की बात करते हैं। मज़हब क्या है? एक रास्ता, एक तरीक़ा और एक मन्ज़िल है --- रास्ते के बिना चल नहीं सकते, ठोकरें खा-खा कर गिरते हैं, जब रास्ता मिल जाता है, चलते चले जाते हैं, मन्ज़िल तक पहुँच जाते हैं। अ़क़्ल वालों ने मज़हब की तारीफ़ की है मगर ना-तमाम और नाक़िस (दोषपूर्ण)।

(नीचे लिखे हवाले देखें :

1- E.S. Brightman : A Philosophy of Religion, p 18
2- J. Huxley : Religion without Revelation, p 40
3- A.C. Compbpell : On selfhood and Godhood, p 248
(Ref S. Anwar Ali : Religion the science of life p 150-151)

सीधी-सीधी बात यह है ऐसा रास्ता जो मन्ज़िल तक पहुँचा दे। अब देखना यह है कि मज़हब को हमारी ज़रूरत है या हमको मज़हब की ज़रूरत है। जिस तरह अच्छी हुकूमत वह है जिसको इन्सानों की ज़रूरत हो उसी तरह अच्छा मज़हब वह है जिसकी इन्सानों को ज़रूरत हो। वह अच्छा कैसे हो सकता है जिसको इन्सानों की ज़रूरत हो? जिस मज़हब को हमारी ज़रूरत है वह हमारी रहनुमाई नहीं कर सकता क्योंकि वह ख़ुद मुहताज है, मुहताज क्या किसी की मदद कर सकता है? जब हम दीने फ़ितरत की बात करते हैं तो इन्सान के आ़लमी मज़हब (Universal Religion) की बात करते हैं जो बिना लालच के ख़ुद-ब-ख़ुद फैलता चला जाता है। गौतम बुद्ध ने जब एक हज़ार साल पहले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बात की थी तो इसी दीने फ़ितरत की बात की थी और कैसी दिल लगती बात कही थी :

"उसका मज़हब इस तरह फैलेगा जैसे ओले में आग फैलती है।" (Abdul Haque : Muhammad in World Scriptures, vol iii, London, 1975)

यानी जिस तरह ईंटों के भट्टे में अन्दर ही अन्दर आग सुलगती है और उसकी गर्मी से ईंटें पकती चली जाती हैं और मकान और महल बनाती चली जाती हैं। जिस ख़ामोशी से भट्टे की आग ईंटों पर असर अन्दाज़ होती है उसी तरह ख़मोशी से दीने फ़ितरत इन्सानों पर असर अन्दाज़ होता है। यहाँ औरत, दौलत और ज़मीन की लालच की कोई गुंजाइश नहीं क्योंकि दीने फ़ितरत इन्सान का अपना दीन है और अपनी चीज़ किसी लालच के बिना अपना ली जाती है। दीने फ़ितरत सारे इन्सानों का दीन है, वह दीने फ़ितरत क़बूल करके किसी और के घर में नहीं जाते, अपने ही घर में आते हैं। हक़ीक़त यह है कि सच्चाई ख़ुद-ब-ख़ुद फैलती है और सच्चे दीन की निशानी यही है कि वह ख़ुद-ब-ख़ुद फैले। झूटी चीज़ों को पब्लिसिटी की भी

ज़रूरत होती है लेकिन सच्चाई रोके नहीं रुकती, दिलों में घर करती और उतरती चली जाती है। हम देखते हैं कि इन्टर नेशनल लेबल पर पढ़े लिखे लोग दीने फ़ितरत में दाख़िल हो रहे हैं गोया अपने घर वापस आ रहे हैं --- यह किसी की जीत नहीं यह हक़ की जीत है, यह सच्चाई की जीत है। रब एक है, दीन एक है, दीने फ़ितरत इन्सानों का अपना दीन है।

दीने फ़ितरत सबका दीन है, इस पर किसी की इजारेदारी नहीं --- अल्लाह के बन्दे अल्लाह के दीन को क़बूल कर लें तो दुनिया का सारा फ़साद एक पल में ख़त्म हो सकता है। ट्रेजिडी यह है कि हम अपने घर को छोड़ कर इसको ग़ैरों का घर समझने लगे। जब अपने घर में आएंगे गली कूचे आबाद होंगे, शहर आबाद होंगे, मुल्क आबाद होंगे, दुनिया आबाद होगी और फिर बरसों के बिछड़े हुए गले मिलके दरिन्दों और जानवरों की सी ज़िन्दगी से छुटकारा हासिल करके इन्सानों की तरह रहने लगेंगे, एक दूसरे से मोहब्बत करने लगेंगे, एक दूसरे के दुख दर्द में शरीक होने लगेंगे, तंग नज़र रहनुमाओं की तंगनज़री से छुटकारा पाकर खुली फ़ज़ा (वातावरण) में साँस लेने लगेंगे, रंग-ओ-नसब और भाषा वग़ैरा के सारे भेदभाव मिटा कर इन्सानी एकता में गुम हो जाएंगे। हमारा तरीक़ा यह है कि हम हर काम में अपना फ़ायदा देखते हैं। खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, लिखने-पढ़ने, कामकाज करने, मतलब यह कि हर काम में अपने फ़ायदे पर नज़र रखते हैं तो फिर मज़हब को चुनने में हमारा व्यवहार अलग क्यों हो जाता है, हम अपने फ़ायदे पर क्यों नज़र नहीं रखते? हमें मज़हब के मामले में भी वही आचरण अपनाना चाहिए जो दुनिया के हर मामले में हम अपनाते हैं।

हमारा जिस्म भी है और जिस्म के अन्दर एक रूह भी है --- जिस्म नश्वर है, हम अपनी आँखों से इसे मिटते हुए देखते हैं, रूह फ़ना (नष्ट) नहीं होती, वह हमारी यादों में भी

ज़िन्दा रहती है मगर हमें हर दम जिस्म की फ़िक्र रहती है, रूह से बेख़बर हैं, हमें रूह की ख़बर लेनी चाहिए और वह दीने फ़ितरत है जो हमारे जिस्म के साथ-साथ हमारी रूह को भी चमकाता है, हमें यहाँ भी कामयाब करता है और वहाँ भी --- आँख बन्द होकर एक नए जहाँ में खुलेगी वहाँ का भी तो साज़ो सामान होना चाहिए, हमें अ़क़्ल और समझदारी से काम लेना चाहिए और दोनों जहान में कामयाबी के लिए क़दम आगे बढ़ाना चाहिए, हमको बंजारेपन की ज़िन्दगी छोड़ कर अपने देश में अपने घर में आना चाहिए और दीने फ़ितरत को गले लगाना चाहिए।

पहला बाब

दीने फ़ितरत :
इन्सान की पैदाइश से पहले

इस कायनात में इन्सान से पहले क्या था? इन्सान कब वजूद में आया? --- पहले अनवार (प्रकाश) थे, रूहें थी, फिर इन्सान वजूद में आया। इससे पहले कि हम दीने फ़ितरत की बात करें, हम कुछ रूहों की बात करते हैं, कुछ आदम की बात करते हैं, कुछ कायनात की बात करते हैं, फिर कुछ अनवार की बातें करेंगे, फिर पहले इन्सान और पहले नबी के नूर की बातें करेंगे --- फिर दीने फ़ितरत की बातें करेंगे।

जिस्मों के पैदा करने से पहले रूहें वजूद में आईं और उन रूहों से अल्लाह तआ़ला ने - "अपनी रुबूबियत (मैं रब हूँ) का इक़रार लिया।" (सूरा आराफ़, आयत 182)

फिर ख़ास रूहों से एक और अहद-ओ-पैमान (वादा - Covenant) लिया। (सूरा आले इमरान, आयत 181)

रूहों का वजूद इस एक मिसाल से समझ में आ सकता है। जब हम कुछ ईजाद करना चाहते हैं तो हमारे दिमाग़ में चीज़ों की तस्वीरें आती हैं जो हम बनाना चाहते हैं। चीज़ों के वजूद से पहले उनकी सूरतें हमारे दिमाग़ में होती हैं हम उनका इन्कार नहीं कर सकते, अगर इन्कार करें तो न कुछ ईजाद कर सकते हैं न कुछ बना सकते हैं। हमारा दिमाग़ आलमे बर्ज़ख़ (Purgatory - एक दूसरे की बीच की जगह) होती है। इसी तरह बिना किसी मिसाल वग़ैरह के --- अम्रे हक़ (अल्लाह तआ़ला का हुक्म या इरादा) रूह की शक्ल इख़्तियार करता है फिर जिसको चाहता है वह वजूद में लाता है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों में सबसे पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा

किया। (सूरा हिज्र, आयत 29)। आपकी पैदाइश का ज़िक्र अक्सर इल्हामी किताबों (Revealed Books) में है, क़ुर्आन और हदीस में भी है।

हिन्दोस्तान के एक मशहूर सूफ़ी और वलीए कामिल शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमत उल्लाह अ़लैह को उनके मुख़लिस ख़्वाजा मुहम्मद तक़ी ने लिखा :

शैख़ मोहिउद्दीन इब्ने अरबी ने फ़ुतूहाते मक्किया में एक हदीस (Tradition of the prophet) नक़्ल की है कि आँ सरवर अ़लैहि व अ़ला आलिहिस्सलात वस्सलाम ने फ़रमाया :

तर्जमा : "अल्लाह तआ़ला ने एक लाख आदम पैदा किए।" (अहमद सरहिन्दी, शैख़ मकतूबात, जिल्द 2, उर्दू अनुवाद, कराची में छपी)

और एक हिकायत (सच्ची कहानी) नक़्ल की है जो आलमे मिसाल के कुछ मुकाश्फ़ात (Manifestation) से है। इब्नुल अ़रबी फ़रमाते हैं :

"जब कि मैं काबा मुअ़ज़्ज़मा (Holy Kabah) का तवाफ़ (चारों तरफ़ घूमना) कर रहा था ऐसा ज़ाहिर हुआ कि मेरे साथ ज़रूरत से ज़्यादा एक जमाअ़त तवाफ़ कर रही है और तवाफ़ के दौरान अरबी के दो शेर पढ़े। उन दो शेरों में से एक शेर यह है -

तर्जमा : "जिस तरह बरसों तुमने अल्लाह के घर का तवाफ़ किया है हमने भी किया है।"

जब मैंने यह शेर सुना तो मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि सब आलमे मिसाल के अ़ब्दाल (saints) हैं। इस ख़्याल के आते ही उनमें से एक ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया :

"मैं तुम्हारे अजदाद (forefathers) में से हूँ।"

मैंने पूछा आपको गुज़रे हुए कितना अर्सा (period) हुआ। उन्होने फ़रमाया : "मुझे गुज़रे हुए चालीस हज़ार साल से ज़्यादा हो गए हैं।" (रोमर ए. एस. ने कहा है :

A type of man definitely assignable to our own species Homo Spiens appeared in Europe well toward the end of

the last glaciation not more than 50,000 years of 50 ago, where and how did the modern type originate? The answers are still none to clear. (Romer A.S. veteberate Paleontology, The university of Chicago press Chicago, 3rd Ed. 1966 p 277)

मैंने ताज्जुब से कहा : "अबुल्बशर (Father of Humanity - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) की पैदाइश को अभी सात हज़ार साल से ज़्यादा नहीं हुए।" उन्होंने कहा कि "तुम कौन से आदम की बात करते हो, वह आदम जिसका तुम ज़िक्र करते हो वह तो इस सात हज़ार साल के पहले युग में पैदा किए हुए हैं।" --- शैख़े अकबर ने फ़रमाया कि इस वक़्त वह हदीसे नबवी जो ऊपर आ चुकी है मेरे दिल में गुज़री जिससे क़ौल (कथन) की ताईद होती है ---

हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी ने इब्ने अरबी के इस मुशाहिदे (निरीक्षण) पर यह तबसरा (Review) फ़रमाया :

"यह सब आदम अलैहिस्सलाम के वजूद से पहले गुज़र चुके है। उनका वजूद आलमे मिसाल में हुआ न कि आलमे शहादत (प्रत्यक्ष संसार) में। वह तो वही हज़रत आदम हैं जो आलमे शहादत में मौजूद हुए हैं और ज़मीन में ख़िलाफ़त पाकर 'मसजूदे मलाइक' (फ़रिश्तों के सज्दा किए हुए) हैं। अगर एक लाख आदम भी हों तो वह सब उसी आदम के अजज़ा (parts) हैं और उसी के दस्तो बाज़ू हैं और उसी वजूद के मुबादी व मुक़द्दमात (Fundamentals & Introductions) हैं। इस फ़क़ीर ने इस बारे में दूर-दूर तक नज़र दौड़ाई और बहुत ग़ौर किया लेकिन आलमे शहादत में कोई दूसरा आदम नज़र नहीं आता।

इस सारी बहस का सार यह है कि आदम एक ही हैं, सारे इन्सान उन्हीं की औलाद हैं लेकिन अल्लाह तआला ने आदम से बहुत पहले अपने नूर से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नूर को पैदा किया इसलिए उनका ज़िक्र

अज़कार (वर्णन) हर इल्हामी किताब की शोभा बने हुए हैं। यहूद-ओ-नसारा और हिन्दुओं की मज़हबी किताबों में आपके ज़िक्र अज़कार हैं। अगर अल्लाह तआ़ला आपके नूर को सबसे पहले पैदा न फ़रमाता तो आपका ज़िक्र इस कसरत से क्यों होता?

दीने फ़ितरत के बारे में हमें सही इत्तलाआत (सूचनाएं) क़ुर्आन शरीफ़ और हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बातों से मिलती हैं। तारीख़ी नुक़्तए नज़र (ऐतिहासिक दृष्टिकोण) से ऐसी सच्ची बातें किसी और किताब में नहीं मिलतीं इसलिए जब हम क़ुर्आन की बात करेंगे तो अज़ीम हिस्टारिकल सोर्स की बात करेंगे।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाया :

तर्जमा : "तो अपना मुँह सीधा करो अल्लाह की इताअ़त (आज्ञा पालन) के लिए एक अकेले उसी के होकर अल्लाह की डाली हुई बिना (बुनियाद) जिस पर लोगों को पैदा किया।" (क़ुर्आन : सूरा रूम, आयत न. 30)

यानी इस्लाम वह दीने फ़ितरत है जिस पर इन्सान की फ़ितरत (स्वभाव) की बुनियाद रखी गई है। यह आलमगीर (Universal) है, हमागीर (All embracing) है। तफ़्सीर इब्ने कसीर में इसकी तफ़्सीर-ओ-तशरीह (Commentary) करते हुए लिखा है :

तर्जमा : "मैंने अपने बन्दों को सीधे रास्ते पर पैदा किया फिर उन्हें शैतान ने बहका दिया।" (इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 476)

इस हक़ीक़त को क़ुर्आन में यूँ फ़रमाया :

तर्जमा : "अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना है, यही सीधा दीन है मगर बहुत लोग नहीं जानते।" (क़ुर्आन : सूरा रूम, आयत 36; तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 432)

और इस सच्चाई को हदीस शरीफ़ में यूँ बयान किया गया :

तर्जमा : "बच्चा अपनी फ़ितरत पर पैदा होता है फिर जब वह बोलने लगता है। तो उसके माँ-बाप उसको यहूदी बना लेते हैं,

ईसाई बना लेते है, मजूसी बना लेते हैं।"

(अलजामेउल सग़ीर : सुयूती, जिल्द 2, पेज 93)

इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एलान फ़रमाया :

तर्जमा : "ऐ अल्लाह के नबियो! हमारा दीन एक है।"

(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 3, पेज 476)

अब हम कुछ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बात करते हैं क्योंकि आप ही आख़िरी नबी हैं। हमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बातों से मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले अपने नूर से अप के नूर को पैदा किया। उस वक़्त न कायनात (दुनिया) थी और न इन्सान, चुनांचे आपके एक सहाबी (Companion) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रिवायत (Narration) मिलती है।

(अब्दुल रज़्ज़ाक़ --- अलमुसन्नफ़

इसी किताब से बहुत से मुहद्दिसीन (Narrators of the Hadith of the Prophet) और उलमा ने इस हदीस को नक़ल किया है जैसे –

1. शैख़ इस्माईल बिन मुहम्मद अल अमलूनी (D1162A.H.) कश्फ़ुल ख़फ़ा मुज़य्यलुल अल्बास अम्मा अशतहिर मिनल अहादीस अलस्सुन्नतुन्नास, जिल्द 1, पेज – 1311–1312, हदीस न. 827, मकतबा तरासुल इस्लामी, हलब
2. निज़ामुद्दीन नीशापुरी, तफ़्सीर नीशापुरी, जिल्द 1 पेज 55+ जिल्द 8 पेज 66
3. तफ़्सीर अराइसुल बयान, जिल्द 1, पेज 238
4. तफ़्सीर रूहुल बयान, जिल्द 1, पेज 548
5. अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी शैख़, मदारिजुन्नबुआ, जिल्द 2, पेज 2, सक्खर में प्रकाशित
6. अल्लामा फ़ासी, मतालेउलमसर्रात पेज 27

7. अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग, अब्रीज़, पेज 226
8. अहमद क़ुस्तलानी, अलमुवाहिबुललदुनिया, जिल्द 1 पेज 9
9. ज़रकानी शरहुल मुवाहिबुललदुनिय, जिल्द 1, पेज 56, आगरा से प्रकाशित
10. अशरफ़ अली थानवी – नशरुत तय्यब)

अरबी से उर्दू में तर्जमा (अनुवाद) :–

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है, आपने फ़रमाया :

"मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मेरे माँ–बाप आप पर क़ुर्बान हों यह तो बताएं कि अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले क्या चीज़ पैदा की? आपने फ़रयमा ऐ जाबिर! बेशक अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों से पहले अपने नूर से तरे नबी के नूर को पैदा किया फिर वह नूर अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से चक्कर लगाता रहा। उस वक़्त न लौह (Tablet) थी न क़लम (Pen), न जन्नत थी, न दोज़ख़, न फ़रिश्ते थे न आसमान व ज़मीन और न चाँद और सूरज, जिन्न–ओ–बशर (जिन्न–ओ–इन्सान) --- जब अल्लाह तआ़ला ने मख़लूक़ (Creatures) पैदा करनी चाही तो उस नूर के चार हिस्से किए --- पहले हिस्से से क़लम, दूसरे हिस्से से लौह, तीसरे हिस्से से अ़र्श (Empyrean throne of Allah) --- फिर चौथे हिस्से के चार हिस्से किए तो पहले हिस्से से अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते पैदा किए, दूसरे हिस्से से कुर्सी और तीसरे हिस्से से बाक़ी फ़रिश्ते --- फिर चौथे हिस्से के चार हिस्से किए तो पहले हिस्से से आसमान पैदा किया, दूसरे हिस्से से ज़मीन और तीसरे हिस्से से जन्नत और दोज़ख़।

(अस्सीरतुल हलबिया, जिल्द 1, पेज 30)

हज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तसदीक़ आपकी नीचे लिखी हुई बातों से होती है :

अरबी से उर्दू में अनुवाद : (1) "मैं आदम के पैदा होने से चौदह हज़ार साल पहले अपने रब के हुज़ूर नूर था। अल्लाह

ने सब से पहले मेरे नूर को पैदा किया।" (अह़मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी, मौलाना सलातुस्सफ़ा फ़ी अनवारुल मुस्तफ़ा, लाहौर से प्रकाशित, पेज 21)

(2) जब आदम (Adam) जन्नत में थे मैं उनकी पुश्त (पीठ) में था। (ए. के. पाटोली, आदम से पहले आदम के बाद, हैदराबाद, सिंध, पेज 31)

(3) जब नूह कश्ती में सवार थे मैं उनकी पुश्त में था। (ए. के. पाटोली, अस्सीरतुलहलबिया, जिल्द 1)

(4) जब इब्राहीम आग में डाले गए मैं उनकी पुश्त में था। (ए. के. पाटोली, आदम से पहले आदम के बाद, हैदराबाद, सिंध, पेज 35)

एक हदीस में यूँ भी आया है :

अरबी से अनुवाद : "हक़ीक़त यह है अल्लाह तआ़ला के तमाम नबियों और रसूलों ने आपके वजूद से नूर हासिल किया।" क़ुर्आन के मुताबिक़ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के सामने जब फ़रिश्तों ने सज्दा किया। (क़ुर्आन : सूरा आराफ़, आयत 11; बक़रा, आयत 34; कहफ़, आयत 5; ताहा, आयत 116; असरा, आयत 61) तो उन्होंने इसी नूर को सज्दा किया जो उनकी पुश्त में जलवागर था। चूँकि हज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का नूर सबसे पहले पेश किया गया इसलिए आप तमाम नबियों और रसूलों से पहले पैदा हुए। (सीरते हलबिया, जिल्द 1)

आप ख़ुद फ़रमाते हैं :

उर्दू अनुवाद : मैं तख़लीक़ (Creation) में नबियों से पहले हूँ और आने में सब से आख़िर हूँ। (इमाम इब्ने जौज़ी, किताबुल वफ़ा, पेज 406)

इसमें शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला माबूदियत (पूजा योग्य) में अव्वल-ओ-आख़िर और हज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अबदियत (बन्दा होने में) अव्वल-ओ-आख़िर हैं। एक बार अल्लाह तआ़ला के ख़ास

फ़रिश्ते आपके दरबार में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया :

"अस्सलामो अलैका या अव्वलु"

"अस्सलामो अलैका या आख़िरु"

"अस्स्सलामो अलैका या ज़ाहिरु"

"अस्सलाम्गो अलैका या बातिनु"

इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सिफ़ात (विशेषताएं) तो मेरे रब की हैं --- अर्ज़ की यक़ीनन यह सिफ़ात अल्लाह तआला की हैं लेकिन उसने हुज़ूर को एजाज़ (Honour) बख़्शा है। मुसलमानों के मशहूर मुहद्दिस शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी ने क़ुर्आन करीम की इस आयत :

तर्जमा : "वही अव्वल, वही आख़िर, वही ज़ाहिर, वही बातिन और वही सब कुछ जानता है।" (सूरा हदीद, आयत न. 3) को हम्द (अल्लाह की तारीफ़) भी फ़रमाया है और नात (हुज़ूर की तारीफ़) भी।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अव्वल भी हैं कि पहले आपका नूर पैदा किया गया, आख़िर भी हैं कि सब नबियों से आपकी इताअत (आज्ञा पालन) ओ नुसरत (मदद) का अहद लिया गया। (क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत 81) --- बातिन भी हैं कि तख़लीक़ के बाद करोड़ों साल आपका नूर नज़रों से ओझल चक्कर लगाता रहा --- ज़ाहिर भी है कि एक मुद्दत के बाद दुनिया में तशरीफ़ लाएं और सब ने अपनी आँखों से देखा। (मुहम्मद रियाज़ुल रहीम, अग्नि का राज़, कराची 1998 ई.)

हज़रत रज़ा बरेलवी ने इस हक़ीक़त को यूँ बयान फ़रमाया :

नमाज़े अक़्सा में था यही सिर्र,
अयां हो मानिए अव्वल-ओ-आख़िर।
कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर,
जो सल्तनत आगे कर गए थे।

हिन्दुओं की मज़हबी किताबों में एक लफ़्ज़ 'अग्नि' आया है चुनान्चे आर्यसमाजी और सनातन धर्मी स्कालर्स इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं इसका मतलब सबसे अव्वल और सबसे आगे यानी जिसके आगे कोई न हो। यह इशारा भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ है।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से उनकी उम्र के बारे में पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया :

अनुवाद अरबी से :-

"चौथे पर्दे में एक सितारा सत्तर हज़ार साल के बाद ज़ाहिर होता था, मैंने उसको बहत्तर हज़ार बार देखा है।" हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"मुझे अपने रब के इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम! वह सितारा मैं ही हूँ।" (जवाहरुल बिहार, जिल्द 2, पेज 408, रूहुलबयान जिल्द 2 पेज 618, सीरते हलाबिया, जिल्द 1, पेज 34)

जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पहली मख़लूक़ (प्राणी) हैं तो अल्लाह के पहले मानने वाले भी आप ही हैं चुनांचे क़ुर्आन में इरशाद है :

तर्जमा : "और मुझे हुक्म है कि मैं सबसे पहले गर्दन रखूँ।"

(क़ुर्आन : सूरा जुमर, आयत 12)

और दूसरी जगह फ़रमाया :

तर्जमा : "उसका कोई साझी नहीं मुझे इसी का हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ।"

(क़ुर्आन : सूरा अनआम, आयत न. 14)

इसी तरह सूरा आराफ़ में "अव्वलुल मोमिनीन" (सबसे पहले मोमिन यानी Believer) भी आया है --- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की अव्वलियत इस ऐतबार से है कि अल्लाह की मख़लूक़ में अव्वल हैं तो ज़रूर मुसलमानों में भी अव्वल हुए --- सूरा अनआम में एक जगह

यूँ भी इरशाद फ़रमाया :

तर्जमा : "मुझे हुक्म हुआ है मैं गर्दन रखने वालों में सबसे पहला बनूँ और हरगिज़ शिर्क (Idolatory) करने वालों में न हूँ।" (क़ुर्आन : सूरा अनआम, आयत 14)

इस्लाम के मानी हैं --- अल्लाह के हुक्म के आगे बे चूं व चरा सर झुका देना।

अल्लाह ख़ालिक़ियत (सबके पैदा करने) में अव्वल है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मख़लूक़ियत (सबसे पहले पैदा होने) में अव्वल हैं चुनान्चे (अतः) एक जगह आपने फ़रमाया :

तर्जमा : "मैं आदम की औलाद का सरदार हूँ दुनिया में भी और आख़िरत (Hereafter) में भी, मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं।" (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शेबा, जिल्द 11, पेज 411; आस्फ़हानी, दलाइलुल नबुवा, जिल्द 1, पेज 13, बैरूत; अलमुस्तदरिक, जिल्द 2, पेज 604; तिर्मिज़ी शरीफ़, बैरूत, हदीस न. 3148)

एक जगह आपने फ़रमाया :

तर्जमा : "अल्लाह पर जो सबसे पहले ईमान लाया और उसके हुक्म की तामील की उनमें सबसे पहला मोमिन हूँ।" (शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी, मदारिजुन्नबुआ, जिल्द 1, लाहौर)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपसे सवाल किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप को नबूवत कब अता फ़रमाई गई तो आपने फ़रमाया : "उस वक़्त जब आदम रूह और जिस्म के बीच थे। (तिर्मिज़ी शरीफ़, बैरूत, जिल्द 6, पेज 584; कंज़ुलउम्माल जिल्द 10, पेज 1409; अलमुस्तदरिक इमाम हाकिम, जिल्द 2, पेज 609; मुस्तदरिक इमाम मुहम्मद, जिल्द 4, पेज 66)

नबूवत ओ-रिसालत (नबी और रसूल होने में) अव्वल-ओ-आख़िर होना शायद कुछ लोगों के समझ में न आए

उनके लिए एक मिसाल दे रहा हूँ जिन्होंने देखा है वह ज़रूर समझ लेंगे।

यूनिवर्सिटियों में कान्वोकेशन होते हैं। जब चांसलर, वाइस चांसलर और प्रोफ़ेसर्स व स्टूडेन्ट्स जुलूस के रूप में कान्वोकेशन हाल की तरफ़ चलते हैं तो सबसे पीछे चांसलर होता है फिर वाइस चांसलर फिर प्रोफ़ेसर्स फिर स्टूडेन्ट्स --- इसी क्रम से यह जुलूस हाल में दाख़िल होता है फिर बारी-बारी सब बैठते चले जाते हैं और आख़िर में बीच वाली और सबसे अव्वल कुर्सी पर चांसलर बैठता है जो सबसे पीछे था मजलिस सजने के बाद अब वह सबसे आगे होता है, बैठने के बाद उसको किसी और बैठने वाले का इन्तज़ार नहीं करना पड़ता। चांसलर अव्वल भी होता है और आख़िर भी। इस तरह किसी मिसाल वग़ैरह के समझ लीजिए कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम रसूलों की लम्बी लाइन में अव्वल भी हैं और आख़िर भी। आपका अव्वल होना क़ुर्आन से भी साबित है और तारीख़ से भी साबित है। दीने फ़ितरत की शुरूआत आप की नूरी तख़लीक़ और तकमील (पूरा होना) आपकी बशरी तख़लीक़ (Human Creation) से हुई। आप अव्वल भी हैं और आख़िर भी।

निगाहे इश्क़-ओ-मस्ती में वही अव्वल वही आख़िर।
वही क़ुरआं, वही फ़ुरक़ा, वही यासीं, वही त़ाहा।

PROPHECIES IN HINDU SCRIPTURES

Likewise in Hindu scriptures too there are a good many prophecies about the Holy Prophet Muhammad. A few of these are in the Puranas. The one in the Bhavishya Purana is the clearest of all. The fifth word from left to right is the name of our Holy Prophet. It gives even the name of the country of the Prophet "Marusthalnivasinan denizen of the desert (Arabia)". For this reason the Arya Samaj has tried to cast doubt on the authenticity of this Purana. Their argument is that it contains a reference to the Prophet. According to Sanatanist Pandits and the vast bulk of Hindus, nevertheless, it is considered very authentic. The prophecy runs as follows.

Original Sanskrit Text

एतस्मिन्नन्तिरं म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः ।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः ॥ ५ ॥
नृपश्चैव महादेवं मरुस्थलनिवासिनम् ।
गङ्गाजलैश्च संस्नाप्य पञ्चगव्यसमन्वितैः ।
चंदनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम् ॥ ६ ॥
भोजराज उवाच—नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थलनिवासिने ।
त्रिपुरासुरनाशाय बहुमायाप्रवर्तिने ॥ ७ ॥
म्लेच्छैर्गम्याय शुद्धाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।
त्वं मां हि किंकरं विद्धि शरणार्थमुपागतम् ॥ ८ ॥

Below we give the English translation of the prophetic words:–

"A malechha (belonging to a foreign country and speaking foreign language) spiritual teacher will appear with his companions. His name will be Mohammad. Raja (Bhoj) after giving this Maha Dev Arab (of angelic disposition) a bath in the 'Panchgavya'

भविष्य पुरान में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम

दूसरा बाब (Chapter 2)

दीने फ़ितरत इन्सानी तख़लीक़ के बाद

क़ुर्आन के मुताबिक़ इन्सान तो अल्लाह के सामने सर झुकाए हुए है लेकिन आसमान-ओ-ज़मीन में जो कुछ भी है उसका सर भी अल्लाह के सामने झुका हुआ है चुनांचे क़ुर्आन में इरशाद होता है :

तर्जमा : "तो क्या अल्लाह के दीन के इलावा कोई दीन चाहते हैं और उसी के सामने गर्दन रक्खे हुए है जो कोई आसमान और ज़मीन में है, ख़ुशी और मजबूरी से और उसी की तरफ़ फिरेंगे।"

(क़ुर्आन : सूरा : आले इमरान, आयत न. 83)

क़ुर्आन के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों से अपनी रबूबियत का इक़रार लिया चुनांचे इरशाद होता है :

तर्जमा : "और ऐ महबूब! याद करो जब तुम्हारे रब ने आदम की औलाद की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया --- क्या मैं तुम्हारा रब नहीं --- सब बोले क्यों नहीं? हम गवाह हुए कि कहें क़ियामत के दिन कहो कि हमे इसकी ख़बर नहीं थी।"

(क़ुर्आन : सूरा आराफ़, आयत न. 172)

दीने फ़ितरत की बुनियाद तौहीद (Monotheism) पर है यानी अल्लाह की यकताई पर --- हिन्दुओं की मज़हबी किताब वेदों के शुरू के ज़माने में आज से लगभग छः सात हज़ार साल पहले आर्य क़ौम ख़ालिस तौहीद पर क़ायम थी और एक ख़ुदा की इबादत करती थी। ज़ाहिर है यह किसी न किसी रसूल की तालीम पर अमल करती होगी --- अरब सय्याह (Traveller) अबू रेहान अलबैरूनी अपने देखे हुए हालात बयान करते हुए

लिखता है :

"ख़ुदा के मुतअल्लिक़ हिन्दुओं का यह अक़ीदा है कि वह एक है, हमेशा रहने वाला है, वह हमेशा से है, हमेशा रहेगा। वह मुख़्तारे मुतलक़ (सारे अख़्तियार वाला - अकेला मालिक); क़ादिरे मुतलक़ (Omnipotent), हकीमे मुतलक़ (कुल हिकमत वाला) जिन्दा है और ज़िन्दा करने वाला है, सब कुछ करने जानने वाला है ... वही बादशाहों का बादशाह है, कोई उसकी तरह नहीं, न ही वह किसी से मिलता जुलता है न कोई चीज़ उससे मिलती जुलती है।"

(अबू रेहान अलबैरूनी किताबुल हिन्द, जिल्द 1, पेज 14)

हिस्टोरियन ऐलफिन्स्टन अपनी हिस्ट्री में तौहीद के बारे में लिखता है :

"वेदों से बुतों का रिवाज, पूजा की चीज़ों के ज़ाहिरी निशान और अलामतें (प्रतिरूप) कायम करने का रुज्हान साबित नहीं होता।" (मुहम्मद रियाज़ुल रहीम, अग्नि का राज़, करांची 1998, पेज 12)

हिन्दू वेदों का 'ब्रह्मसूत्र' यानी कलिमए तौहीद भी मुलाहिज़ा करें :

"एक ही ख़ुदा है, दूसरा नहीं --- नहीं है, नहीं है, ज़रा सा भी नहीं।"

दीने फ़ितरत का भी कल्मा यही है

"ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीका लहू ---"

क़ुर्आन में जब दीने फ़ितरत की तरफ़ दारवत दी गई तो यूं फ़रमाया गया :

क़ुर्आन की आयत का तर्जमा : "तुम फ़रमाओ, ऐ किताबियो, ऐसे कल्मे की तरफ़ आओ जो हम में तुम में यकसां है यह कि इबादत न करें मगर ख़ुदा की और उसका साझी किसी को न करें।" (मुहम्मद रियाज़ुल रहीम, अग्नि का राज़, कराची 1998, पेज 12, 13)

क़ुर्आन की इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने हर इन्सान को दीने फ़ितरत की दावत दी और सब इन्सानों ने आलमे अरवाह (Spiritual World) में दीने फ़ितरत क़बूल किया इसीलिए फ़रमाया कि कहीं क़ियामत के दिन यह न कहना कि हमें ख़बर न थी। अब हर इन्सान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपने उस वादे पर क़ायम रहे जो उस वक़्त किया था जब होश ही होश था, भूलचूक का सवाल ही न था --- और ज़िन्दगी ज़िन्दगी थी।

इन्सान ज़मीन में अल्लाह का ख़लीफ़ा है इसलिए अल्लाह की हर चीज़ उसको मयस्सर आनी चाहिए, कोई इन्सान महरूम न रहना चाहिए --- अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से इन्साने कामिल को अपना ख़लीफ़ा बना कर ज़मीन-ओ-आसमान उसके आधीन किए और उसको एक दस्तूरे हयात (Code of life) दीने फ़ितरत दिया जिस को हम 'इस्लाम' के नाम से जानते पहचानते हैं जो एक तबक़े के लिए नहीं बल्कि सब इन्सानों के लिए है इसलिए क़ुर्आन में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

आयत का अनुवाद : "अल्लाह के यहाँ इस्लाम ही दीन है।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत 19)

दूसरी जगह फ़रमाया :

"अगर कोई इस्लाम के इलावा कोई दीन चाहेगा वह उससे हर्गिज़ क़बूल न किया जाएगा।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत 85)

अल्लाह के नज़दीक एक दीने फ़ितरत के इलावा किसी और दीन का वूजद ही नहीं। अगर इन्सान ने किसी ग़लतफ़हमी या बे-राहरवी की बिना पर और दीन बना लिए तो यह उनके दीन हैं, दीने फ़ितरत से इनका कोई ताल्लुक़ नहीं --- हक़ीक़त यह है कि इस्लाम ही दीने फ़ितरत है जो हर इन्सान का अपना दीन है। अब दुनिया आहिस्ता-आहिस्ता इसी दीन की तरफ़ आ रही है। इसी दीने फ़ितरत की तरफ़ इशारा करते हुए क़ुर्आन में

अल्लाह ने फ़रमाया :

तर्जमा : "तो अपना मुँह सीधा करो अल्लाह की इताअ़त के लिए, एक अकेले होकर उसी के लिए अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया, अल्लाह की बनाई हुई चीज़ न बदलना यही सीधा दीन है मगर बहुत लोग नहीं जानते।"

(क़ुर्आन : सूरा रूम, आयत न. 30)

अल्लाह ने दीने फ़ितरत की तबलीग़ (Preaching) ओ तालीम के लिए हर क़ौम में अपने रसूल भेजे जो इस्लामी रिवायत के मुताबिक़ कम-ओ-बेश एक लाख चौबीस हज़ार हुए --- क़ुर्आन शरीफ़ में इन आने वाले रसूलों का ज़िक्र मौजूद है!

क़ुर्आने करीम की नीचे लिखी आयतें मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

(1) **तर्जमा** : "और बेशक हर उम्मत में हमने एक रसूल भेजा कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो।"

(क़ुर्आन : सूरा अन्नहल, आयत न. 36)

(2) तर्जमा : "और जो कोई गिरोह था सबमें एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका।" (क़ुर्आन : सूरा फ़ातिर, आयत न. 24)

(3) तर्जमा : "और हर उम्मत में एक रसूल हुआ जब उनका रसूल उनके पास आता, उन पर इंसाफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता।" (क़ुर्आन : सूरा यूनुस, आयत न. 47)

अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से दीने फ़ितरत भी अता फ़रमाया और हमारा नाम भी मुसलमान रखा। चुनांचे क़ुर्आन में है :

तर्जमा : "तुम्हारे बाप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का दीन, अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रक्खा है। अगली किताबों में और इस क़ुर्आन में ताकि रसूल तुम्हारा निगहबान और गवाह हो और तुम लोगों पर गवाही दो।" (क़ुर्आन : सूरा हज, आयत न. 78)

दीने फ़ितरत तमाम इन्सानों का दीन है। वह फ़िरक़ों, गिरोहों और जमाअ़तों का दीन नहीं है, चुनांचे क़ुर्आने करीम में

इरशाद होता है :

"और लोग एक ही उम्मत थे फिर मुख़्तलिफ़ (Different) हुए।"

(क़ुर्आन : सूरा यूनुस, आयत न. 19)

दूसरी जगह फ़रमाया :

तर्जमा : "लोग एक दीन पर थे।"

(क़ुर्आन : सूरा बक़रा, आयत न. 213)

तीसरी जगह फ़रमाया :

तर्जमा : "और बेशक यह तुम्हारा दीन एक ही है।"

(क़ुर्आन : सूरा मोमिनून, आयत न. 52)

अल्लाह तआ़ला ने सारे इन्सानों के लिए एक दीन क़ायम फ़रमाया और एक ही मर्कज़ (Centre) भी बनाया जिसकी तरफ़ झुकने वाले झुकते रहें -- चुनांचे क़ुर्आन में इरशाद फ़रमाया : तर्जमा : "बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत के लिए मुक़र्रर हुआ है वह है जो मक्के में है, बरकत वाला और सारे जहां का रहनुमा, उसमें खुली निशानियाँ हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो उसमें आए अमान में हो।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत न. 96, 97)

क़ुर्आने करीम दीने फ़ितरत के तसलसुल (जारी रहने) का क़ायल है। इब्तिदा (प्रारंभ) से लेकर इन्तिहा (अन्त) तक यही दीने फ़ितरत है जो इन्सानों के सामने पेश किया गया, इसके तसलसुल में दूसरे धर्मों ने रुकावट डाली लेकिन चूंकि इसका वजूद फ़ितरत (Nature) का तकाज़ा था इसलिए यह इस तरह फलता और फूलता रहा जिस तरह पेड़ की जड़ें ज़मीन में फैलती हैं और इसके फल-फूल पतझड़ को बहार बनाते रहते हैं।

बाज़ मज़हबी रहनुमाओं ने दीने फ़ितरत की तसलसुल की बातें अपनी-अपनी किताबों से निकाल कर छुपा लीं लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़ाहिर कर दिया और वह मज़हबी रहनुमा हैरान रह गए। क़ुर्आन में इन तारीख़ी सच्चाइयों का इस तरह ज़िक्र मिलता है :

तर्जुमा : "बेशक जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बाद इसके कि लोगों के लिए हम उसे किताब में ज़ाहिर फ़रमा चुके, उन पर अल्लाह की लानत है और लानत करने वालों की लानत है।"

(क़ुर्आन : सूरा बक़रा, आयत न. 159)

दूसरी जगह इस तरह इरशाद फ़रमाया :

तर्जुमा : "और वह जो छुपाते हैं अल्लाह की उतारी किताब और उसके बदले ज़लील क़ीमत लेते हैं वह अपने पेट में आग ही भरते हैं।" (क़ुर्आन : सूरा बक़रा, आयत न. 174)

तीसरी जगह फ़रमाता है :

तर्जुमा : "अपने मुँह से कहते हैं जो उनके दिल में नहीं और अल्लाह को मालूम है जो छुपा रहे हैं।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत न. 167)

इन आयतों से आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि उस ज़माने में मज़हबी रहनुमाओं का क्या हाल था --- हमारे ज़माने में भी हर मज़हब के रहनुमा और ख़ुद मुसलमान रहनुमाओं की अकसरियत दुनिया की मोहब्बत में गिरफ़्तार है, बुरे आलिमों ने जो कुछ किया सो किया, सियासी रहनुमाओं ने जलती पर आग का काम किया और दीने फ़ितरत के हुस्न-ओ-जमाल को छुपा कर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ग़लत बातों को हवा दी और जज़्बात को उभारा इसीलिए इक़बाल ने कहा था :

जम्हूर के इबलीस हैं अर्बाबे सियासत।
बाक़ी नहीं मेरी ज़रूरत तहे अफ़लाक।

कुछ छुपाने की जो बात ऊपर की गई उस सिलसिले में यह इन्किशाफ़ (Disclosure - ज़ाहिर बात) मुलाहिज़ा हो कि हिन्दुओं की मज़हबी किताबों यानी चार वेदों में पछत्तर (75) जगहों पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र 'मनु' के नाम से आया है। वेदों के अंग्रेज़ अनुवादक गिरिफ़ित (Griffitt) ने ऋगवेद (1-मन्डल, सुक्त 13, मन्त्र 4) की व्याख्या करते हुए

लिखा है :

यानी "नूह लाजवाब शख़्सियत और इन्सानों के नुमाइन्दे थे, तमाम इन्सानी नस्ल के बाप (तूफ़ान के बाद आदमे सानी Second Adam या द्वितीय मनु की हैसियत से) पहली शरीयत के शुरू करने वाले थे" (तूफ़ान के बाद) Hyonns of Rgvide, Ved 1, p.3

हज़रते नूह अ़लैहिस्सलाम ने वेदों के मन्त्रों में हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तसदीक़ फ़रमाई और आपकी नूरानियत-औ-हिदायत का ज़िक्र फ़रमाया। (ऋगवेद, मन्डल 1, सुक्त 13, मन्त्र 4; ऋगवेद, मन्डल 1, सुक्त 44, मन्त्र 11; ऋगवेद, मन्डल 1, सुक्त 36, मन्त्र 19)

वेदों में 'अग्नि देवता' का ज़िक्र भी मिलता है जिससे मुराद मुहक़्क़िक़ीन (Researchers) ने हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी ली है। ऋगवेद में हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़ाती और सिफ़ाती (Attributive) नामों का ज़िक्र है, जैसे 'मुहम्मद' (स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और 'आक़िब'। (ऋगवेद, काण्ड 3, सुक्त 29, मन्त्र 11; नोट : वेदों के अंग्रेज़ अनुवादक ने लिखा है कि 'नराशंस' वेदों में 31 जगहों पर आया है इसके मानी हैं जो बहुत ज़्यादा तसदीक़ के लायक़ हो, यानी मुहम्मद --- तौरेत (Torah) व इन्जील (Avangel) में 'फ़ारक़लीत' आया है, इसके मानी भी यही हैं जिसकी बहुत तसदीक़ की गई हो)

और यजुर्वेद में आपका सिफ़ाती नाम 'रहमत' मिलता है। (मुहम्मद रियाज़ुर्रहीम, अग्नि का राज़, कराची 1998, पेज 31).

और जापान में पैग़म्बरों के नाम में एक नाम 'अमिताभ' मिलता है। (मुहम्मद रियाज़ुर्रहीम, अग्नि का राज़, कराची 1998, पेज 32) हिन्दुओं की मज़हबी किताब 'भविष्य पुराण' में तो हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बहुत सी ख़ूबियों का ज़िक्र है (मुहम्मद रियाज़ुर्रहीम, चन्दन की ख़ुशबू

वाले, कराची 1990) और आपकी इस महक और ख़ुशबू का ज़िक्र है जिससे अहादीस व सीरत की किताबें भरी पड़ी हैं। (जैसे ये किताबें :

(1) ज़रक़ानी अलल मुवाहिब, जिल्द 4, पेज 223

(2) इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ़ : सबीलुलहुदा वर्रशाद फ़ी सीरते ख़ैरुल इबाद, जिल्द 1, पेज 472

(3) अल्लामा निब्हानी : साइल वल वसूल इला शमाइलुर्रसूल, पेज 38

(4) अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी : मदारिजुन्नबूवा, जिल्द 1, पेज 348

(5) अल इत्तिहाफ़ुल रब्बानिया, पेज 263

(6) जलालुद्दीन सुयूती : अलख़साइसुल कुबरा, जिल्द 1, पेज 67

(7) इब्ने जौज़ी : अलवफ़ा बेअहवालुल मुस्तफ़ा, जिल्द 2, पेज 408

(8) बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1, पेज 264

(9) इब्ने असाकिर, जिल्द 1, पेज 264

(10) इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल निब्हानी : जवाहिरुल बिहार, पेज 72)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़िक्र हर इल्हामी किताब (Scripture) में आया है, इस की वजह ये मालूम होती है कि अल्लाह तआला ने आलमे अरवाह में जबकि दुनिया में कोई इन्सान न आया था बल्कि दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी, अपने रसूलों और पैग़म्बरों से यह अहद लिया था जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दुनिया में आएं तो सब उनकी पैरवी करें, उनकी हर तरह मदद करें। इससे यह मतलब भी लिया जा सकता है कि आपके ज़माने के बाद हर नबी और हर पैग़म्बर क मानने वालों पर यह लाज़िम है कि वह सिर्फ़ और सिर्फ़ आपकी पैरवी (Follow) करें यानी आपके आने के बाद सिर्फ़ और सिर्फ़ आपकी शरीयत का रिवाज होगा। क़ुआन करीम की यह आयत जो इल्मुलबशर (मानव–विज्ञान) के लिहाज़ से निहायत अहम है मुलाहिज़ा हो : तर्जमा : "और याद करो जब पैग़म्बरों से अल्लाह ने उनका

अहद लिया : जब मैं तुम्हें किताब और हिकमत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वह रसूल कि 'तुम्हारी किताबों की तसदीक़ फ़रमाए तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर-ज़रूर उस की मदद करना --- फ़रमाया : तो तुमने इक़रार किया और उस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया --- सब ने अर्ज़ किया : हमने इक़रार किया, फ़रमाया कि एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ।"

(क़ुर्आन : सूरा : आले इमरान, आयत न. 8।)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्र तमाम इल्हामी और मज़हबी किताबों में आया है :

ज़बूर (Psalms) में आपका ज़िक्र है, तौरेत में आपका ज़िक्र है, इन्जील में आपका ज़िक्र है, तमाम आसमानी सहीफ़ों में (Revealed Books) आपका ज़िक्र है। अगर छुपाने वाले सच्चाई नहीं छुपाते तो आज दुनिया का यह हाल न होता जो हम देख रहे हैं। एक ही दीने फ़ितरत पर चलने वाले और एक ही दीन का पैग़ाम देने वाले इस तरह बट गए जैसे दीने फ़ितरत से उनका कोई ताल्लुक़ ही नहीं --- हिन्दोस्तान के एक हिन्दु स्कालर की रिसर्च से यह साबित होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्र होता चला आया है जिसको छुपाने वाले छुपाते रहे हैं लेकिन जो छुपाया गया था, वह इस दौर में ज़ाहिर हो गया। शायद इसलिए कि हिन्दोस्तान के सारे रहने वालों बल्कि दुंनिया में सारे बसने वालों को एक होना है और दीने फ़ितरत क़बूल करके अपने घर में आना है।

The Vulgate has it as follows: "***He saw a chariot of two horsemen, a rider upon an ass and a rider upon a camel, etc.***"

There can be no doubt that of the two riders mentioned by the Prophet Isaiah as being the restorers of the true worship of the Godhead, the rider upon the ass is Jesus Christ, because he so made his entry into Jerusalem, and that by the rider of a camel is meant the Prophet of Arabia, of which country the camel is the common means of conveyance. It is an historical fact that after conquering Mecca, the Prophet Muhammad (peace be on him!) entered into the Holy City riding on a camel, with ten thousand of his followers behind him.

Prophecies in the New Testament:

The Gospel of St. John.

PROPHECIES IN THE NEW TESTAMENT

The Ahmad of Messiah

ORIGINAL GREEK TEXT

15 Ἐὰν ἀγαπᾶτέ με, τὰς ἐντολὰς τὰς ἐμὰς τηρήσετε.
16 κἀγὼ ἐρωτήσω τὸν Πατέρα καὶ ἄλλον Παράκλητον
17 δώσει ὑμῖν ἵνα ᾖ μεθ' ὑμῶν εἰς τὸν αἰῶνα,.
Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν παρ' ὑμῖν 25
μένων· ὁ δὲ Παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον 26
ὃ πέμψει ὁ Πατὴρ ἐν τῷ ὀνόματί μου, ἐκεῖνος
ὑμᾶς διδάξει πάντα καὶ ὑπομνήσει ὑμᾶς πάντα
ἃ εἶπον ὑμῖν ἐγώ.
7 ἀλλ' ἐγὼ τὴν ἀλή-
θειαν λέγω ὑμῖν, συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω.
ἐὰν γὰρ μὴ ἀπέλθω, ὁ Παράκλητος οὐ μὴ ἔλθῃ
πρὸς ὑμᾶς· ἐὰν δὲ πορευθῶ, πέμψω αὐτὸν πρὸς
8 ὑμᾶς. καὶ ἐλθὼν ἐκεῖνος ἐλέγξει τὸν κόσμον
περὶ ἁμαρτίας καὶ περὶ δικαιοσύνης καὶ περὶ
9 κρίσεως· περὶ ἁμαρτίας μέν, ὅτι οὐ πιστεύουσιν
10 εἰς ἐμέ· περὶ δικαιοσύνης δέ, ὅτι πρὸς τὸν Πατέρα
11 ὑπάγω καὶ οὐκέτι θεωρεῖτέ με· περὶ δὲ κρίσεως,
12 ὅτι ὁ ἄρχων τοῦ κόσμου τούτου κέκριται. Ἔτι
πολλὰ ἔχω ὑμῖν λέγειν, ἀλλ' οὐ δύνασθε βαστά-
13 ζειν ἄρτι· ὅταν δὲ ἔλθῃ ἐκεῖνος, τὸ Πνεῦμα τῆς
ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς τὴν ἀλήθειαν πᾶσαν·
οὐ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἀκούει λα-
14 λήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

Translation:

"If ye love me ye will keep my commandments. And I will pray to the Father and he shall give you another Parakletos (Comforter) that he may be with you for ever. These things have I spoken unto you while yet abiding with you. But the Comforter (Parakletos) which is the spirit of truth whom the Father will send . . . he shall teach you all things and bring all things to your remembrance, whatsoever I said unto you. (John, 14: 15; 16; 25; 26.)

सेन्ट जान की अस्ल यूनानी इन्जील (Evangel) का पेज 10 --- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

तीसरा बाब (chapter iii)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बेअ़सत (Annunciation) से पहले

पिछले बाब (अध्याय) में अर्ज़ किया जा चुका है कि इन्सान की पैदाइश और दुनिया के वजूद में आने से पहले अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बरों की रूहों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त और मदद का वादा लिया था और अहद-ओ-पैमान बाँधा था --- ज़ाहिर है यह अहद हर नबी को याद था और उन्होंने अपने उम्मतियों को बताया था इसलिए हर नबी ने आपका ज़िक्र किया और हर उम्मत में आने वाले बुज़ुर्गों ने आपका ज़िक्र किया। इस सिलसिले में तारीख़ से एक अनोखा वाक़िया पेश करता हूँ जिससे अन्दाज़ा होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अबदियत-ओ-रिसालत (बन्दा होने और रसूल (Messenger) होने) में अव्वल भी हैं और आख़िर भी।

यह वाक़िया शाहजहां बादशाह के ज़माने के एक इतिहासकार शैख़ फ़रीद भक्करी ने अपनी किताब "ज़ख़ीरतुल ख़वानीन" (शैख़ फ़रीद भक्करी) में पेश किया है। यह वाक़िया 1060 हिजरी / 1649 ई. का है। इसके बयान करने वाले लाहौर के गवर्नर क़ुलीज़ ख़ाँ के आबिद-ओ-ज़ाहिद भतीजे मुहम्मद सईद ने जौनपुर के थानेदार नवाब सुबगतगीन से बयान किया है जो उनका आँखों देखा है। यहाँ उनके बयान का ख़ुलासा (सार) पेश किया जाता है :

"जौनपुर का इलाक़ा क़ुलीज ख़ाँ की जागीर में था, 1060 हिजरी / 1649 ई. में उन्होंने यहाँ एक आलीशान इमारत बनाना चाही, काम शुरू कर दिया गया, खोदते-खोदते ज़मीन में गुम्बद

का कलस दिखाई पड़ा, काम इसलिए रोक दिया गया कि शायद यहाँ कोई बड़ा ख़ज़ाना है। क़ुलीज मुहम्मद ख़ाँ को इत्तिला दी गई, वह अपने मातहत अफ़सरों के साथ वहाँ आ गए और यहाँ दस रोज़ तक ठहरे। उनके सामने फिर खुदाई शुरू हुई, पूरा गुम्बद निकल आया, मिट्टी साफ़ की गई तो लोहे का बड़ा दरवाज़ा नज़र आया जिसमें एक भारी ताला लगा हुआ था। ताला तोड़ा गया और दरवाज़ा खोला गया, क़ुलीज़ ख़ाँ जौनपुर के बड़े लागों के साथ गुम्बद में दाख़िल हुए, क्या देखते हैं गुम्बद के बीचों बीच एक लम्बा मगर कमज़ारे बुज़ुर्ग जिसकी दाढ़ी भरवां थी मगर हड्डियों की माला मालूम होते थे, जोगियों की तरह आसन मारे और सिर झुकाएं बैठे हैं। दरवाज़े की खड़खड़ाहट और भीड़ की भनभनाहट से इस तरह सिर उठाया जैसे गहरी नींद से जागे हों। भीड़ देख चन्द चौकां देने वाले सवाल पूछे जिनका ताल्लुक़ तारीख़ के पहले के ज़माने से था। यह सवाल और जवाब आप भी सुनें।

सवाल : अवतार रामचन्द्र आ गया? (मकतूबाते इमाम रब्बानी, जिल्द ।, मकतूब न. 67, उर्दू तर्जमा, कराची में छपा, पेज 370 पर है। राम-कृष्ण और उनकी तरह के हिन्दुओं के जो दूसरे माबूद हैं सब अल्लाह के बन्दे हैं और मां-बाप से पैदा हैं।)

जवाब : हां, आ गया।

सवाल : सीता जिसको रावण ले गया था रामचन्द्र के हाथ आ गई।

जवाब : हां, आ गई।

सवाल : अवतार श्रीकृष्ण मथुरा में ज़ाहिर हो गया।

जवाब : चार हज़ार वर्ष गुज़रे वह आया भी और गुज़र भी गया।

सवाल : हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, ख़ातमुन्नबीईन (Seal of the prophets – आख़िरी नबी) अरब में ज़ाहिर हो गए?

जवाब : हज़ार साल गुज़र चुके हैं कि आप सारे धर्मों को

मन्सूख़ फ़रमा कर दीने नबवी को रिवाज देकर इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए।

सवाल : गंगा का पानी चल रहा है?

जवाब : एक आलम के लिए इज़्ज़त बख़्श है।

बुज़ुर्ग : अच्छा मुझे बाहर निकालो।

चुनान्चे इन बुज़ुर्ग को बाहर निकाल कर ख़ेमे में रक्खा गया और वह दीने फ़ितरत इस्लाम के मुताबिक़ नमाज़ अदा करते रहे और इबादत-ओ-रियाज़त में मशग़ुल रहे --- यह बुज़ुर्ग इन्सानों की तरह खाते-पीते और सोते जागते थे। 6 माह बाद उनका इन्तक़ाल हो गया और कफ़न व जनाज़े के बाद उन्हें दफ़्न किया गया।

इन बुज़ुर्ग के सवालों से मालूम होता है कि वह हज़ारों साल से इस गुम्बद में मुक़ीम थे। ख़ुद गुम्बद का परत दर परत मिट्टी में धंस जाना भी इसकी तसदीक़ करता है कि उसको बने हुए मुद्दत हो चुकी थी और एक ज़माना गुज़र चुका था।

इस तारीख़ी वाक़िए का बयान करने वाला कहता है कि मिर्ज़ा सईद का कहना है कि उसने यह सब कुछ आपनी आंखों के सामने देखा है और बयान करने वाले इतिहासकार का कहना है कि मिर्ज़ा सईद ऐसा सच्चा इन्सान है जिसकी बात को झूटा कहना बहुत बड़ा गुनाह है। डाक्टर इक़बाल ने सच कहा था :

अक़्ले बे माया इमामत की सज़ावार नहीं।
रहबर हो ज़न-ओ-तख़्मीं तो ज़ुबूंकार हयात।

हर नबी नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अमीन था, हर नबी दीने फ़ितरत का पैग़ाम लाने वाला था। जब से इन्सानियत वजूद में आई, हिदायत के लिए दीने फ़ितरत भी साथ-साथ आया, यह कोई नया मज़हब नहीं उतना ही पुराना है जितना इन्सान पुराना है बल्कि इन्सान से भी ज़्यादा पुराना क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पहले नबी हैं और आख़िरी नबी भी हैं। आप उस वक़्त भी नबी

थे जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ख़मीर तय्यार किया जा रहा था। आपके आने के बाद दीने फ़ितरत मुकम्मल (पूरा) हो गया, अब उसमें कोई कमी नहीं।

सारे धर्मों की तालीमात की स्टडी करेंगे तो मालूम होगा कि इनमें सारी इन्सानियत के लिए पैग़ाम नहीं। अगर पैग़ाम है तो दीने फ़ितरत में है। यह हक़ीक़त तारीख़ से भी साबित होती है (Syed Anwer Ali : Islam the Religion, Lahore 2002, p 415 **नोट** : इस किताब में बड़ी तफ़सील से इस तारीख़ी हक़ीक़त का आदिलाना (न्यायपूर्ण) और ग़ैर जानिबदाराना (निष्पक्ष) जायज़ा (Review) लिया है जो हर ग़ैर मुस्लिम के लिए पढ़ने लायक़ है) और तालीम से भी साबित होती है इसलिए क़ुर्आन में अल्लाह का यह इरशाद मिलता है :

आयत का तर्जमा : "और आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल (पूरा) कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौरे दीन पसंद किया।"

(क़ुर्आन : सूरा माइदा, आयत न. 3)

अल्लाह को यह पसंद नहीं कि दीने फ़ितरत के बावजूद इन्सान दूसरे दीन पर चलता रहे। अल्लाह के नज़दीक दूसरा दीन है ही नहीं। दीने फ़ितरत ही एक दीन है इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उन इन्सानों से जिन्होंने आलमे अरवाह में उसको पर्वरदिगार (Sustainer) माना था और उस पर ईमान लाए थे, यह फ़रमाया :

आयत का तर्जमा : "ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो।" (क़ुर्आन : सूरा बक़रा, आयत नं. 208)

अल्लाह को यह बात हरगिज़ गवारा नहीं कि दीने फ़ितरत के होते हुए कोई अपना नाम यहूद रख ले, कोई ईसाई रख ले, कोई अपना नाम हिन्दू रख ले। यह सारे नाम बन्दों के पैदा किए हुए हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों का नाम 'मुसलमान' ही रक्खा, सारे नबी मुसलमान थे जो इस्लाम की दावत देते रहे चुनान्चे

क़ुर्आन में इरशाद है :

"इब्राहीम न यहूदी थे न नसरानी बल्कि हर बातिल (false) से जुदा मुसलमान थे और मुशरिकों (polythiests) में से न थे।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत न. 67)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो अल्लाह के बहुत से नबियों और रसूलों के जद्दे आला (पूर्वज) थे, ने अपने बेटों को नसीहत फ़रमाई :

तर्जमा : ऐ मेरे बेटो! बेशक अल्लाह ने यह दीन तुम्हारे लिए चुन लिया तो न मरना मगर मुसलमान।"

(क़ुर्आन : सूरा बक़रा, आयत न. 132)

ऊपर अर्ज़ किया गया कि अल्लाह तआला ने हर उम्मत में अपने रसूल और नबी भेजे, यक़ीनन सब कान्टीनेन्ट में भी बहुत से नबी आए होंगे। हम यहां हिन्दोस्तान के एक कामिल वली हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुहद्दिद अलेफ़ सानी अलैहिर्रहमा के देखे हुए हालात नक़्ल करते हैं। यह हालात आपने अपने साहबज़ादे शैख़ मुहम्मद सईद अलैहिर्रहमा के नाम एक ख़त में लिखे हैं । इसमें शक नहीं कि यह देखे हुए बयानात इल्मुल अदयान (धर्मों का ज्ञान – Knowledge of the Religions) के स्कालरों के लिए एक अहम मालूमात हैं। आप फ़रमाते हैं :

"ऐ फ़र्ज़न्द! यह फ़क़ीर जिस क़दर देखता है और नज़र दौड़ाता है ज़मीन पर कोई जगह ऐसी नहीं पाता जहां हमारे पैग़म्बरे अलैहिस्सलाम वत्तसलीमात की दावत न पहुंची हो और गुज़री हुई उम्मतों में मुलाहिज़ा करने से मालूम होता है कि ऐसी जगह बहुत कम ही है जहां पैग़म्बर न भेजे गए हों। यहां तक कि हिन्द में भी जो कि इस मामले में दूर दिखाई देती है मालूम-ओ-महसूस होता है कि हिन्द में पैग़म्बर हुए हैं और अल्लाह की तरफ़ दावत (Call - बुलाना) फ़रमाई है।" (शैख़ अहमद सरहिन्दी, मकतूबात शरीफ़, जिल्द 1, बनाम ख़्वाजा

मुहम्मद सईद मकतूब नम्बर 259, कराची में छपा, उर्दू तर्जमा, पेज 207)

और बाज़ (कुछ) शहरों में महसूस होता है कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अनवार शिर्क के अंधेरों में शमा की तरह रौशन हैं (एम. ज़मान खोखर एडवोकेट गुजरात पाकिस्तान ने पाकिस्तान भर में नौ गज़ लम्बे मज़ारों के बारे में 670 पेज की एक किताब लिखी है जिसमें नबियों के मज़ारों का भी ज़िक्र है। हिन्दोस्तान में कुछ मज़ार नबियों से मन्सूब हैं। एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे हिन्द से ख़ुशबू आ रही है। यक़ीनन यह ख़ुशबू उन नबियों की होगी। डाक्टर इक़बाल ने इसी तरफ़ इशारा किया है।

मीरे अ़रब को आई ठंडी हवा जहां से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है
नूह का आकर ठहरा जहां सफ़ीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

(बांगे दरा)

अगर यह (फ़क़ीर) इन शहरों की निशानदही करना चाहे तो कर सकता है और देखता है कि कोई पैग़म्बर ऐसा है जिस पर कोई भी इंसान ईमान नहीं लाया और उसकी दावत को क़बूल नहीं किया और कोई पैग़म्बर ऐसा है कि जिस पर एक आदमी ईमान लाया है और किसी पैग़म्बर के मानने वाले दो शख़्स हुए हैं, कुछ पर तीन आदमी ईमान लाए हैं, तीन से ज़्यादा आदमी नज़र नहीं आते जो हिन्दोस्तान में किसी एक पैग़म्बर पर ईमान लाए हों उस तक कि चार आदमी एक पैग़म्बर की उम्मत होते --- और हिन्द के काफ़िरों के सरदारों ने अल्लाह के वजूद और पाक ज़ात की सिफ़ात (Attributes) से उसकी पाकी की निस्बत जो कुछ लिखा है वह सब नबूवत के चिराग़ की रौशनी से लिया गया है क्योंकि पिछली उम्मतों में एक न एक पैग़म्बर ज़रूर गुज़रा है जिसने वाजिब तआ़ला (Allah Selfexistent)

के वजूद और उसके सिफ़ात (Attributes) और उसकी पाकी की ख़बर दी है। अगर इन बुज़ुर्गों का मुबारक वजूद न होता तो उन बदबख़्तों की लंगड़ी और अंधी अक़्ल जो कि ज़ुल्म और कुफ़्र-ओ-पाप की अंधेरियों से लिपटी हुई है इस दौलत की तरफ़ क्यों हिदायत पाती?

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी अलैहिर्रहमा का यह कश्फ़ (Manifestation) आपके दूसरे मकाश्फ़ात (Manifestations) की तरह हदीस के ऐन मुताबिक़ है चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

तर्जमा : मुझ पर उम्मतों को पेश किया गया, यह उम्मतें अपने-अपने नबियों के साथ गुज़रीं। किसी नबी के साथ चन्द मुसलमान थे, किसी नबी के साथ दस मुसलमान थे, किसी नबी के साथ एक ही मुसलमान था। फिर मैंने एक बड़ी जमाअत को देखा, मैंने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से पूछा : "ऐ जिब्रील! क्या यह मेरी उम्मत है? उन्होने कहा, "नहीं" --- फिर कहा ज़रा ऊपर की तरफ़ देखिए, मैंने ऊपर की तरफ़ देखा तो यह उससे भी ज़्यादा एक बड़ी जमाअत थी। जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने कहा यह आप ही की उम्मत है और यह सत्तर हज़ार वह हैं जिन पर न हिसाब-किताब है और न अज़ाब। मैंने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से पूछा यह क्यों? उन्होंने कहा कि यह लोग न चोरी करते थे न फ़ाल निकालते थे, अल्लाह तआला पर भरोसा करते थे।" (बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 2, पेज 978; मुसनदे इमाम अहमद, जिल्द 1, पेज 271; बैरूत से छपी; सहीह इब्ने हिब्बान, जिल्द 14, पेज 349, बैरूत से छपी)

12 वीं सदी हिजरी के बुज़ुर्ग मिर्ज़ा मुहम्मद जाने जानाँ रहमत उल्लाह अलैह (वफ़ात 1195 हिजरी मुताबिक़ 1718 ई.) जिनके वालिद माजिद मिर्ज़ा जान औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह के मन्सबदार थे। मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां ने हिन्दोस्तान के पुराने

धर्मों की किताबों से कुछ मालूमात जमा की है जिनसे अन्दाज़ा होता है शायद यह किताबें पिछले नबियों पर उतारी गईं जो हिन्दोस्तान आते गए मगर अब अपनी अस्ली हालत में नहीं। मिर्ज़ा जाने जानां रह़मतुल्लाह अ़लैह के क़ौल के मुताबिक़ इन किताबों से नीचे लिखी हुई सच्चाइयों का पता चलता है :

(1) इन्सानी पैदाइश के शुरू में इन्सानों की भलाई के लिए अल्लाह तआ़ला ने एक किताब नाज़िल की जिसका नाम वबैद (वेद) है इसमें इन्सानो की इस दुनिया और आख़िरत (Here-after) की भलाई और सुधार का बयान है।

(2) यह किताब एक फ़रिश्ते के ज़रिए भेजी गई जिसका नाम ब्रह्मा था।

(3) धर्मशास्त्रियों ने उससे 6 किताबें बनाकर अपने मज़हबी अ़क़ीदों के सिद्धान्त लिखे। इसे धर्मशास्त्र कहा जाता है।

(4) इन धर्मशास्त्रियों ने इन्सानों को चार जातियों में बांटा है और हर जाति के हुक्म बयान किए हैं। इसे कर्मशास्त्र कहा जाता है जिसको हम इल्मे फ़िक़्ह (Jurisprudence) कहते हैं।

(5) इन धर्मशास्त्रियों ने इस दुनिया की उम्र को चार हिस्सों में बांटा है और हर हिस्से का नाम 'जुग' रक्खा है और हर जुग के आमाल (Acts, Deeds) बयान किए हैं।

(6) हिन्दुओं के तमाम फ़िरक़े अल्लाह तआ़ला की वहदानियत (Unity - एक होने) पर सहमत हैं और दुनिया को हादिस (अल्लाह का बनाया हुआ न कि ख़ुद पैदा हो जाने वाला) कहते हैं। इनके यहा आलम का हादिस होना साबित है।

(7) वह जिस्मानी हश्र (Resurrection - मरने के बाद की ज़िन्दगी) और आमाल (कर्म) की जज़ा (Reward) के क़ायल हैं।

(8) उनके यहां अक़्ली और नक़्ली उलूम (तार्किक और परम्परागत - Rational & Traditional Branches of Knowledge) भी हैं।

(9) वह रियाज़ात और मुजाहिदात (Mystical exercise and Struggle - संघर्ष) भी करते हैं।

(10) उनके कुतुबख़ाने (Libraries) जगह-जगह मौजूद हैं।

(11) उनकी बुतपरस्ती अल्लाह के साथ शिर्क (Polytheism) की वजह से नहीं है बल्कि वह फ़रिश्ते जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से इस दुनिया में दख़ल रखते हैं, कुछ कामिलीन की रूहें हैं (जो उनके अक़ीदे के मुताबिक़ अपने जिस्म से अलग हुईं और दुनिया के कामों में दख़ल रखती हैं या कुछ ज़िन्दा हस्तियां जो उनके ख़्याल में हमेशा ज़िन्दा रहने वाली हैं उनकी मूर्तियां बनाकर उनकी तरफ़ ध्यान लगाते हैं --- यह अरब वालों की बुतपरस्ती से मुख़्तलिफ़ (भिन्न) हैं। वह मूर्तियों को ही ख़ुद से मामलों में दख़ल देने वाला समझते थे यह मूर्तियों को अल्लाह के इख़्तियार का मज़हर (ज़ाहिर करने वाला) समझते हैं।

(12) हिन्दुओं की बन्दगी का सज्दा, इबादत का सज्दा नहीं, उनके क़ानून में मां-बाप और गुरू को सलाम की जगह सज्दे का रिवाज है।

(13) उन लोगों ने इन्सानी ज़िन्दगी के चार हिस्से किए। पहला हिस्सा इल्म हासिल करने के लिए, दूसरा हिस्सा रोज़ी कमाने और औलाद के लिए, तीसरा हिस्सा आमाल की तस्हीह (धर्म-कर्म) और अपने आप को शुद्ध करने और चौथा हिस्सा बैराग और इन्सानी कमाल हासिल करने के लिए।

(14) उनके धर्म के क़ायदे पूरी तरह मुनज़्ज़म (Organised) हैं इससे ज़ाहिर होता है कि उनका धर्म व्यवस्थित था जिस तरह यहूद और नसारा का दीन था जो मन्सूख़ हो गया। (अबुल हुसैन ज़ैद फ़ारूक़ी : हिन्दुस्तानी क़दीम मज़ाहिब, मिर्ज़ा जाने जानां , मौलाना सय्यद इख़लाक़ हुसैन देहलवी, शाहे अबुल हसन ठटठवी, पेज 21)

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने सूरए हूद की कमेन्ट्री में 'तफ़सीरे कबीर' में फ़रमाया :

तर्जमा : "मैं हिन्दोस्तान के शहर में गया तो देखा कि यह कुफ़्फ़ार (Infidels) अल्लाह के वजूद पर एक राय हैं।"

(तफ़्सीरे कबीर, जिल्द 17-18, भाग 18, पेज 10)

14 वीं सदी ईसवीं के स्कालर अबू रैहान अलबैरूनी ने भी यही बताया और बाद के पश्चिमी स्कालरों ने भी यही रिसर्च पेश की। एलफेन्टिस ने अपनी किताब "तारीख़े हिन्दोस्तान" (देहली में छपी 1867 ई. पेज 68) में लिखा है "वेद का मक़सद यह है कि ख़ुदा वाहिद है। अक्सर जगह वेद में लिखा है कि अस्ल में सिर्फ़ एक ही ख़ुदा है जो सबसे आला और बरतर है, सारी दुनिया को पैदा किया। हुज़ूर अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जो सारी दुनिया के सामने यह एलान फ़रमाया :-

तर्जमा : "ऐ किताबियों ऐसे कल्मे की तरफ़ आओ जो हम में और तुम में यकसां हैं यह कि इबादत न करें मगर ख़ुदा की और किसी को उसका साझी न बनाएं।"

वह इसी तारीख़ी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करता है कि दीने फ़ितरत का बुनियादी अक़ीदा "अक़ीदए तौहीद" (The Faith of Monotheism) ही है। तमाम क़ौमों ने दीनी और दुनियावी तरक़्क़ी इसी अक़ीदे के तुफ़ैल की है।

वैदिक धर्म की स्टडी से पता चलता है कि उसमें ऐसे अल्फ़ाज़ हैं जो कि मज़हबी क़िस्म की तर्जमानी (व्याख्या) करते हैं जैसे स्वर्ग (बहिश्त), बैकुंठ (जन्नत), मुक्ति (नजात), महा मुक्ति (नजाते कुबरा), प्रलय (क़ियामत), नर्क (जहन्नम), सुर (फ़रिश्ता), औतार (पैग़म्बर), प्रलोक (आलमे आख़िरत), अप्सराएं (हूरें), यमदूत (मलकुल मौत), पितृलोक (पर्दा), चतुरगैत (किरामन कातिबीन), देवता (बुज़ुर्ग, वली)

किसी भाषा या देश में किसी ख़ास इल्म के नामों, गुणों, क्रियाओं (Acts या Function) और टैक्निकल टर्म्स पाए जाएं तो इस बात की दलील होते हैं कि वह ख़ास इल्म उस भाषा मे या उस देश में किसी ज़माने में प्रचलित था। मिसाल के तौर

पर अगर किसी भाषा व देश में फ़िज़िक्स, कैमिस्ट्री, मैथेमेटिक्स वग़ैरा के टैक्निकल टर्म्स और नाम व गुण पाए जाए तो इस बात का सबूत होंगे कि यह उलूम (विधाएं) व भाषा उस देश में प्रचलित थे। ऊपर जो संस्कृत और हिन्दी के अल्फ़ाज़ पेश किए गए यह ख़ास इल्हामी किताबों (Revealed Books) के टर्म्स और नाम व गुण हैं, इससे अन्दाज़ा होता है कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन इल्हामी किताबों और इल्हामी मज़हब से ख़ाली नहीं रही। इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) अल्लाह के वलियों के मकाश्फ़ात (Manifestation) से भी होती है और कुछ तारीख़ी सच्चाइयों से भी जिनका तफ़सीली (Detailed) ज़िक्र ऊपर किया गया है। वैदिक धर्म में नबियों के नाम भी मिलते हैं जैसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को मच अवतार के नाम से याद किया गया है और हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम को मच भुज अवतार के नाम से। (कुछ स्कालरों का ख़्याल है कि क़ुर्आने करीम में साइबून, साईबीन का ज़िक्र है उससे मुराद हिन्दू क़ौम ही है। डिक्शनरियों में साबी का अर्थ है एक मज़हब से दूसरे की तरफ़ फिरने वाला, धर्म परिवर्तन करने वाला और साइबून का अर्थ है सितारों की पूजा करने वाली एक क़ौम। कुछ के नज़दीक वह क़ौम जो ख़ुद को नूह अ़लैहिस्सलाम के दीन को मानने वाली जानती है (अलमुन्जिद, कराची, पेज 553) मुहम्मद रियाज़ुल रहीम साहब ने एक किताब लिखी है जिसका नाम है "साइबीन, उम्मते नूह और क़ौम" --- शायद यह किताब कराची से छप गई होगी। राइटर के मुताबिक़ आयत न. 35 में जिन रसूलों को ऊलुल अज़्म कहा गया है उनमें चार को हम जानते हैं यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम, पाँचवे रसूल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की उम्मत नामालूम है। अहादीस से पता चलता है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम अपने रसूल को नहीं पहचानेगी चुनान्चे हिन्दू क़ौम अपने नबी को नहीं

जानती जबकि दावा यह है कि वेद इल्हामी किताब (Revealed Book) है (मुहम्मद रियाज़ुल रहीम, चन्दन की ख़ुशबू वाले, कराची में छपी, 1995, पेज 2-3)। वैदिक धर्म की किताबों में क़ुर्बानी का भी ज़िक्र मिलता है। हालांकि मौजूदा दौर के हिन्दू गाय की क़ुर्बानी के सख़्त ख़िलाफ़ हैं। ऋग्वेद में लिखा है :

"फिर क़ुर्बानियों के समय किसकी इबादत करें और किसके भजन गाएं, उसी के जो रब्बे ला-ज़वाल है।" (पेज 51)

इससे मालूम होता है वैदिक धर्म मे क़ुर्बानी को मज़हबी अहमियत हासिल थी और यह भी अन्दाज़ा होता है कि हिन्दोस्तान में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम (Prophets) आए और आसमानी सहाइफ़ (Revealed Books) भी नाज़िल हुए जिनके नाम यहां मज़हबी किताबों में मिलते हैं। क़ुर्आने करीम में जो मोवाहिदीन (एक अल्लाह में विश्वास रखने वाले) को आम दावत दी गई है उसमें वैदिक धर्म के मानने वाले भी शामिल हैं।

सब मज़हबों के मानने वालों को इसी एक मज़हब की तरफ़ लौटना चाहिए जिसके आसार हर आसम्मानी किताब और सहीफ़े में नज़र आते हैं और जिसकी हक़ीक़त का पता लगाना कुछ ज़्यादा मुश्किल नहीं, शायद इन्हीं हक़ाइक़ (सच्चाइयों) को ध्यान में रखते हुए डाक्टर इक़बाल ने रामचन्द्र और गौतम बुद्ध वग़ैरह को मज़हबी तारीख़ की अहम शख़्सियत में शामिल किया है चुनांचे रामचन्द्र के लिए इक़बाल कहते हैं :

इस देश में हुए हैं हज़ारों मलक सिरिश्त
मशहूर जिनसे है दुनिया में नामे हिन्द

(कुल्लियाते इक़बाल, पेज 157, बहवाला बांगे दरा, दिल्ली में छपा)

और गौतम बुद्ध के लिए कहते हैं :

क़ौम ने गौतम की ज़रा परवाह न की
क़द्र पहचानी न अपने गौहरे यकदाना की
आह बदक़िस्मत रहे आवाज़े हक़ से बे-ख़बर

ग़ाफ़िल अपने फल की शीरीनी से होता है शजर
(कुल्लियाते इक़बाल, पेज 14, बहवाला बांगे दरा, दिल्ली में छपी)

हक़ीक़त यह है कि सब कान्टोनेन्ट की पुरानी मज़हबी शख़्सियत ने तौहीद ही का पैग़ाम दुनिया को दिया इसीलिए एक हदीस के मुताबिक़ हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हिन्दोस्तान से महक आती हुई महसूस हुई।

डाक्टर इक़बाल इसी हदीस की तरफ़ इशारा करते हुए लिखते हैं :

वहदत की लौ सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से
मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहां से
मेरा वतन वही है

(बांगे दरा, बहवाला क़ुल्लियाते इक़बाल, मतबूआ देहली, पेज 112)

अरब व हिन्द के बड़े पुराने सम्बन्ध थे (पुराने ज़माने से अरब व हिन्द के ताल्लुक़ात चले आ रहे हैं चुनांचे हिन्दोस्तान और पश्चिमी देश अरब, फ़लस्तीन और मिश्र के बीच तिजारती ताल्लुक़ात की तारीख़ बहुत पुरानी है (तमद्दुने हिन्द पर इस्लामी असरात, पेज 52)। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिए हिन्दोस्तान से सोना चांदी और हाथी दांत वग़ैरह आते थे (हिस्ट्री आफ़ ब्रिटिश इन्डिया, जिल्द 1, पेज 25)। अरबों ने क़ुदरतन पूरब व पश्चिम के बीच तिजारत में सरगर्मी से हिस्सा लिया। उनके इलाक़ों में कई व्यापारिक केन्द्र क़ायम थे (तमद्दुने हिन्द पर इस्लामी असरात, पेज 55)। सूबा बम्बई के गज़ेटियर में ख़ान बहादुर फ़ज़लुल्लाह लुत्फ़ुल्लाह फ़रीदी ने इस्लाम से पहले अरबों की बस्तियों वग़ैरह का ज़िक्र किया है। सातवीं सदी ईसवी से ईरानी और अरब व्यापारी बड़ी संख्या में हिन्दोस्तान के पश्चिमी साहिल पर आबाद हो गए और मुल्क की औरतों से शादियां भी कीं (तमद्दुने हिन्द पर इस्लामी असरात, पेज 57)। लंका के बादशाह ने हज्जाज बिन यूसुफ़ की ख़िदमत में चन्द लड़कियां भेजीं जो उन अरब व्यापारियों की यतीम बच्चियां थीं जो उस

मुल्क में आबाद हो गए थे (तमद्दुने हिन्द पर इस्लामी असरात, पेज 58)। मुख़्तसर यह कि अरब और हिन्द का अन्दाज़ा क़ुर्आन, हदीस, सय्याहों (Travellers) के सफ़रनामों (यात्रा के वर्णनों) और पॉलीटिक्स के माहिरीन के बयानों से होता है। क़ुर्आन शरीफ़ की यह आयत भी इसकी तस्दीक़ करती है जिसमें यह फ़रमाया गया : "लोगों के लिए अल्लाह का सबसे पहला घर वह है जो मक्का में बनाया गया।" उन लोगों में यक़ीनन (निःसन्देह) हिन्दोस्तान के लोग भी शामिल हैं।) चुनांचे हिन्दोस्तान के कुछ इलाक़ों में हज़रत शीश अ़लैहिस्सलाम, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के मज़ारात बताए जाते हैं। (अब्दुल मन्नान, बाबरी मस्जिद, आईनए हक़नुमा में, रोर्टडम, हालैण्ड 1992, पेज 307)। हिन्दोस्तान के कुछ मुसलमान बादशाहों ने अहले हिन्द (People of India) की लड़कियों से जो शादियां की हैं शायद वह अहले हिन्द को अहले किताब (People of the Book) समझते थे। हिन्दोस्तान की मज़हबी शख़्सियात में गौतम बुद्ध के बारे में कहा जाता है कि वह अल्लाह के नबी थे --- वल्लाहो आलम (और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है) क़ुर्आन में ज़ुलकिफ़्ल का नाम मिलता है। (क़ुर्आन : सूरा अम्बिया, आयत न. 85)। गौतम बुद्ध कपिलवस्तु का रहने वाला था। अरबी भाषा में 'प' की जगह 'फ़' इस्तेमाल की जाती है इसलिए कपिल को अरबी में कफ़िल कहा जाएगा इस तरह ज़ुलकिफ़्ल का अर्थ हुआ "कपिल का रहने वाला" सूबा सरहद वग़ैरह में गौतम बुद्ध के मानने वालों की हुकूमत रही है वहां एक शहर का नाम कफ़िल गढ़ भी है इसलिए क़राइन (Circumstancial Evidence) से अन्दाज़ा होता है कि क़ुर्आन में जिस ज़ुलकिफ़्ल का ज़िक्र किया गया है वह गौतम बुद्ध ही हो।

इमाम राज़ी ने तफ़सीरे कबीर में ज़ुलकिफ़्ल का ज़िक्र किया है (जिल्द 6, पेज 126) गौतम बुद्ध ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए जो पेशगोई की उसमें आपको "मैत्रिया" कहा है (सेक्रेड बुक्स आफ़ दी ईस्ट, जिल्द 35, पेज 225) जिस का अर्थ संस्कृत भाषा में "रहमते आलम" है (पाल कैरिस - दी गास्पेल आफ़ बुद्धा, पेज 218)। गौतम बुद्ध ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए यह पेशगोई भी की है :

"उसकी वही (Revelation) बड़ी फ़सीह (Eloquent) होगी जो उसको सुनेंगे और सुन-सुन कर न थकेंगे बल्कि वह ज़्यादा से ज़्यादा सुनना चाहेंगे।"

(टी. डब्ल्यू वेज़, डेविडस बुद्धइज़्म, पेज 183)

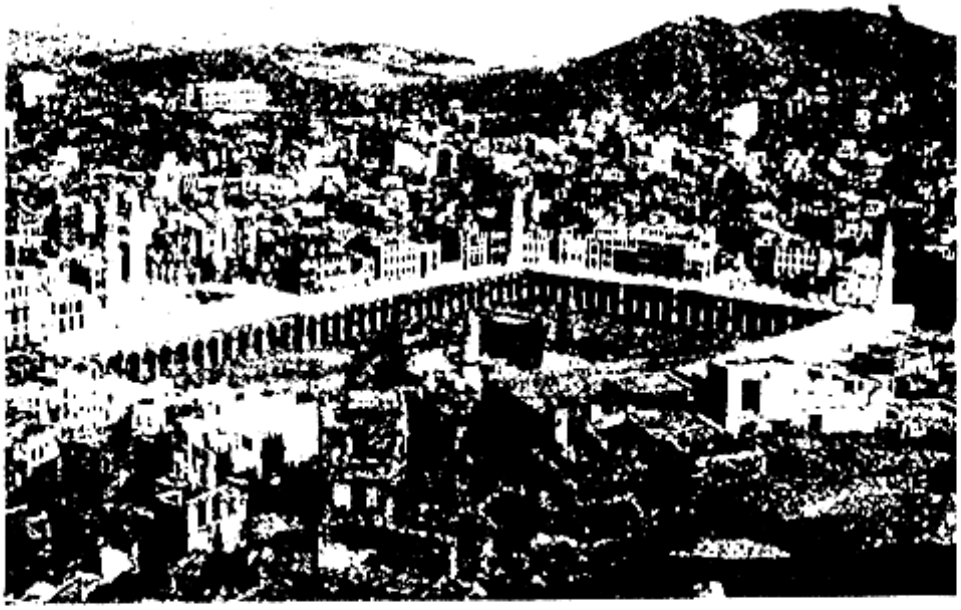

1 MUHAMMAD 570-632

My choice of Muhammad to lead the list of the world's most influential persons may surprise some readers and may be questioned by others, but he was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels.

Of humble origins, Muhammad founded and promulgated one of the world's great religions, and became an immensely effective political leader. Today, thirteen centuries after his death, his influence is still powerful and pervasive.

The majority of the persons in this book had the advantage of being born and raised in centers of civilization, highly cultured or politically pivotal nations. Muhammad, however, was born in the year 570, in the city of Mecca, in southern

7- (Michael H.Hart : The Hundred etc. New York ,

P.33)

चौथा बाब (Chapter 4)

दीने फ़ितरत और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

वेदों में बड़ी शिद्दत से अग्नि का राज़ (हक़ीक़ते मुहम्मदी का राज़) तलाश करने का हुक्म दिया गया है। यक़ीनन इस राज़ में कोई राज़ होगा। वेदों में है कि इस राज़ को "रासेख़ीने इल्म" (विद्या में पूर्ण) हासिल कर सकेंगे। (ऋगवेद, मण्डल 10, सुक्त 71, मन्त्र 3)। वेदों में यह भविष्यवाणी भी है कि यह भेद तहक़ीक़ और रिसर्च से ही खुल सकेगा और यह भेद खुलने पर ही तुम्हारी (हिन्दू क़ौम की) भलाई का का दारो मदार है और इस राज़ के खुलने के बाद तुम इमामे आलम (दुनिया के लीडर - सरदार) बनोगे। (ऋगवेद, मण्डल 3, सुक्त 29, मन्त्र 5)

हक़ीक़ते मुहम्मदी को सब मुक़द्दस किताबों (Holy Books) में बयान करने का मक़सद यह मालूम होता है कि जब दुनिया की क़ौमें अपनी तरफ़ भेजे गए नबियों को मान-मान कर अलग हो जाएंगी तो सबको उस जाने पहचाने नबी की वहदत (Unity) पर इकट्ठा किया जा सकेगा कि तुम आख़िर में आने वाले नबी की हैसियत से तो नहीं जानते? अलबत्ता पहले आने वाले की हैसियत से तो जानते हो क्योंकि आपका इक़रार तुम्हारी क़ौमों में आने वाले हर नबी से लिया गया है। बेशक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में तमाम नबियों की ख़ूबियां जमा हैं जिस तरह आपका इस्लाम हर दौर के दीने फ़ितरत का प्रधान है।

मुहम्मद रियाज़ुल रहीम साहब ने यह बड़ी दिल लगती बात कही है कि वक़्त की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि दूसरे धर्मों की पुस्तकों में इस हक़ीक़ते मुहम्मदी (मुहम्मदी वास्तविकता) का

जो ज़िक्र हुआ है उसे क़ुर्आन की रोशनी में साफ़ करके पूरी दुनिया को एक रसूल (Messenger) की हक़ीक़त पर जमा किया जाए। वेदों की पेशगोई के मुताबिक़ मरुस्थली उम्मत के लोग (यानी अरब) इस भेद की तहक़ीक़ करेंगे। (ऋगवेद, मण्डल 5, सुक्त 3, मन्त्र 3)। वेद व्यास जी ने एक किताब लिखी है जिसका नाम "कलकी औतार" रक्खा है उस के पेज 9 पर लिखा है :

"आपके पिता का नाम विष्णुदास (अब्दुल्लाह) और माता का नाम सोमवती (आमिना) होगा।" (मुहम्मदे अरबी नम्बर, कानपुर, मार्च 1985, बरकाती पब्लिकेशन्ज़, कराची 1988, पेज 79)

इस "कालकी औतार" के अलग-अलग पेजों पर जो कुछ लिखा है उसका सार यह है :

"आख़िरी ज़माने के नबी के बाप का नाम अ़ब्दुल्लाह और मां का नाम आमिना होगा। जिब्रील (Gabriel - the angel) ग़ारे हिरा में वही लाएंगे, मेराज का सफ़र (Prophet's Accession) फ़रमाएंगे, सियाही दूर करने वाले नूरे मुजस्सम (पूर्णतया प्रकाश) होंगे, ख़ात्मुन नबीईन (Seal of the prophets) होंगे। (इस्तक़ामत, कानपुर, मुहम्मदे अरबी नम्बर, पेज 79)

हिन्दोस्तान के धार्मिक अवतार गौतम बुद्ध के मलफ़ूज़ात (Sayings) में आपका लक़ब "मैत्रिया" यानी "रहमतुल लिल आ़लमीन" (Mercy for all worlds) मौजूद है। (अन-नबीउल ख़ातिम - देहली, पेज 49 से पेज 53) गौतम बुद्ध के मलफ़ूज़ात में इन दो निशानियों का ज़िक्र किया गया है :

(1) आप पर एक किताब नाज़िल होगी उसकी ख़ूबी यह होगी जितनी पढ़ी जाएगी उतना ही सुनने को दिल चाहेगा।

(2) आप का दीन (Religion) इस तरह फैलेगा जिस तरह ओले और भट्ठे में आग फैलती है। (Abdul Haque : Muhammad in World Scriptures, vol 3, Lahore 1975)

इंजील बरना बास (Evangel of Bernabas) जो 325 ई.

तक इस्कन्दरिया के गिरजाघरों में मुस्तनद (Authentic) इन्जील समझी जाती थी उसमें कई पेजों पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्रे ख़ैर मौजूद है।

(इन्जील बरनाबास, पेज 49, 114, 115, 130, 191)

क़ुर्आने करीम में लिखा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी के बाद दूसरे धर्मों के धार्मिक गुरुओं ने अपनी किताबों से उन आयतों (Verses) और ख़बरों को छुपा दिया, निकाल दिया जिन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की आमद की ख़बर दी गई थी हालांकि आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले वह ख़ुद आपके वसीले से काफ़िरों पर फ़तेह व नुसरत (विजय) की दुआएं मांगा करते थे। (कश्फ़ुल इरफ़ान, पेज 324) इन सच्चाइयों का ज़िक्र क़ुर्आन की जिन आयतों में किया गया है उनके तफ़सीली हवाले पहले आ चुके हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में जो यहूदी और ईसाई मुसलमान हुए उन्होंने भी इन सच्चाइयों की पुष्टि की और तौरैत (Torah) और ज़बूर (Psalms) के जो राज़ मज़हबी रहनुमाओं ने छुपा लिए थे वह सब बता दिए। मुसलमान होने वाले उन लोगों में यह सहाबए किराम (Companions) थे – हज़रत काब अहबार, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरु बिन आस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम। यही वजह है कि उनके दिल में सच्चाई थी। जब उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को देखा तो फ़ौरन ईमान ले आए। लगभग 10 हिजरी नबवी मुताबिक़ 620 ई. में मक्का से कुछ दूर पहाड़ी आबादी ताइफ़ के लोगों को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जब इस्लाम पेश किया तो आपको पत्थर बरसा कर लहूलुहान कर दिया, आप ज़ख़्मों से चूर अंगूर के एक बाग़ में बैठ गए। यह बाग़ आपके बदतरीन दुश्मन रबीआ का था मगर उसके बेटों में अतबा और शेबा ने अपने ग़ुलाम अदास से कहा कि तशतरी में कुछ अंगूर रख कर उस मुसाफ़िर के पास ले जाओ।

अदास ने तशतरी में अंगूर आपके सामने रक्खे, आप बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर खाने लगे। यह नया कलमा सुन कर और नूरानी चेहरा देख कर वह उठ खड़ा हुआ झुक कर पांव को चूमा फिर हाथों को चूमा फिर पाक क़दमों को चूमने लगा। (ज़ियाउन्नबी, जिल्द 2, पेज 455)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नक़्श (छाप) ग़ैर मुस्लिमों के दिलों पर अंकित है अगरचे वह आपको नबी नहीं मानते। (अबुस सुरूर, मुहम्मद मसरूर अहमद, जाना पहचाना, कराची, 1999; नोट : इस किताब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शख़्सियत पर 10 हिन्दू स्कालरों के आर्टिकिल्स हैं, सबने आपकी अज़मत को तसलीम किया है)। मगर आपकी अज़मत की छाप उनके दिलों पर है। हिन्दोस्तान के मशहूर ग़ैर मुस्लिम शोअरा (कवि गण) सुरूर जहानाबादी, कैफ़ी देहलवी, हरिचन्द अख़्तर, जगन्नाथ आज़ाद, कुंवर महेन्द्र सिंह बेदी, फ़िराक़ गोरखपुरी, तिलोकचन्द महरूम वग़ैरह।

महरूम के यह नातिया अशआर मुलाहिज़ा हों :

किसने ज़र्रों को उठाया और सहरा कर दिया
किसने क़तरों को मिलाया और दरिया कर दिया
किसकी हिकमत ने यतीमों को किया दुर्रे यतीम
और ग़ुलामों को ज़माने भर का मौला कर दिया।
(डा. नूर मुहम्मद रब्बानी, कशफ़ुल इरफ़ान, पेज 324)

और इन्हीं के यह शेर भी देखें :

सलाम उस पर बनाया जिसने दीवानों को फ़र्ज़ाना
मए हिकमत का छलकाया जहां में जिसने पैमाना
बड़े छोटे में जिस ने उख़ूवत की बिना डाली
ज़माने से तमीज़े बन्द-ओ-आक़ा मिटा डाली
(डा. नूर मुहम्मद रब्बानी, कशफ़ुल इरफ़ान, पेज 325)

अलग़र्ज़ (In short) हर नबी ने अपनी-अपनी उम्मतों से

आपका ज़िक्र किया और यह ज़िक्र दुनिया में इतना फला फूला कि लोग आपको इस तरह जानने पहचानने लगे जिस तरह आपने बेटों को जानते पहचानते हैं। इसकी गवाही हमें क़ुर्आन से मिलती है जो दौरे जदीद (Modern age) में सबसे अहमतरीन माख़ज़ (Source) भी है – हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नामे नामी जो आस्मानों में 'अहमद' है और ज़मीन में 'मुहम्मद' सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लगभग दुनिया की तमाम आसमानी किताबों और सहीफ़ों में बयान किया जाता है जिनकी तादाद लगभग 104 है। आपका ज़िक्र ज़बूर में है, तौरैत में है, इन्जील में है, और क़ुर्आन में है। आपका ज़िक्र हिन्दोस्तान के वेदों में है, पुरानों में है, उपनिषदों में है जिसका तफ़सीली ज़िक्र आगे आता है। आसमानों में और ज़मीनों में है और तो और ख़ुद इन्सानी वजूद में है। जद्दा (सऊदी अरब) के एक अख़बार में लिखा है (रोज़नामा (दैनिक) अलबिलाद, सऊदी अरब, पहली शाबान, 1412 हिजरी) कि जब माडर्न इन्स्ट्रूमेन्ट्स से सांस की नली और फेफड़ों का फ़ोटो लिया गया तो सांस की नली में साफ़ लिखा हुआ नज़र आया "ला इलाहा इल्लल्लाह" और दाएं फेफड़े पर "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"। यह वह कलिमा है जो पहले इन्सान आदम अलैहिस्सलाम ने आंख खोल कर अर्श पर लिखा हुआ देखा। और इसी नाम के वसीले से उन्होंने दुआ मांगी वह क़बूल हुई। डाक्टर वेद प्रकाश उपाध्याय के क़ौल के मुताबिक़ हिन्दोस्तान के वेदों, उपनिषदों और पुरानों में साफ़-साफ़ नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मौजूद है। अठारह पुरानों में से एक पुरान में है :

"अरब देश में 7 वीं सदी में पैदा होंगे। उनका दीन आग और पानी की तरह सब तरफ़ फैल जाएगा। वह ख़ात्मुन्नबीईन होंगे, वह रहमतुल लिल आलमीन होंगे, पन्द्रह सौ बरस तक उनका दीन धूमधाम से चलता रहेगा।"

(माहनामा (Monthly) इस्तक़ामत, कानपुर, मुहम्मदे अरबी नम्बर)

और एक पुरान में लिखा है :

"मुहम्मद नाम होगा, आख़िरी ज़माने में तशरीफ़ लाएंगे, ख़ात्मुन्नबीईन होंगे, बादल सर पर साया करेगा, जिस्मे पाक का साया न होगा, मेराज से मुशर्रफ़ होंगे अपने लिए दुनिया के सिलसिले में कुछ न करेंगे, कम ख़ूराक होंगे, अल्लाह के हबीब होंगे।" (Ibid, p 77-79) अल्लामा मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन रज़वी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नामे नामी नबातात (वनस्पतियों) और आसमानों पर लिखा हुआ देखा गया। 454 हिजरी में ख़ुरासान (मेराजुन्नबी, कराची, पेज 28-29, अल्लामा ज़फ़रुद्दीन रज़वी) के पहाड़ों में एक गज़ लम्बे पत्थर पर नामे नामी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जगमग कर रहा था। 1921 ई. में पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के शहर टुन्डूसाईं में बैरी के पेड़ के पत्तों पर नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लिखा हुआ देखा गया। 1927 ई. में भारत के शहर जबलपुर और आसपास के दूसरे शहरों में आसमानों पर नूरानी क़लम से नामे नामी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लिखा हुआ देखा गया। 1930 ई. से पहले नई दिल्ली (देहली का पुराना नाम इन्द्रप्रस्थ है जिसका विस्तारपूर्वक हाल रामायण और महाभारत में भी है फिर यह उजड़ी और आबाद होती रही। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से एक हज़ार साल पहले राजा युधिष्ठिर ने इसको आबाद किया, यहां के रहने वालों ने इस का नाम दिल्ली रखा और मुसलमान इसको देहली कहने लगे - बशीरुद्दीन अहमद, वाक़ियाते दारुल हुकूमत देहली, छपी 1337 ई. देहली में, जिल्द 1, पेज 5) में संगे मरमर तराशा गया तो उस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नाम लिखा हुआ देखा गया, यह पत्थर आम ज़ियारत के लिए लाल क़िला, दिल्ली के म्यूज़ियम में रख दिया गया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम आसमानों और ज़मीनों में तो हैं ही, नवम्बर 1995 ई. में

मदीना शरीफ़ में सूरज डूबने के बाद आसमान की फ़ज़ाओं में यह मन्ज़र (दृश्य) लाखों इन्सानों ने देखा कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का गुम्बदे ख़ज़रा (हरा गुम्बद) है। यह गुम्बदे ख़ज़रा और मस्जिदे नबवी शरीफ़ सूर्यास्त के बाद आसमान की फ़ज़ाओं में जगमग। कर रहे थे, सात चांद चमक रहे थे, दो चांदों में गुम्बदे ख़ज़रा और मस्जिद के दो सफ़ेद गुम्बद नज़र आ रहे थे, मस्जिद शरीफ़ के बाक़ी मीनारे भी नज़र आ रहे थे, लगभग 6-7 घन्टे तक यही हसीन मन्ज़र नज़र आता रहा और सब हैरत से तकते रहे। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के नीचे एयर कन्डीशनिंग प्लांट की देख भाल के लिए मेरे दोस्त शमीम अहमद साहब तअीनात थे। यह चश्मदीद वाक़िया उन्होंने बयान किया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के निशाने क़दम और मूए मुबारक (मुबारक बाल) आज तक विभिन्न स्थानों पर महफ़ूज़ हैं चुनांचे एक क़दम मुबारक के निशान वाला पत्थर देहली में है और दो इस्तम्बोल (तुर्की) में हैं जिनको शाहाना आनबान के साथ महफ़ूज़ रखा गया है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मूए मुबारक जो आपने 10 हिजरी में हज्जतुल विदा (आख़िरी हज) के मौक़े पर जब आपने अपने सिर मुबारक के बाल उतरवाए तो यह बाल मुबारक आपकी मुक़द्दस बीवियों और सहाबा (Companions) में तक़सीम फ़रमाए, सबने सीने से लगा कर रक्खे। दुनिया के कई जगहों पर यह बाल अब तक महफ़ूज़ हैं। जो बाल मुबारक आपने अपनी मुहतरम बीवी हज़रत उम्मे सलमा रदी अल्लाहो तआ़ला अ़न्हा को इनायत फ़रमाया उनमें से एक पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के शहर रोहड़ी की एक यादगार शाही इमारत में अब तक महफ़ूज़ है। ख़ुद कराची में हमारे मुहल्ले में दो हज़रात के पास हैं और एक मूए मुबारक गुलबर्ग, कराची में मुहम्मद मक़सूद हुसैन नौशाही उवैसी के पास भी महफ़ूज़ है। इसी तरह सब कान्टीनेन्ट और दुनिया के दूसरे

शहरों में भी तबर्रुकात (Relics) महफ़ूज़ हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हर हैसियत से दुनिया में मुमताज़ (Distinginshed) हैं। इन्सानों में आपकी नज़ीर नहीं इसलिए ग़ैर मुस्लिम भी आप की सीरत (जीवनी) पर लिखना अपनी सआदत (सौभाग्य) समझते हैं। एक अंग्रेज़ सकालर मारगोलेविस ने लिखा है :

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सीरत निगारों की फ़ेहरिस्त में शुमार होना बड़ी सआदत की बात है।"

दौरे जदीद (आधुनिक युग) के एक राइटर माईकिल एच. हार्ट ने दुनिया की सौ चुनी हुई शख़्सियात का एक तक़ाबुली जायज़ा (Comparative Review) पेश किया है; उसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को पहले नम्बर पर रखा है। वह लिखता है :

"I Hare ranked these 100 persons in order of importance that is according to the total amount of influence that each of them had on human history and on the everyday lives of other human beings." (Michael H. Hart : The 100 A. Ranking of the (most) influencetial persons in the history, Newyork, 1978, p 26)

तर्जमा : मैंने इन एक सौ हज़रात को इन्सानी तारीख़ और दूसरे इन्सानों की ज़िन्दगी पर मजमूई तास्सुर की अहमियत के एतबार से दरजा बदरजा (Class by class) तरतीब दिया है।

He was the only man in History who was Supremely successful on the religious and secular levels. (Ibid, p 33)

तर्जमा : वह तारीख़ में एक ही इन्सान है जो दीनी और दुनियावी दोनों मैदानों में निहायत ही कामयाब है।

Today 13 centuries, after his death his influence is still powerfull and pervasive. (Ibid, p 33)

तर्जमा : आज उनके विसाल (Death) को तेरह सदियां गुज़र जाने के बावजूद उनका असर बहुत ताक़तवर और ग़ालिब (Domineering) है।

It is this unparalled combination of secular and religious influence which I feel entitles Muhammad to be considered the most influential single figure in human history. (Michael H. Hart : The 100 A. Ranking of the (most) influencetial persons in the history, Newyork, 1978, p 40)

तर्जमा : मेरे ख़्याल में दीनी और दुनियावी तासुर का यह बेमिसाल संगम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इसका मुस्तहिक़ क़रार देता है कि उनको इन्सानी तारीख़ का सब से ज़्यादा असर डालने वाला अकेला व यकता इन्सान तसव्वुर किया जाए

बोस्वर्थ स्मिथ (Bosworth Smith) ने सच लिखा है :

"तारीख़ में वह अकेली शख़्सियत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं जो क़ौम, सल्तनत और मज़हब के सही निगहबान हैं।"

हिन्दोस्तान के एक ब्राह्मण पण्डित स्कालर डाक्टर वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपने रिसर्च बुक "कालकी अवतार" में हिन्दोस्तान के सारे हिन्दुओं को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ मुतवज्जह (आकृष्ट) किया। यह ख़बर 1997 अख़बार "नवाए वक़्त" के ईशू 9 दिसम्बर में छपी है।

O

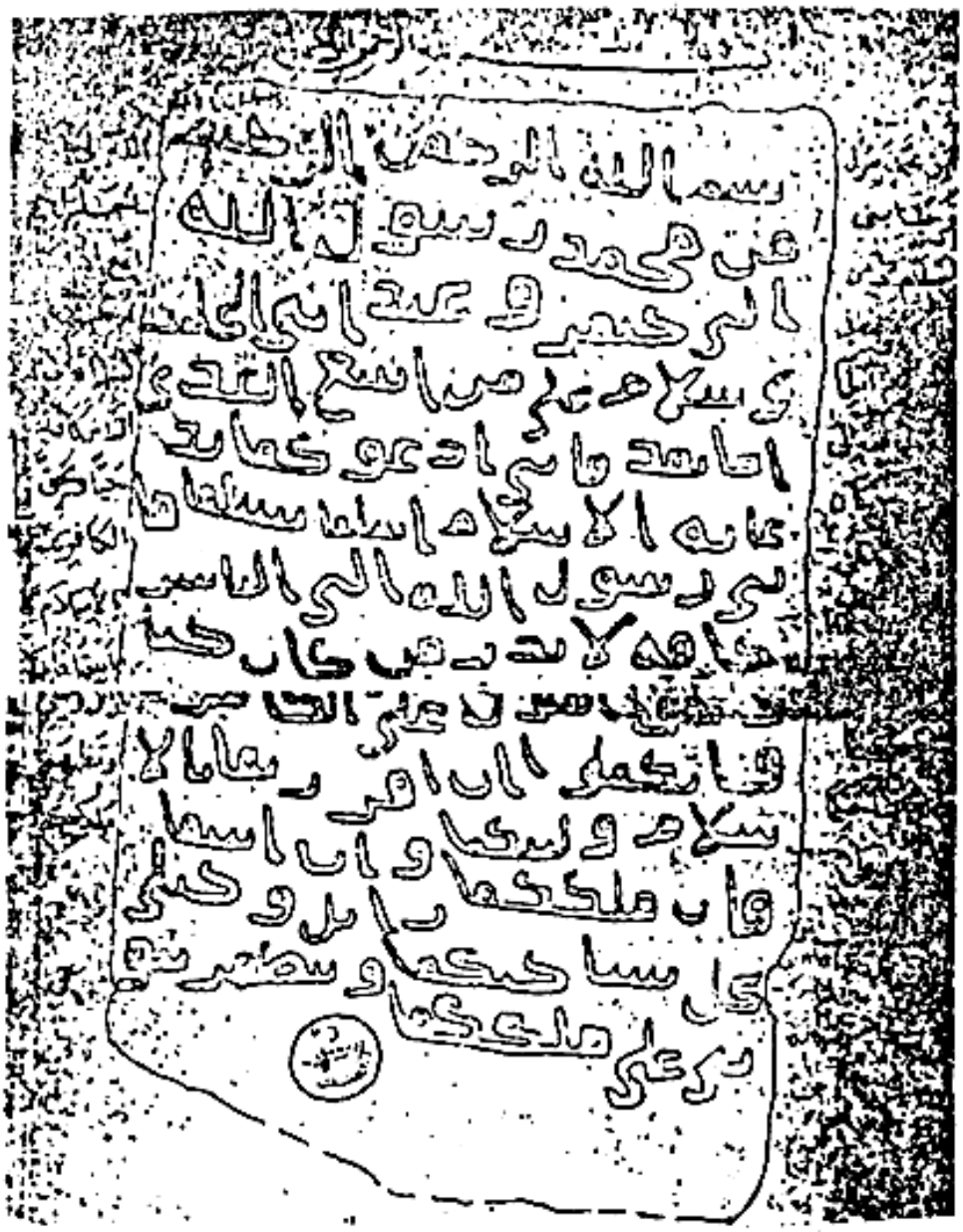

حضور صلی اللہ
علیہ وسلم
کا ایک نادر
مکتوب جس کا
ابھی حال
ہی میں
انکشاف
ہوا ہے۔

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का एक नादिर मकतूब (A Letter) जो अभी हाल ही में मिला है।

यहाँ मैं न कुछ बात राखूं

(यहां मैं आपकी तरफ़दारी में कुछ न कहूंगा)

वेद पुरान सत्त भत भाखूं

(जो वेद पुरान में लिखा है वह सच कहूंगा)

ब्रख सस दस सन्द्रम होई

(यानी बरस दस हज़ार तक रिसालत तमाम होगी)

तहके बाद न पाये कोई

(बाद को यह मर्तबा कोई नहीं पा सकता यानी रिसालत [Prophet Hood] ख़त्म होगी)

देस अरब मैं भ्रक्ता सुहाई

(यानी देस अरब में एक ख़ुशनुमा (सुहावना) सितारा होगा)

सुथल भूम गत सुनो खक राई

(अच्छी शान की ज़मीन होगी)

संभू समत ना कर होई

(अनहोनी बात (यानी मोअजिज़े – Miracles) उससे ज़ाहिर होंगे)

(वेद, पुरान, तर्जमा (अनुवाद) तुलसीदास, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और उनके चार ख़लीफ़ाओं (Caliphets) का ज़िक्र)

पांचवां बाब (Chapter 5)

दीने फ़ितरत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत (Annunciation) के बाद

जब से इन्सान इस धरती पर उतरा है दीने फ़ितरत उसी वक़्त से चला आ रहा है। यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से पहले भी था कि आप ही इसका नुक़्तए आग़ाज़ हैं (Start Point) हैं --- आपके ज़माने में भी था (आप ही ने इसको मुकम्मल किया) और आपके ज़माने के बाद भी है और क़ियामत तक रहेगा। दीने फ़ितरत की तस्दीक़ हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकों से भी होती है जिनका इतिहास लगभग 6 हज़ार साल पुराना है इसलिए पहले इन पुस्तकों के बारे में अ़र्ज़ किया जाता है फिर इन किताबों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुतअल्लिक़ पेशिनगोइयों का ज़िक्र किया जाएगा, उसके बाद आपके इब्तिदाई असरात (प्रारंभिक प्रभाव) का जायज़ा लिया जाएगा।

हिन्दुओं के यहां इल्हामी किताबों के अक़ाइद-ओ-अफ़कार (Faiths & Thoughts) (जिन का पीछे ज़िक्र किया जा चुका है) से अन्दाज़ा होता है कि इन किताबों के हामिलीन (Bearers) आर्या लोग हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अ़लैहिमुस्सलाम के ज़माने में आए और उन्होंने इन नबियों के सहीफ़ों (Revealed Books) से फ़ायदा उठाया (लाभान्वित हुए) मुमकिन है है उनमें मुसलमान मोवाहिदीन भी हों जिन्होंने तौहीद के नज़रिये (View points of monotheism) को यहां रूशसनास कराया और वह अम्बिया भी जो मुख़तलिफ़ ज़मानों में सब कान्टीनेन्ट में आते

रहे फिर ज़माना गुज़रने के साथ-साथ उनकी तालीमात ओझल होती गईं --- हिन्दुओं के मज़हबी लिटरेचर के बारे में कोई बात क़तई तौर पर नहीं कही जा सकती कि सारा लिटरेचर किस तरह वजूद में आया, किसने तसनीफ़ किया (लिखा), कब तसनीफ़ किया --- हिन्दुओं का सारा मज़हबी लिटरेचर गीतों के मजमूए पर शामिल है। यह मजमुए (कलेक्शन) चार हैं जिनको वेद कहा जाता है। "वेद" का अर्थ संस्कृत में "इल्म" (विद्या) है। हज़ारों बरस पहले जिन विद्वानों ने यह गीत गाए उन्हें "ऋषि" कहा जाता है। हिन्दू अक़ीदे के मुताबिक़ उन्होंने ब्रह्मा से यह इल्हाम (Revealation) हासिल किए। हिन्दुओं का दावा है कि वेद इल्हामी किताब है जैसा कि अर्ज़ किया गया। वेद के लफ़्ज़ी मानी (Literal meaning) इल्म यानी "इल्मे ग़ैब" (Unseen Knowledge)। अबू रैहान अलबैरूनी ने किताबुल हिन्द में लिखा है :

"वेद के मानी हैं उस चीज़ का जान लेना जो पहले से मालूम न हो।"

हिन्दू अक़ीदे के मुताबिक़ (अनुसार) वेद अल्लाह तआ़ला का ज़ाती (निजी) इल्म है। वह वेदों को सुनाया हुआ या सुना जाने वाला इल्हामी इल्म मानते हैं जिसमें किसी लफ़्ज़ की तब्दीली जायज़ नहीं --- यह वही इल्म है जो हिन्दू मज़हब की बुनियाद है --- जैसा कि अर्ज़ किया गया हिन्दू अक़ीदे के मुताबिक़ वेद कलामे इलाही है --- हिन्दू वेदों को आदि ग्रन्थ और आदि ज्ञान मानते हैं यानी सबसे पहले सहीफ़े और सबसे पहले बिखरे हुए पन्ने लेकिन डाक्टर राधाकृष्ण के मुताबिक़ वेद इन्सानी तख़लीक़ (इन्सान की पैदाइश) की सबसे पुरानी दस्तावेज़ है। चार वेद ऋगवेद, यजुरवेद, सामवेद, अथर्ववेद --- पहले तीनों वेद लफ़्ज़ और मानी (अर्थ - Sense) के लिहाज़ से यकसानियत रखते हैं। इनमें ऋगवेद सबसे आला (प्रधान) है --- आर्याई क़ौमें जब पाक व हिन्द (Subcontinent) में

दाख़िल हुई तो अपने साथ अक़ाइद-ओ-अफ़कार भी लाई। इनकी तरतीब-ओ-तसनीफ़ और तहरीर (संकलन और लेखन) के बीच वक़्त का बड़ा फ़ासिला रहा होगा। बहर हाल कम से कम पन्द्रह सौ ईसा पूर्व इनका रिवाज हो चुका था। कुछ स्कालरों ने दो हज़ार पांच सौ से 6 हज़ार ईसा पूर्व तक इनका ज़माना बताया। सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता के ख़्याल में ऋगवेद जो चारों वेदों में सबसे ज़्यादा अहम है न तो किसी एक दिमाग़ की उपज है न किसी युग से इसका सम्बन्ध है बल्कि मुख़तलिफ़ ज़मानों में मुख़तलिफ़ स्कालरों ने इनको माना है लेकिन इसका चांस कम है कि हिन्दोस्तान में आर्यों के आने से पहले यह तहरीर में महफ़ूज़ कर लिए गए हों। वह एक के पास से दूसरे के पास बे-लिखे गुप्त रूप से आते गए और फिर तहरीर (लिखित रूप) में आए।

{(i) Surendrnath Das Gupta : A history of Indian Philosophy, Vol 1, p 14-15

(ii) Dr. Radha Krishan : Indian Philosophy, 1966 ed. 8th vol. 1, p 63-64

Ref : S. Anwar Ali : Religion the Science of life, Karachi, 1974, p 83-84)

हमारे ख़्याल में डाक्टर राधाकृष्ण और सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता का यह ख़्याल रिसर्च के क़ाबिल है कि वह वेद इन्सानी दिमाग़ की उपज हैं। इसमें शक नहीं कि ज़माना गुज़रने के साथ-साथ इन्सानी दिमाग़ ने इसमें मिलावट की होगी। मुमकिन है इसमें इल्हामी कलाम भी हो। अगर ऐसा न होता तो इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की साफ़-साफ़ पेशिनगाईयां नहीं मिलतीं। चन्द साल हुए पण्डित वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी किताब में जो वेदों की रोशनी में लिखी गई है यह ज़ाहिर किया है कि हिन्दू एक लम्बे समय से जिस आख़िरी नबी का इन्तज़ार कर रहे हैं वह हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही हैं। यह ख़बर मुख़तलिफ़ अख़बारों में शाया (प्रकाशित) हुई है। (अख़बार "उम्मत", कराची, 25 अप्रेल 1998 ई.; अख़बार "नवाए वक़्त", मुल्तान, 9 दिसम्बर 1997 ई.)। हमारे सामने अख़बार "उम्मत" कराची इशू 25 अप्रेल 1998 ई. है। हम यह हूबहू नक़ल करते हैं। :

"कालकी अवतार का ज़हूर हो चुका है (ज़ाहिर हो चुके हैं)। हिन्दू जाति को अब उनका इन्तज़ार नहीं करना चाहिए और मुक़द्दस किताब (Holy Book) वेद के मुताबिक़ कालकी अवतार (हादीए आलम) को तसलीम करते हुए इस्लाम क़बूल कर लेना चाहिए। इन ख़्यालात का इज़हार संस्कृत के आलिम (स्कालर) और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में अहम ओहदे पर मुतमक्किन (महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त) वेद प्रकाश ने अपनी ताज़ा तहक़ीक़ी किताब (Research Book) में किया है। पण्डित वेद प्रकाश भारत के पहले दस बड़े रहनुमाओं में शामिल हैं। संस्कृत के दीगर उलमा ने भी पण्डित वेद प्रकाश के तहक़ीक़ी नज़रिए की ताईद की है। पण्डित वेद प्रकाश ने अपनी किताब कालकी अवतार में अपने दावे की हिमायत में हिन्दुओं की मुक़द्दस किताब वेद में लिखा है कि भगवान का आख़िरी पैग़म्बर (कालकी अवतार) होगा जो पूरी दुनिया की रहनुमाई फ़रमाएगा। हिन्दूइज़्म की पेशिनगोई के मुताबिक़ कालकी अवतार एक बड़े जज़ीरे (दीप) में जन्म लेगा। दर हक़ीक़त यह जज़ीरा अरब है। वेद में कालकी अवतार के वालिद का नाम विष्णुभक्त दर्ज है जबकि मां का नाम सोमानब है। संस्कृत के मुताबिक़ विष्णु, अल्लाह और भक्त ग़ुलाम को कहते हैं इस तरह विष्णु भक्त का अरबी तर्जमा "अब्दुल्लाह" बनता है। सोमानब संस्कृत मे अमन व आशती को कहते हैं और अरबी में इसका मुतरादिफ़ (Synonymous – पर्यायवाची) आमिना है। कालकी औतार के मुतअल्लिक़ वेद में मज़ीद लिखा है कि भगवान अपने ख़स पैग़ाम रसा के ज़रिये इन्हें एक नमाज़ में इल्म सिखाएंगे। यह बात

हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर सादिक़ आती है। हिन्दू मज़हब की दीगर मज़हबी किताबों में लिखा है कि कालकी अवतार घुड़सवारी, तीरअन्दाज़ी और तेग़ज़नी (तलवार बाज़ी) में माहिर होगा। पण्डित वेद प्रकाश ने अपनी किताब मे लिखा है कि इस जानिब ख़ूसूसी तवज्जो (ख़ास ध्यान) देने की ज़रूरत है क्योंकि घोड़ों, तीरों और तलवारों का दौर अब गुज़र चुका। इन हालात में इन हथियारों से मुसल्लह (लैस - Armed) अवतार का इन्तज़ार ग़ैर दानिश मन्दाना इक़दाम होगा। पण्डित वेद प्रकाश लिखता है कि कालकी औतार दर हक़ीक़त हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की जानिब (तरफ़) वाज़ेह (साफ़) इशारा है जिसे अल्लाह ने आसमानी किताब क़ुर्आन देकर पूरी काइनात (Universe) के लिए रहनुमा बना कर भेजा। यहां यह अम्र (Matter) क़ाबिले ज़िक्र है कि यह किताब एक मारूफ़ (प्रसिद्ध) पण्डित ने लिखी है जो कि संस्कृत का मुमताज़ आलिम (Distinguished Scholar) और एक अहम यूनीवर्सिटी में आला मनसब पर फ़ाइज़ (Holds a high post) है और उसकी ताईद भी आठ अहम पण्डितों ने की है।

वेदों में हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़िक्र अज़कार से पहले ही यहां के अहले इल्म और राजा महाराजा आश्ना थे इसलिए जब वह दीने फ़ितरत जो यहां बहुत पहले आया था तो आश्ना लोगों (जानने वालों) ने उसका भरपूर स्वागत किया --- उसकी निशाते सानिया (जागृति) का दौर वह है जब हज़रत मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर क़ुर्आन नाज़िल हो रहा था जिसकी तसदीक़ हदीसों से और सिन्ध के मशहूर इतिहास चचनामे से होती है --- हिन्दोस्तान के मशहूर हिस्टोरियान डा. ताराचन्द ने लिखा है कि 8 वीं सदी ईसवी मं सब कान्टीनेन्ट में एक हलचल मची थी। हिन्दू मत और जैन मत एक दूसरे से उलझे हुए थे। (बुद्धमत और जैन

मत में कुर्बानी ख़ास कर गाय की कुर्बानी की कोई कल्पना नहीं थी। चूंकि सब कान्टीनेन्ट में एक लम्बे समय तक बुद्ध मत की हुकूमत रही इसलिए आमतौर से गाय की कुर्बानी से नफ़रत की जाने लगी और यह नफ़रत हिन्दू मत के मानने वालों मे भी आ गई जो बुद्ध मत की हुकूमत से पहले गाय की कुर्बानी के क़ायल भी थे और कुर्बानी करते भी थे ख़ास कर गाय की कुर्बानी। हिन्दोस्तानी मज़हबों की इस आपसी खींचतान और इस्लाम के आने का ज़िक्र करते हुए डा. ताराचन्द लिखते हैं :

"ऐसे मौक़ों पर इस्लाम एक सीधे-साधे ज़ाब्तए ईमान (ईमान का क़ानून); स्पष्ट व स्थापित अक़ाइद व आदात और सामाजिक संगठन के जरूरी नज़रियों के साथ जलवागर (ज़ाहिर) हुआ।" (तमुद्दने हिन्द पर इस्लामी असरात, लाहौर, 1964, पेज 60)

7 वीं सदी ईसवी में हिन्दोस्तान के राजा ने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था जिसको चांद के दो टुकड़े हो जाने वाले मुअजिज़े (Miracle) से जोड़ा जाता है जिसका ज़िक्र आगे आता है। राजा के इस्लाम लाने से बहुत पहले सिंध के ब्राह्मण राजा दाहिर के बेटे जयसिंह ने भी इस्लाम कबूल कर लिया था क्योंकि जैसा कि अर्ज़ किया गया इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़िक्र हिन्दुओं की मज़हबी किताबों मे मौजूद था। क़ुर्आन में ग़ैर मुस्लिमों के ईमान लाने को इनशिराहे सदर (With an open mind) से ताबीर किया है। यानी जिस ग़ैर मुस्लिम का दिल अल्लाह खोल देता है तो उस पर यह सच्चाई खुल जाती है कि जब से दुनिया क़ायम हुई है, जब से इन्सान इस धरती पर आया है सच्चे इन्सानों का मज़हब इस्लाम ही रहा है। ज़माना गुज़रने के साथ-साथ कभी छुपता रहा कभी ज़ाहिर होता रहा और आख़िर में ज़ाहिर हो कर रहा। अल्लाह जिस इन्सान को हिदायत (Guidance) देना चाहता है हिदायत के लिए उसका सीना खोल देता है।

(क़ुर्आन : सूरा अनआम, आयत 125)

चुनांचे इस मनोवैज्ञानिक सत्य को क़ुर्आन ने यूं बयान फ़रमाया है :

तर्जमा : "और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है।" (Ibid)

और दूसरी जगह यूं फ़रमाया :

तर्जमा : "तो वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से राह पर है।"

(क़ुर्आन : सूरा जुमरः आयत न. 22)

सबकान्टीनेन्ट के मशहूर फ़िलास्फ़र डा. इक़बाल ने वही हवाले से बड़ी दिल लगती बात कही है :

ख़ूब-ओ-नाख़ूब अमल की हो गिरह वा क्यों कर
गर हयात आप न हो शारहे असरारे हयात

पीछे शक़्क़ुल क़मर (चांद के दो टुकड़े होने) के हवाले से राजा के इस्लाम लोने का ज़िक्र किया गया है यहां कुछ तफ़सील (In Details) से इस वाक़िया को बयान किया जाता है। (वाक़िया शक़्क़ुल क़मर सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, जामे तिर्मिज़ी, मुस्नदे अहमद बिन हम्बल वग़ैरह में तफ़सील से मौजूद है। वाक़िया यह है कि मक्का के मुशरिकों में वलीद बिन मुग़ीरा, अबू जहल, आस बिन वाइल, असवद बिन मुत्तलिब, नज़र बिन हारिस ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से कहा कि अगर आप नबूवत के दावे में सच्चे हैं तो चांद को दो टुकड़े में चीर दीजिए। आप ने दुआ की और उंगली का इशारा किया चांद दो टुकड़े हो गया। आपने फ़रमाया, गवाह हो जाओ मगर जवाब यही मिला यह तो पुराना जादू है। यह वाक़िया शुरू रात में हुआ होगा क्योंकि उस ज़माने में यह लोग जल्दी सोते थे और जल्दी उठते थे। अगर मान लिया जाए कि यह वाक़िया रात को इशा की नमाज़ के बाद हुआ होगा तो हिन्दोस्तान में कहीं 10, 11 बजे होंगे इसलिए यह मुअजिज़ा सिर्फ़ उन इलाक़ों में देखा गया जहां रात थी, दूसरे देशों में देखने का

सवाल ही पैदा नहीं होता। एक रिवायत के मुताबिक़ शक़्क़ुल क़मर का मुअजिज़ा 622 ई. में पेश आया (बशारात, पेज 13)

ऐलाने नबूवत के बाद हिजरत (Migration) से पहले (617 ई. या 622 ई.) में शक़्क़ुल क़मर की घटना हुई जिसका क़ुर्आन में इस तरह ज़िक्र है :

तर्जमा : "पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते हैं और कहते हैं यह तो जादू है चला आता है।" (क़ुर्आन : सूरा क़मर, आयत 1.2)

शक़्क़ुल क़मर के मुअजिज़े की तसदीक़ मुसाफ़िरों ने भी की है और सहाबा ने भी की है जैसे हज़रत अली, हज़रत अनस बिन मालिक, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत हुज़ैफ़ा, हज़रत जबीर बिन मुतइम, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम।

इतिहास से मालूम होता है कि हिन्दोस्तान के राजा ने भी चांद को दो टुकड़े होते देखा।

(पीर करम शाह : ज़ियाउन्नबी, जिल्द 2, पेज 473)

हज़रत उस्मान ग़नी के पीरियड में हज़रत मुग़ीरा बिन शाबा रदीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब हिन्दोस्तान आए और यहां के कालीकट शहर पहुंचे तो यहां के बादशाह ने उनके आने पर शक़्क़ुल क़मर के मुअजिज़े की ख़बर सुनी जिसको बादशाह और तमाम शहरियों ने देखा था। इस वाक़िए से मुतअल्लिक़ जब हज़रत मुग़ीरा से तफ़सील सुनी तो उसे हरफ़ ब हरफ़ सच पाया चुनान्चे यह बादशाह जिसका नाम शायद ज़मोरन था कालीकट के तमाम शहरियों के साथ मुसलमाना हो गया।

(यासीन मिसबाही, सवादे आज़म, लाहौर, 1997, पेज 8)

सय्यद सुलैमान नदवी ने भी संस्कृत की एक पुरानी किताब के हवाले से लिखा है कि राजा ने अपनी आंखों से चांद के दो टुकड़े होते हुए देखा।

(पीर करम शाह : ज़ियाउन्नबी, लाहौर, जिल्द 2, पेज 474)

डा. ताराचन्द ने भी अपनी किताब में राजा के मुसलमान होने का इस तरह ज़िक्र किया है :

"मज़हब की तब्दीली के बाद राजा मालाबार से अरब रवाना हो गया और शहर के मुक़ाम पर उतरा जहां 4 साल बाद उसका इन्तक़ाल हो गया।" (डा. ताराचन्द तमद्दुने हिन्द पर इस्लामी असरात, लाहौर, 1964, पेज 6)

यही डा. ताराचन्द फिर आगे चलकर लिखते हैं :

"राजा के मज़हब की तब्दीली (धर्म परिवर्तन) ने लोगों के दिमाग़ पर गहरा असर डाला होगा। मालाबार में इस वाक़िए की याद अब तक ताज़ा रखी जाती है।" (Ibid, p 6)

छटा बाब (Chapter 6)

दीने फ़ितरत और क़ुआने करीम

इस्लाम की बुनियाद क़ुर्आन पर है और उसके शारेह व मुफ़स्सिर (Commentator and Exegesist) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हैं। क़ुर्आने करीम के बारे में मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सब मुत्तफ़िक़ (एक मत) नज़र आते हैं। सिख धर्म के बानी गुरू नानक का कहना है :

"हमने तौरात, ज़बूर, इन्जील और वेदों का ब-ग़ौर मुतआला (गहरा अध्ययन) किया लेकिन तमाम दुनिया के लिए मुकम्मल ज़ाब्तए हयात (Complete Code of Life) क़ुर्आन ही है।" (जनम सख़ी भाई बाला, पेज 47, लाइन 4 (अनवर अली, 157))

दूसरी जगह वह दावत देता है :

"उस पर ईमान लाओ और उसकी पैरवी करो।"

(गुरूवंजी, सख़ी कालान भाई बाला, पेज 222)

बहुत से ग़ैर मुस्लिमों ने क़ुर्आने करीम के बारे में निहायत ही पाज़ीटिव ख़्याल ज़ाहिर किया है। यह सब कुछ अक़्ल के उस दौर में हुआ न कि जज़बातियत के इस दौर में जब अक़्ल और दानाई की बात जुर्म समझी जाती है। उन ग़ैर मुस्लिमों ने क़ुर्आने करीम के बारे में हैरत अंगेज़ ख़्यालात का इज़हार किया। (जार्ज सेल, जे. एम. राडवेल, सर हमिल्टन गिब)

क़ुर्आने करीम के एक सौ से ज़्यादा दुनिया की ज़बानों में तर्जमे (अनुवाद) हो चुके हैं। यह हक़ीक़त इस बात की गवाही दे रही है कि क़ुर्आने करीम की दुनिया की अहम किताब समझा गया। यह सबसे ज़्यादा छापी जाती है, सब से ज़्यादा पढ़ी जाती

है (अपनी अस्ल अरबी ज़बान में), सब से ज़्यादा समझी जाती है। यूं तो 7 वीं सदी ईसवी में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में आप के सहाबी हज़रत सलमान फ़ारसी रदीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सूरए फ़ातिहा का फ़ारसी ज़बान में तर्जमा करके तर्जमों की शुरूआत कर दी थी। (मुहम्मद मसऊद अहमद, डाक्टर! उर्दू में क़ुर्आनी तराजिम व तफ़ासीर, 1970 ई., हैदराबाद, सिन्ध, ग़ैर मतबुआ 169, 172, पी. एच.डी. थेसिस, हैदराबाद, सिन्ध यूनिवर्सिटी)

मगर 12 वीं सदी ईसवी से क़ुर्आने करीम के बाक़ायदा तर्जमे शुरू हुए।

क़ुर्आने करीम इल्म-ओ-दानिश का समुन्दर है, हमने इस समुन्दर में ग़ोता ही नहीं लगाया। डाक्टर जार्ज विलियम ड्रेपर लिखते हैं :

"यह आम ख़्याल था कि मज़हब और इल्म की समाई एक इक़्लीम (देश) में नहीं हो सकती, इस्लाम ने इस झूटे ख़्याल को रद्द करे हक़ीक़त का चेहरा दिखाया। यह उस दरिया दिली का नतीजा है जो मुसलमानों ने दूसरे मज़हबों और क़ौमों के साथ रक्खी। (डाक्टर जान विलियम ड्रेपर : मअ़र्कए मज़हब व साइन्स (तर्जमा उर्दू ज़फ़र अली ख़ाँ) लाहौर, 1922 ई.)

अल्लाह ने इन्सान को बनाया, हिदायत और तालीम के लिए नबियों को भेजा और फ़रिश्तों के ज़रिए इल्म उतारा, हक़ीक़त यह है कि अस्ल इल्म यही है --- अल्लाह ने पानी उतारा, हम पानी पीते हैं, अल्लाह ने लोहा उतारा हम इसी .लोहे के ज़रिए हैरान कुन (अश्चर्य जनक) तरक़्क़ियां कर रहे हैं। जिस अल्लाह ने पानी उतारा, रोज़ी उतारी, लोहा उतारा, उसी ने इल्म भी उतारा बल्कि इल्म का सरचश्मा (स्रोत) उतारा और यह एलान फ़रमाया :

तर्जमा : "और हमने तुम पर यह क़ुर्आन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है और हिदायत और रहमत और बशारत मुसलमानों को।" (सूरा नहल, आयत न. 89)

लेकिन अफ़सोस! मज़हबी तास्सुब की वजह से हमने इल्म-ओ-दानिश के इस सरचश्मे से मुंह मोड़ लिया और एक बड़ी दौलत से महरूम हो गए। दानाई और हिकमत की दुनिया में क़ुर्आन से ज़्यादा सच्ची और खरी किताब कोई नहीं।

अचंभे की बात यह है कि डेढ़ हज़ार बरस की लम्बी मुद्दत में क़ुर्आन में एक हरफ़ (अक्षर) या एक नुक़्ते की भी कमी बेशी नहीं हुई।

दुनिया के अक्सर म्यूज़ियमों में क़ुर्आन के पुराने नुस्ख़े (Edition) मौजूद हैं। जो स्कालर या रिसर्चर इन नुस्ख़ों की कम्प्रेटिव स्टडी करना चाहें वह कर सकता है और आख़िर इसी नतीजे पर पहुंचेगा जिस नतीजे पर हम पहुंचे हैं। अस्ल में इस्लामी अक़ीदे के मुताबिक़ (अनुसार) क़ुर्आन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुद अल्लाह ने ली है चुनान्चे इरशाद होता है :

तर्जमा : "बेशक हमने उतारा है यह क़ुर्आन और बेशक हम ख़ुद इसके निगहबान हैं।"

(क़ुर्आने करीम : सूरा हिज्र, आयत न. 9)

सच्ची बात यह है कि क़ुदरत वह चीज़ें ज़िन्दा रखती है जिनकी इन्सान को ज़रूरत होती है और जिस की ज़रूरत नहीं होती वह मिटा दी जाती हैं। क़ुर्आने करीम और सीरते रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (Biography of the Prophet) का डेढ़ हज़ार बरस तक महफ़ूज़ रहना ख़ुद इसकी गवाही दे रहा है कि इन्सान को इसकी ज़रूरत है अगर ज़रूरत न होती तो दूसरी किताब की तरह आज क़ुर्आने करीम भी हमारे सामने न होता और सीरतों की तरह आज सीरते रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम भी हमारे सामने न होती। क़ुर्आने करीम किताबी शक्ल में तो महफ़ूज़ है ही लेकिन क़ुर्आने करीम के हज़ारों नहीं लाखों हाफ़िज़ मिल जाएंगे बल्कि तारीख़ ने यह वाक़ियात नोट किए हैं कि कोई-कोई बच्चे मां के पेट में क़ुर्आने करीम अपने सीनों में लिए हुए पैदा हुए। ऐसा ही एक

बच्चा देहली में अपने बाप की गोद में देखा गया --- यह हक़ाइक़ माहिरे नफ़सियात (Psychologist) के लिए एक दिलचस्प अध्ययन की हैसियत रखते हैं।

फ़्रेन्च स्कालर मोरिस बोकाए ने अपनी किताब में मज़हबी किताबों और सहीफ़ों के कम्परेटिव स्टडी के जायज़े के बाद लिखा है :

"ईसाइयत और इस्लाम के सहाइफ़ (Revealed Books) में एक बुनियादी चीज़ जो फ़र्क़ की हैसियत रखती है वह यह सच है कि इसाईयत में कोई मतन (Text) ऐसा नहीं जो अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई हो और जिसको लिखा गया हो मगर इस्लाम में क़ुर्आन एक ऐसी चीज़ है जो इस शर्त को पूरा करती है।" (मोरिस बोकाए : बाइबिल, क़ुर्आन और साइंस (तर्जमा : सनाउल हक़ सिद्दीक़ी) कराची 1993 ई. पेज 15)

1914 ई. में क़ुर्आने कीरम के रसमुल ख़त (लिपि) से अनजान होने की वजह से डाक्टर मंगाना ने कुछ एतराज़ उठाए थे जिनका खरा जवाब शिब्ली नोमानी ने दिया था --- 1935 ई. में ईसाई धर्म के कुछ आलिमों ने ख़ुद तौरैत और इन्जील में शक ज़ाहिर किया और इनमें कोई-कोई तो इस हद तक आगे बढ़े कि ख़ुद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शख़्सियत को मुतनाज़े (Disputed) क़रार दे दिया।"
(प्रोफ़ेसर नवाब अली : तारीख़े समावी, कराची, 1993, पेज 117)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शख़्सियत तो दूर की बात है अगर तारीख़ी बुनियादों पर नाम की तसदीक़ (पुष्टि) करना चाहें तो तारीख़ी एतबार से क़ुर्आन के सिवा कोई क़ाबिले एतमाद (विश्वसनीय) हवाला नज़र नहीं आता। अगर क़ुर्आन को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए तो फिर रिसर्चर्स के लिए नबियों के नाम भी साबित करना मुमकिन न हो। तारीख़, तारीख़ है और अक़ीदत, अक़ीदत है। तारीख़ में अक़ीदत की कोई गुन्जाइश नहीं क्योंकि तारीख़ दलाइल (Arguement) और शावाहिद (गवाही) मांगती है।

और क़ुर्आन से बढ़ कर और कौन सी शहादत होगी --- एक बात सोचने के क़ाबिल है कि तौरैत और इन्जील में हज़रत सुलैमान, हज़रत लूत, हज़रत दाऊद और हज़रत याक़ूब अलैहिमुस्सलाम पर वह इल्ज़ाम धरे हैं कि अक़्ल और हया शरमाने लगे। (अहदनामा क़दीम, किताबे सलातीन, चैप्टर ।। पैदाइश, चैप्टर 19, आयत 30) यह इस बात का सबूत है कि तौरैत और इन्जील में अब जो कुछ है सबका सब वह अल्लाह का नाज़िल किया हुआ नहीं है। तौरैत और इन्जील के मुक़ाबले में क़ुर्आने करीम में इन नबियों की तारीफ़ और ख़ूबियां व बड़ाइयां बयान की गई हैं (क़ुर्आन की यह सूरतें और आयतें देखिए सूरए सबा, आयत 10; सूरए अम्बिया, आयत 74; सूरए शोअरा, आयत 160; सूरए सफ़ आयत 133 वग़ैरह वग़ैरह) जो इस बात का सबूत है कि क़ुर्आन अल्लाह की किताब है क्योंकि यह कैसे मुमकिन है कि अल्लाह तआ़ला अपने प्यारों के लिए ऐसी बातें कहें जो शर्मनाक हों।

देहली के एक मशहूर आलिम अब्दुल हक़ हक़्क़ानी ने अपनी किताब "अलबयान" में तौरैत, इन्जील, ज़बूर, वेद, ज़न्द अविस्ता वग़ैरह का कम्परेटिव रिविव पेश किया है और लिखा है :

"तमाम मुक़द्दस किताबों में सिर्फ़ क़ुर्आन मजीद ऐसी किताब है जो अक़्ली और तारीख़ी नुक़्तए नज़र (दृष्टिकोण) से सच्ची किताब है।" (अब्दुल हक़ हक़्क़ानी : अलबयान, पेज 68, 686, 734, 736, 737, 741)

थामस कारलाइल क़ुर्आन के बारे में लिखता है :

"It is admitted everywhere as a standard of all Law practice. Therefore 12 hundred years has the voice of this Book at all moments through the ears and the hearts of so many men. We hear MUHAMMADANS Doctors that kept Soundings had read it 70,000 times. Is not a mira-

cle." (Thomas Carlyle : On heroes, Hero worship and heroic in history, London, 1963, p 85)

तर्जमा : "इस किताब को क़ानून और अमल के एक स्टैण्डर्ड की हैसियत से हर जगह तसलीम किया जाता है। 1200 बरस से इसकी आवाज़ कानों और दिलों से गुज़र रही है, हम सुनते हैं कि ऐसे मुसलमान भी हैं जिन्होंने इसको सत्तर हज़ार बार पढ़ा है। क्या यह मुआजिज़ा नहीं है।"

इस जगह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारे में गौतम बुद्ध की वह पेशिनगोई याद आ रही है जिसमें उसने कहा था :

"आप पर एक ऐसी किताब नाज़िल होगी जो बार-बार पढ़ी जाएगी और जितनी बार पढ़ी जाएगी उतना सुनने को दिल चाहेगा।" हस्पानिया (Spain) के मशहूर सूफ़ी और आरिफ़ मुहीउद्दीन इब्ने अरबी ने यह दावा किया है कि उन्होंने हज़ारों उलूम (विद्याएं) क़ुर्आन से निकाले। मशहूर सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदीयल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : **अरबी से तर्जमा** : "जो शख़्स अगलों और पिछलों का इल्म हासिल करना चाहे वह क़ुर्आन का दामन थाम ले।" (अलइत्तफ़ाक़ फ़ी उलूमिल क़ुर्आन (राइटर - सूयूती), जिल्द 2, पेज 236)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिन पर क़ुर्आन उतरा अपने सहाबा से ख़ुद फ़रमाया :

"जो कुछ पूछना है मुझसे पूछ लो ख़ुदा की क़सम जो मुझसे पूछोगे मैं बताऊँगा।" (सही बुख़ारी, क़दीमी कुतुबख़ाना, कराची, जिल्द 1, पेज 19-20)

एक और हदीस में आप ने फ़रमाया :

"मैं उन चीज़ों से सब से ज़्यादा वाक़िफ़ (परिचित) हूं जिनसे बचना चाहिए।" (इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज क़ुशैरी, मुस्लिम शरीफ़, कराची, जिल्द 1, पेज 19-20)

हदीस की किताबों में बहुत सी ऐसी हदीसें हैं जिनसे मालूम

होता है कि आप स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा किराम के सामने इल्म-ओ-दानिश (विद्या, ज्ञान) के दरिया बहाए और मुस्तक़बिल (भविष्य) में आने वाले हालात और वाक़ियात की ख़बर दी।" (डिटेल्स के लिए देखें : मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिनिस्सिद्दीक़ अलग़मारी उल हसनी : मुताबिक़ल इख़्तराआ-तुलअसरीया लेमा अरब्बर बे सय्यदुल बरीया, मुफ़्ती अहमद मियां बरकाती ने इसका उर्दू ट्रांसलेशन "इस्लाम और असरी ईजादात" के नाम से किया, लाहौर में छपी 1980 ई. में)

क़ुर्आन को हम दौरे जदीद (आधुनिक युग) के लिए इल्म-ओ-दानिश की मशाल क़रार दे सकते हैं। डाक्टर जान ड्रेपर ने लिखा है :

"उलूमे जदीदा (आधुनिक ज्ञान) का दौर 16 वीं सदी ईसवी से शुरू होता है। इस्लाम छटी सदी ई. में ज़ाहिर हुआ। यह हज़ार साल का ज़माना उन लगातार कोशिशों से भरा हुआ है जो मुसलमानों ने उलूमे क़दीमा (पुरातत्व ज्ञान) के इहया (जागृति) और उलूमे मुरव्विजा (Current Knowledge) की बक़ा (Existence) के लिए पूरी इस्लामी दुनिया में कीं।" (डाक्टर जान विलियम ड्रेपर : मअर्कए मज़हब और साइंस (Conflict Between Religion & Science) उर्दू तर्जमा मौलवी ज़फ़र .अली ख़ान ने किया, पेज 23, छपा लाहौर में 1992 ई. में)

जर्मन फ़िलास्फ़र गोइटे क़ुर्आन के बारे में लिखता है :

"This book (Holy Quran) will go on exercising through all the ages."

यानी "हर ज़माने में क़ुर्आन पर अमल होता रहेगा।" (Social Contact Everyman Library, Cole's edition, p 117)

क़ुर्आन के मतन (Text) का महफ़ूज़ होना अपनी जगह मुसल्लम है मगर सबसे अहम बात यह है कि जो हक़ाइक़ इसमें बयान किए गए हैं वह इल्म-ओ-दानिश की तरक़्क़ी के साथ-साथ और भी वाज़ेह (Clear) होते जाते हैं हालांकि ख़ुद

साइंस की किताबों के बहुत से तसलीम शुदा हक़ाइक़ (Admitted Facts) अब पुराने क़िस्से बन चुके हैं। क़ुर्आन के हक़ाइक़ का ज़र्रा बराबर ग़लत साबित न होना इस बात की दलील है कि यह इन्सान का कलाम (Speech) नहीं है बल्कि अल्लाह का कलाम है। फ़्रेंच स्कालर मोरिस बोकाए ने इस पहलू पर नज़र डाली है और यह साबित किया है कि क़ुर्आन साइंस के मालूम हक़ाइक़ (Known Facts) की ताईद (Support) करता है न कि मुख़ालिफ़त। वह अपनी किताब में लिखता है :

"जहां तक क़ुर्आन का ताल्लुक़ है इस मुक़द्दस किताब और मॉडर्न साइन्स में पूरी हम-आहंगी (Harmony) है न कि इख़्तिलाफ़।" (मोरिस बोकाए : बाईबिल, क़ुर्आन और साइन्स, कराची 1993 तर्जमा उर्दू सनाउल हक़ सिद्दीक़ी)

इसी किताब में एक और जगह लिखता है :

"हमारे इल्म के मुताबिक़ इस्लाम के नज़रिए से मज़हब और साइन्स की हैसियत हमेशा दो जुड़वां बहनों की सी रही है। शुरू से ही इस्लाम की तरक़्क़ी के ज़माने में साइन्स ने हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी की है।" (Ibid)

(नोट : हज़रत अली रदीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों को इल्म का शौक़ दिलाया, हज़रत अमीर मुआविया रदीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उलूम-ओ-फ़ुनून की सरपरस्ती शुरू की और तीस साल के अन्दर-अन्दर हैरत अंगेज़ इन्क़लाब पैदा हो गया। हारून रशीद का ज़माना इल्म-ओ-हिकमत का सबसे ज़्यादा रौशन ज़माना था। अलमामून के ज़माने में बग़दाद साइन्स का सेन्टर बन गया; बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियां क़ायम हुईं; मुख़्तलिफ़ क़ौमों की किताबों के अरबी ट्रान्सलेशन हुए; तसनीफ़ (लेखन) का सिलसिला भी ज़ोरशोर से हुआ; ग़र्ज़ यह कि इस्लामी दुनिया में उलूम-ओ-फ़ुनून की रोशनी चारों ओर फैली हुई थी। इसी क़ुर्आन की रोशनी से दूसरी इस्लामी सदी से मुसलमान फ़िलास्फ़रों और साइंस दानों का लम्बा, सिलसिला नज़र आता है मसलन

केमिस्ट्री का इमाम जाबिर हय्यान; फ़िज़िक्स का माहिर अब्दुल्लाह अली इब्ने सीना; ज्योग्रैफ़ी के माहिर अबू रैहान मुहम्मद इब्ने अहमद अलबैरूनी; फ़िलास्फ़ी ऑफ़ इथिक्स का माहिर मुहम्मद बिन ग़ज़ाली; आप्टिक्स का माहिर अबू अली हसन इब्नुल हैशम; तिब (medicine) का इमाम अबूबक्र मुहम्मद ज़कीरिया राज़ी; साइकालोजी का माहिर अबू नसर मुहम्मद फ़ाराबी; नबातात (वनस्पति) में ज़िन्दगी दरयाफ़्त करने वाला अहमद मुहम्मद अली बिन मसकवी; मशहूर फ़िलास्फ़र इब्ने इस्हाक़ कुन्दी; हिन्दोस्तान में उलूम-ओ-फ़ुनून के इन माहिरीन का सिलसिला क़ायम रखने वाले अहमद रज़ा ख़ां बरेलवी अलैहिर्रहमा; उलूमे जदीद (आधुनिक ज्ञान) के हवाले से अब तक इन पर तहक़ीक़ न हो सकी। इन्टरनेश्नल साइन्सी माहिरीन को इनकी तरफ़ मुतवज्जेह होना चाहिए। यह सब कान्टीनेन्ट के वह पहले आलिम हैं जिन्होंने साइन्सदानों को क़ुर्आन के हक़ाइक़ मानने पर मजबूर किया और आख़िरकार फ़्रान्सीसी स्कालर मोरिस बोकाए के रिसर्च से इसकी पुष्टि हो गई। आज के मशहूर साइन्टिस्ट डा. अब्दुल क़दीर ख़ां ने इनके ख़्यालात और अफ़कार को तवज्जोह के क़ाबिल क़रार दिया।)

यही रांइटर एक और जगह लिखता है :

"ज़्यादा अहम बात यह है कि क़ुर्आन में वह हक़ाइक़ बयान हुए हैं जिनकी रिसर्च मॉडर्न एज से पहले नहीं हुई थी। सच पूछिए तो ऐसे हक़ाइक़ इस कसरत से हैं कि मैंने नवम्बर 1972 ई. को फ़्रांसीसी तिब्बी अकादमी के सामने "क़ुर्आन में नबाती और जेनियाती मौज़ू" (Botanical & Geneological Topic) पर एक पूरा आर्टिकिल पेश कर दिया।" (मोरिस बोकाए : बाइबिल, क़ुर्आन और साइन्स, कराची, 1993, पेज 10 (उर्दू तर्जमा - सनाउल हक़ सिद्दीक़ी))

क़ुर्आन की स्टडी से बड़ी-बड़ी ज्ञान की बातें सामने आती हैं। सरसरी तौर पर स्टडी के बाद यह चीज़ें सामने आईं -

(1) काइनात (विश्व) की हर चीज़ ज़िन्दा है और अल्लाह का ज़िक्र करती है।

क़ुर्आन शरीफ़ में इरशाद होता है :

तर्जमा : उसकी पाकी बोलते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उसकी पाकी न बोले; हां तुम उनकी तसबीह (पाकी बोलना) नहीं समझते। बेशक वह हिल्म (नम्रता वाला) और बख़्शने वाला (Forgiving) है। (क़ुर्आन : सूरए असरा, आयत 44)

(2) मॉडर्न साइन्स में नबातात और जमादात (Vegetables & Minerals) की ज़िन्दगी की कल्पना बहुत बाद की चीज़ है।

क़ुर्आन में है : "और हमने लोहा उतारा उसमें सख़्त आंच और लोगों के फ़ायदे। (तर्जमा)

(क़ुर्आन : सूरए हदीद, आयत 25)

(3) लोहे का आसमान से ज़मीन पर उतारना इस सदी में मालूम हुआ। अब तक हम यही समझते थे कि लोहा पहाड़ों से निकलता है लेनिक अब मालूम हुआ कि पहाड़ों पर आसमान से बरसता है।

क़ुर्आन शरीफ़ में है : "और हर इन्सान की क़िस्मत हमने उसके गले से लगा दी और उसके लिए क़ियामत के दिन एक नविश्ता (Writing - Record file) निकालेंगे जिसे खुला हुआ पाएगा।" (तर्जमा) (क़ुर्आन : सूरए असरा, आयत 13)

नए रिसर्च से यह मालूम हुआ कि इन्सान की गर्दन के पास अल्लाह तआ़ला ने वह फ़िल्म रख दी है जिसमें उसकी ज़िन्दगी की सारी कहानी दर्ज कर दी गई है।

(5) क़ुर्आन में है : "अभी हम दिखाएंगे उन्हें अपनी आयतें दुनिया भर में और ख़ुद उनके आप में यहां तक उन पर खुल जाए कि बेशक वह हक़ है।"

(क़ुर्आन : हाम मीम अस्सजदा, आयत न. 53)

इस नए युग के डाक्टरों ने यह सच्चाई मालूम की कि हर

इन्सान की सांस की नली में "ला इलाहा इल्लल्लाह" लिखा हुआ है और दाहिने फेफड़े पर "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) लिखा हुआ है।" (डेली न्यूज़ पेपर अलबिलाद, सऊदी अरब, एक शाबान (8 वां इस्लामी महीना) 1412 ई.)

यह हक़ीक़त दुनिया के तमाम ग़ैर मुस्लिमों के सामने दीने फ़ितरत की हक़्क़ानियत (सच होने) की दलील है।

(6) क़ुर्आने करीम में है : "और घोड़े और खच्चर और गधे कि उन पर सवार हो और ज़ीनत (शोभा) के लिए और वह पैदा करेगा जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।"

(क़ुर्आन : सूरए नहल, आयत न. 8)

वह ज़राए नक़्ल-ओ-हमल (यातायात के साधन) जिनका क़ुर्आन में इशारा किया गया अब हमारे सामने हैं जैसे मोटरें, बसें, कारें, पानी के जहाज़, हवाई जहाज़ वग़ैरह। और न मालूम भविष्य में और कौन-कौन से यातायात के साधन पैदा होंगे।

(7) क़ुर्आन में है : "और वह है जिसने जारी किए मिले हुए दो समुन्दर, यह मीठा है निहायत शीरीं (मीठा) और यह खारी है निहायत कड़वी और उनके बीच में एक पर्दा रक्खा और रोकी हुई आड़।" (क़ुर्आन : सूरए फ़ुर्क़ान, आयत न. 53)

यह खोज पिछली सदी में हुई; एक समुन्दर में दो दरिया अलग-अलग बह रहे हैं। पानी के अन्दर ही पानी की दीवार खड़ी है, एक दरिया का पानी मीठा है और एक दरिया का पानी कड़वा और रंग भी अलग-अलग, दोनों साथ-साथ बह रहे हैं लेकिन न इधर का पानी उधर जाता है, न उधर का पानी इधर आता है। यह चन्द मिसालें हैं जो क़ुर्आन के सरसरी स्टडी के बाद पेश की गईं हर अक़्ल वाले इन्सान को दावत देती हैं कि क़ुर्आन दुनिया के मालूम कर लिए गए और नामालूम सच्चाईयों का ख़ज़ाना है इसको बिना किसी मज़हबी तास्सुब (धार्मिक पक्षपात) के पढ़ना चाहिए और इससे हिदायत और रहनुमाई

हासिल करके दीने फ़ितरत की तरफ़ आना चाहिए जो हर इन्सान का दीन है।

हिन्दोस्तान के मज़हबी और सियासी लीडर मोहनदास करमचन्द गांधी ने इस हक़ीक़त को महसूस किया कि क़ुर्आन एक पढ़ने लायक़ किताब है जिससे दानाई और हिकमत (Wisdom) के सोते फूटते हैं चुनान्चे वह क़ुर्आने करीम की स्टडी करते और अपनी प्रार्थना सभाओं मे क़ुर्आन की सूरए फ़ातिहा (अल्हम्दु) और सूरए इख़्लास (क़ुलहुवल्लाह) पढ़वाया करते थे शायद इसी जुर्म की सज़ा में हिन्दुओं ने 1948 ई. में उन्हें क़त्ल कर दिया। क़त्ल से एक दो दिन पहले उन्होंने क़ुर्आन का अपना ज़ाती नुस्ख़ा एक कांग्रेसी आलिम को दिया था – क़ुर्आन के मुताबिक़ गांधी के तास्सुरात (Impressions) ध्यान देने लायक़ हैं।

"मैंने क़ुर्आनी तालीमात (Quranic Teachings) की स्टडी की है, मुझे क़ुर्आन को इल्हामी किताब (Revealed Book) मानने में ज़रा भी शक नहीं है। मुझे इसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह नज़र आई कि यह इन्सानी फ़ितरत के ऐन मुताबिक़ है।"

(सय्यारा डाइजेस्ट, लाहौर, क़ुर्आन नम्बर, पेज 372)

फ़ार्मर अमरीकी प्रेसीडेंट किलिन्टन की बीवी हेलरी किलिन्टन ने भी क़ुर्आन की स्टडी को ज़रूरी समझा। अतः 1996 ई. में ईद के मौक़े पर मुसलामानों को दावत दी तो कहा :

"रमज़ान के पाक महीने में ख़ुदा ने अपने रसूल पर क़ुर्आन उतारा, उस किताब ने करोड़ों इन्सानों की ज़िन्दगियों को बदल दिया यहां तक कि हमारे ख़ानदान को भी इस किताब ने मुतास्सिर किया है। जब हम स्कूल जाते थे तो हमें पढ़ने को क़ुर्आन नहीं मिलता था, इस्लाम के बारे में कोई किताब नहीं मिलती थी लेकिन अब मैंने और प्रेसीडेन्ट किलिन्टन ने इस्लाम को "जैलसी किलिन्टन" से समझा है जो इस्लामी तालीमात का कोर्स कर रही है।" (डेली जंग, अख़बार, कराची, 24 फ़रवरी 1996)

अगर अमरीकी प्रेसीडेन्ट क़ुर्आन को पढ़कर इस्लाम क़बूल कर ले तो दुनिया के सारे झगड़े ख़त्म हो जाएं। जिस हक़ीक़त से हमे मुहब्बत करनी चाहिए हम अनजाने में उस से नफ़रत करने लगते हैं और हक़ीक़ी क़ुव्वत को दिलों में नहीं हथियारों में तलाश करते हैं। इसलिए इक़बाल ने कहा था :

ढूंढ रहा है फ़िरंग ऐशे जहां का दवाम
वाए तमन्नाए ख़ाम, वाए तमन्नाए ख़ाम

क़ुर्आने करीम ने यहूदियत और नसरानियत वग़ैरह के तसव्वुरात (View Points) को तसलीम नहीं किया क्योंकि वह एक और सिर्फ़ एक मज़हबे फ़ितरत इस्लाम का दाई (Preacher) है इसीलिए क़ुर्आने करीम में इरशाद होता है :

तर्जमा : "और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न यहूदी थे न नसरानी (Christian) बल्कि हर बातिल (False) से अलग मुसलमान थे और मुशरिकों से न थे।"

(क़ुर्आन : सूरा आले इमरान, आयत न. 67)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में बहुत से नबी हुए। ख़ुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी आप ही की औलाद में से थे। आपने अपने बेटों को नसीहत फ़रमाई :

तर्जमा : "ऐ मेरे बेटों! बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह दीन चुन लिया न मरना मगर मुसलमान।"

(क़ुर्आन : सूरा बक़र, आयत न. 132)

इस्लाम के बारे में एक हिन्दू धार्मिक रहनुमा ने यह दिल लगती बात कही है :

"अगर इस्लाम में अच्छाई न होती तो वह एक दिन क़ायम न रहता। इस मज़हब में बेशुमार ख़ूबियां हैं।" (इस्तक़ामत डाइजेस्ट, कानपुर, मुहम्मदे अरबी नम्बर, मई 1985, पेज 82)

और एच. आर. गिब लिखता है :

तर्जमा (अनुवाद) : "अगर कभी पूरब और पश्चिम की

मुख़ालिफ़ क़ुव्वतें बाहम मिलने के लिए सोचें तो इस्लाम का बीच में आना लाज़मी शर्त होगा।"

(Wither Islam, London, 1935)

और जार्ज बरनार्ड शा इस्लाम की इसी ख़ूबी और असर अंगेज़ी को सामने रखते हुए कहता है :

"मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मज़हब की पेशिनगोई (Prophecy) की है कि कल सारी दुनिया के लिए क़ाबिले क़बूल (अपनाने के क़ाबिल) होगा जैसे कि आज यूरोप के लिए क़ाबिले क़बूल हो रहा है।" (A Collection of Writings of some of the eminent scholars, 1939, p 77)

Mr. Venkata Chalam Adiyar

A Journalist, Dramatist, Politician, Playwright, Film Director, Producer and Actor from Madras (India) author of 100 page book on Islam entitled "Nan Katha likkam Islam", which has already been translated into Urdu, Hindi, Malyalam, Telgu, Kannada, Arabic and Sindhi Says that he is,

Purifying myself to embrace
Islam and the Process of
Purifying is at its last stage

(Daily Dawn, Karachi, Friday, 6th April, 1984, p 5, col 1)

श्रध्येय प्रकाश जी

एक सच्चे और आलमगीर (World wide) मज़हब को क़बूल करके मेरा दिल सच्ची ख़ुशी से भरा है। मैंने 1924 में मज़हब और फ़िलासफ़ी का वसी मुतआला (गहन अध्ययन) शुरू किया और उसकी रौशनी में बुद्ध मत और ईसाईयत को समझने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकामी हुई। ईसाईयत अगरचे एक सच्चा मज़हब है लेकिन ईसाइयों की ला तादाद फ़िरक़ा बंदियों में स्वार्थ ने तालीमात को मस्ख़ (अंग भंग) करके रख दिया है। हिन्दू मत में हिन्दू प्रैक्टिकल लाइफ़ में वेदान्त से बहुत दूर हो चुके थे, उनकी हालत रहम के क़ाबिल है। बड़ी-बड़ी कमियां और ख़राबियां दिन ब दिन ज़ाहिर होती रहती हैं। हरिजनों को हिन्दू समाज में निहायत घटिया मुक़ाम हासिल था। बेवा औरतों को समाज में नफ़रत के क़ाबिल ख़्याल किया जाता था लेहाज़ा उसे दूसरी शादी की इजाज़त नहीं थी बल्कि हिन्दू समाज की ज़ालिमाना रिवायतों के मुताबिक़ शौहर के मरने के बाद बीवी भी शौहर की चिता पर बैठ कर उसके साथ जल मरती थी। शहरी व समाजी रिफ़ार्म को पण्डित और रिफ़ार्मर रायज करने से मजबूर थे बल्कि लेजिसलेटिव संस्थाओं के ज़रिए लागू किया जाता। हमारे आक़ा हुज़ूर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने हमें आज़ादी, भाईचारा, बराबरी, इन्साफ़, इन्सानियत के आदर की शिक्षा दी। क़ुर्आन पाक में मुसलमानों के लिए न सिर्फ़ मज़हबी बल्कि इख़लाक़ी (Moral), तमद्दुनी (सभ्यात्मक), मआशरती (Social) और रोज़मर्रा (प्रतिदिन) की ज़िन्दगी से ताल्लुक़ रखने वाली हर तरह की समस्याओं का हल है।"

(महानामा पेशवा, देहली, रसूल नम्बर, 1927 ई.)

सातवां बाब (Chapter 7)

दीने फ़ितरत और मज़ाहिबे आलम (दुनिया के धर्म)

मज़ाहिबे आलम : मज़हब हम को इदराक-ओ-अमल (Perception & Action) का तिहरा तरीक़ा फ़राहम (Provide) करता है :

(1) हक़ीक़ते मुतलक़ा (Absolute fact) का इदराक।

(2) इन्सानी समाज की तामीर व तशकील।

(3) मरने के बाद की ज़िन्दगी मे कामयाबी हासिल करना।

(4) मज़हब दिमाग़ भी है और दिल भी है। वह मज़हब ही नहीं जो दिल-ओ-दिमाग़ दोनों को मुतमइन (Satisfy) न करे। मुख़तलिफ़ फ़िलास्फ़रों ने मज़हब की तारीफ़ (Define) की है मगर नातमाम व नामुकम्मल (अधूरा) (S. Anwar Ali : Religion the Science of life, Karachi, p 150-151)। हिन्दू धर्म का कई जगह ऊपर ज़िक्र कर चुके हैं यहां बाक़ी चन्द मज़हबों का सरसरी जायज़ा लेते हैं।

बुद्ध मत

एक मज़हब और फ़िलासफ़िकल तरीक़ाकार है। यह मध्य पूर्वी एशिया का वह मज़हब है जो सबकान्टीनेन्ट में छटी सदी ईसा पूर्व क़ायम हुआ। इसका फ़ाउन्डर गौतम बुद्ध है। गौतम बुद्ध नेपाल की सरहद पर 563 साल ईसा पूर्व पैदा हुआ और बिहार में रहा और वहीं उसका इन्तक़ाल हुआ। तीसरी सदी ईसा पूर्व तक उसका धर्म हिन्दोस्तान में फैल चुका था। अशोक के ज़माने में यह स्टेट का मज़हब क़रार पाया जिसका साम्राज्य कन्धार से गंगा तक फैला हुआ था। यह हज़ार साल तक ग़ालिब

रहा लेकिन 8 वीं सदी ई. में ब्राह्मण ग़ालिब आ गए। नवीं सदी ई. में स्टेट में इसका अमल दख़ल नहीं रहा। (The World's Great Religion, p 63 (S. Anwar Ali, p 92))

गौतम बुद्ध की टीचिंग में इल्हामी किताबों और सहीफ़ों की बहुत सी बातें मिलती हैं इसलिए इसको इल्हामी किताबों के इस्तफ़ादे (लाभान्वित) से अलग-थलग नहीं रखा जा सकता। (इन्साइकिलोपीडिया ब्रिटानिका (यू. एस. ए. 1968 ई. जिल्द 4, पेज 354-355))

बुद्ध मज़हब का फैलाव बर्मा, लाऊस, कम्बोडिया, थाईलैंड, जापान, चीन, गन्धारा, कशमीर, तिब्बत वग़ैरह में रहा।

ज़रतश्त (Zarathuatra)

ज़रतश्त मज़हब --- ज़रतश्त (100-109) से मन्सूब किया जाता है जो लगभग एक सौ ई. में गुज़रा है। यह मज़हब धीरे-धीरे ईरान में फैला और सासानियों के शासन काल 211 ई. से 640 ई. में स्टेट का मज़हब माना गया। बम्बई के पारसी और ईरान के बाज़ फ़िरक़ों का यह मज़हब अब भी हैं।

(Anwar Ali : Religion, The Science of life p 100)

ज़रतश्त की शख़्सियत पैदाइश की जगह और तबलीग़ (धर्म प्रचार) की जगह के बारे में कुछ पता नहीं है। (ज़रतश्त के बारे में यहूद-ओ-नसारा का ख़्याल यह है कि इसकी बुनियाद हज़क़ील नबी ने क़ायम की। शायद वह नबी जिनकी दुआ से अपनी बस्ती से निकलने वाली और मरने वाली क़ौम अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा हुई जिस का ज़िक्र क़ुर्आन में है।

अगर यह हक़ीक़त है तो कहा जा सकता है कि इस मज़हब में रूहानियत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उस सिलसिले के नबियों के तुफ़ैल आई है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पैग़ाम, तौहीद का पैग़ाम था यानी अल्लाह एक है; क़ादिरे मुतलक़ (Omnipotent) है; सब जानता है; सब का

मालिक और रचयता है और वही पूजा योग्य है।)

ईरानी रिवायत के मुंताबिक़ ज़रतश्त एलेगज़न्डर से 258 साल पहले गुज़रा है यानी एलेगज़न्डर की फ़तेह (Victory) (330 ईसा पूर्व) से 258 साल पहले 77 साल की उम्र में उसका इन्तेक़ाल हुआ। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से 6350 बरस पहले गुज़रा है या कम से कम 1500 से 2000 ईसा पूर्व में गुज़रा।
(T.R. Sethna : The Teaching of Zarathutara, 1966, p 1)

ज़रतश्त ने प्राचीन ईरानियों के धर्म की तजदीद (Revive) की जिस तरह गौतम बुद्ध ने हिन्दू धर्म की तजदीद और इस्लाह (सुधार) की। (George Foot Moors : History of Religion, 1950, vol 1, p 366)

ज़रतश्त लिटरेचर के दो हिस्से हैं : ज़न्द और अविस्ता। इसमें दूसरी बातों के इलावा पैग़म्बरों की वही भी शामिल है (S. Anwar Ali : Religion, the Science of life, p 104) मगर इसकी अस्ल नापैद है। (बाज़ दूसरे हवाले – 1. रशीद अहमद : तारीख़े मज़ाहिब, पेज 176; 2. मज़हरुद्दीन : इस्लाम और मज़ाहिबे आलम पेज 5 और 52; 3. सय्यारा डाइजेस्ट (क़ुर्आन नम्बर) अप्रेल 1970, जिल्द 1, पेज 289)

यहूदियत

यहूदी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से अपना रिश्ता जोड़ते हैं इस तरह कि हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम उनके बेटे हैं और हज़रत इसहाक़ के बेटे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हैं जिनको इस्राईल कहा जाता था इसलिए यहूदी ख़ुद को "बनी इस्राईल" यानी "आले याक़ूब" कहते हैं। तौरैत, ज़बूर, इंजील बनी इस्राईल पर उतारी गईं। वह अल्लाह की महबूब तरीन क़ौम रही है मगर इसके बावजूद वह बहुत से ऊंच नीच से गुज़रे कभी वह बे मिसाल सल्तनतों के हाकिम रहे जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम,

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम (926 ईसा पूर्व से 1020 ईसा पूर्व) और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम (926 ईसा पूर्व से 965 ईसा पूर्व) के ज़मानों में, कभी ग़ुलाम रहे जैसे मिस्र में फ़िरऔन के ज़माने में। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़रिए फ़िरऔन की ग़ुलामी से आज़ादी पाई। तौरैत नाज़िल हुई, जन्नत से मन-ओ-सलवा (जन्नती भोजन) उतारा गया। सेहराए सीना (Desert of Sinai) में बादलों ने 40 साल तक साया किया। यह लोग दुनिया की क़ौमों मे पहली उम्मत (Nation) थी जो तौहीद और अल्लाह के अहकाम (Orders) की तबलीग़ (धर्म प्रचार) के लिए भेजी गई लेकिन बाद में इन्होंने बछड़े और बुतों की पूजा शुरू कर दी और कई ख़ुदाओं को मानने लगे, बुरे कामों में गिरफ़्तार हुए, रसूलों (Prophets) को क़त्ल करने लगे और अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुए। वह तौरैत (Torah) जो उनके अक़ाइद व आमाल (Faiths & Actions) की बुनियाद है 600 ईसा पूर्व से उसका अस्ल नुस्ख़ा (असली किताब) नापैद है। (S. Anwar Ali : Religion the Science of life, p 129)। जो कुछ हमारे पास है वह 445 ईसा पूर्व दूसरे लोगों का जमा किया हुआ संग्रह है जिसका अस्ल से काई ताल्लुक़ नहीं, इसमें बहुत सी अफ़सोसनाक और शर्मनाक बातें भी हैं। मजमूई तौर पर यह कलेक्शन इनफ़िरादी (Indivisual) और इजतमाई (Collectively) ज़िन्दगी में हमें किसी तरह की गाइडेंस नहीं देता।

(Encyclopaedia of Religion and Ethics, vol 8, p 580)

ईसाईयत

ईसाईयत की शुरुआत ईसा अलैहिस्सलाम से होती है। शुरू की ईसाईयत अस्ल में यहूदियत (Jewism) के अन्दर एक तहरीक (Movement) थी। चौथी सदी ईसवी के पहली दहाई में शाह कान्स्टन टाइन अव्वले आज़म ने ईसाई धर्म क़बूल किया इस तरह यह पूरे राज्य का धर्म बन गया। चौथी और छटी सदी

ई. के बीच तीन ख़ुदाओं (अल्लाह, ईसा और मरियम) का नज़रिया सामने आया।

इंजील जो हज़रत ईसा पर अल्लाह की उतारी हुई किताब थी अब यह किताब नहीं बल्कि किताबों का संग्रह है।

यह किताबें तीन भाषाओं - इबरानी, आरामी, यूनानी में सदियों में कम्पाइल की गईं। मौजूदा इंजील - अनाजील (Evangels) के दूसरे नुस्ख़ों से अलग है। इस इख़तेलाफ़ का हल अब तक तलाश न किया जा सका। मार्क ने 65-70 ई. में लैटिन भाषा में अपनी याददाश्त के भरोसे पर पहली इंजील कम्पाइल की फिर 80-90 ई. में लियूक ने दूसरी इंजील तय्यार की यह पाल का तर्जमान (Interpretor) था। 100-140 ई. में जान ने अपनी इंजील लिखी। जान हज़रत ईसा का हवारी (साथी - Companion) नहीं है क्योंकि इस इंजील में जान के बारे में भी रिमार्क्स मौजूद हैं। 80-100 ई. में मैथिव ने अपनी इंजील लिखी, यह इबरानी भाषा में थी लेकिन इसकी अस्ल नापैद है। बाद में उसका यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया। ऊपर लिखे गए चार अनाजील - यह चार विश्वसनीय अनाजील हैं।

पहली सदी ईसवी में बहुत से लोगों ने अनाजील लिखीं। 200 ई. में 34 अनाजील और 113 लेटर्स मज़हबी किताबों में शामिल थे, यह सब यूनानी भाषा में थे फिर यह सब एक कौंसिल ने रद्द कर दिए। यह बात ध्यान देने लायक़ है कि दूसरे मज़हबों के बानियों (Founders) की तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने पीछे कोई तहरीरी मैटर नहीं छोड़ा न उन्होंने अपने हवारियों को इस तरह का कोई निर्देश दिया मगर पाल ने ईसाईयत का पौधा लगाया। (Encyclopaedia of Religions and Ethics, vol 8, p 580)। तहक़ीक़ (खोज) से यह बात साबित होती है कि ईसाईयत की टीचिंग्स हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की टीचिंग्स नहीं बल्कि बाद में आने वाले मुख़तलिफ़ लोगों की टीचिंग्स हैं जो उनसे जोड़ दी गई हैं।

कनफ़्युशिज़्म

कनफ़्युशिज़ मज़हब का बानी कनफ़्युशिस है (479 से 551 ईसा पूर्व)। यह चीन का बहुत ही ज्ञानी इन्सान था, यह टीचर था, फ़िलास्फ़र था और रिफ़ॉर्मर था, पैग़म्बर न था, उस के ज़माने में चीन बदनज़्मी (अनारकी – अराजकता) का शिकार था, मआशी (Economic) और सामाजिक गड़बड़ियां मची थीं। उसके टीचिंग्स में ख़ानदान को मुनज़्ज़म (संगठित) करना और अमन क़ायम करना था। कनफ़्युशिज़्म को गो मज़हब कहा जाता है मगर अस्ल में यह मज़हब न था क्योंकि इस मज़हब की न कोई मज़हबी किताब थी, न इबादत ख़ाने, न इबादत करने वाले; यह एक फ़लसफ़याना निज़ाम (Philosophical System) था।

ताऊइज़्म

ताऊइज़्म का ताल्लुक़ लाऊज़ो से था। यह कनफ़्युशिज़्म की तरह दो हज़ार साल तक चीनी ज़िन्दगी का अहम हिस्सा रहा है। यह कनफ़्युशिज़्म के समानान्तर चलता रहा; इसने चीन में बुद्ध मत की तरक़्क़ी व तब्दीली में मदद की। कनफ़्युशिज़्म ने समाजी बराबरी और प्रैक्टिकल लाइफ़ पर ज़ोर दिया। ताऊइज़्म ने इन्फ़रादी ज़िन्दगी (Indivisual Life) और ज़हनी सुकून पर ज़ोर दिया। उसका कहना था कि जब इन्सान फ़ितरी (स्वाभाविक) रास्ते पर चलेगा तो एक ख़ुदा के साथ हो जाएगा और शान्ति और ख़ुशी की ज़िन्दगी हासिल करेगा।

सिखइज़्म

यह इस्लाम और हिन्दू मत का कम्बीनेशन है। इसका बानी गुरूनानक (1469 ई.–1539 ई.) एक हिन्दू रेवेन्यू तलौंदी का बेटा था। 15 वी सदी मे सब कान्टीनेन्ट में इस्लामी हुकूमत के बाद हिन्दू मुस्लिम सम्पर्क की ज़रूरत महसूस की गई। बहुत से हिन्दू

मुसलमान हो गए। गुरूनानक का मक़सद यह था हिन्दू धर्म और इस्लाम को एक दूसरे के क़रीब लाया जाए। वह कबीर और मुस्लिम सूफ़ियों से मुतास्सिर था। उसने हिन्दुओं के बहुत से अक़ाइद-ओ-आमाल रद्द करके इस्लामी अक़ाइद-ओ-आमाल को क़बूल किया। उसने ख़ुदा के ज़ाती नाम "अल्लाह" के जपने पर ज़ोर दिया, बुतों और तस्वीरों की पूजा को रद्द किया, दरियाओं में नहाना, शराब, सिगरेट और हुक्का पीने को रद्द किया। उसकी धार्मिक पुस्तक "ग्रंथ साहब" है जिसमें दस गुरूओं के लेखन (Writings) शामिल हैं। यह सिख धर्म की पवित्र किताब है।

(S. Anwar Ali : Religion the Science of Life, p 149)

इसमें शक नहीं कि हिन्दू मत, बुद्ध मत, ज़रतश्त, यहूदियत, नसरानियत (Christianity), कनफ़्युशिज़्म, ताऊइज़्म, सिख मत और दूसरे मज़ाहिब (Religions) पर मज़हब की तारीफ़ (परिभाषा) लागू नहीं होती क्योंकि इनके यहां इन सवालों के इत्मिनान बख़्श (Satisfactory) जवाब नहीं।

1. हक़ीक़ते मुतलक़ा (Absolute fact) का ढंग या स्वभाव क्या है?
2. इन्सानी समाज का निर्माण और रचना किस तरह की जाए?
3. दुनिया को किस तरह कन्ट्रोल किया जाए?
4. दुनिया से हमारा रिश्ता क्या है?
5. मरने के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी (Hereafter) में कामयाबी किस तरह हासिल की जाए?

लेकिन जब हम दीने फ़ितरत की तरफ़ नज़र उठा कर देखते हैं तो यहां हमें उन तमाम सवालों के जवाब मिल जाते हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलामे के ज़माने से ही दीने फ़ितरत के निफ़ाज़ (Reinforcement) और क़याम की कोशिशें होती रहीं। तारीख़ हमें बताती है कि हज़रत आदम अलैहिससलाम और उनके बेटे शीश अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम अहम अम्बिया (Prophets) गुज़रे। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम 950 साल तक तबलीग़ करते रहे चन्द लोगों के सिवा कोई मुसलमान न हुआ। इन्कार करने वाले तूफ़ाने नूह की भेंट चढ़ गए। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने दीने फ़ितरत की तबलीग़ और आद क़ौम के सुधार के लिए कोशिश की लेकिन अपनी सरकशी (विद्रोहीपन) की वजह से वह तेज़ हवाओं की नज़्र हो गए। इसी तरह हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने भी कोशिशें की मगर सरकशी की वजह से उनकी क़ौमें अल्लाह के अज़ाब में गिरफ़्तार हुईं। यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे जिन्होंने मुसीबतों का मुक़ाबला किया और शाम व हिजाज में दीने फ़ितरत के सेन्टर क़ायम करके रहे। शुरू के ज़माने में शाम से हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और आख़िरी ज़माने में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए।

हिजाज़ की धरती से शुरू में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सही मानों में मज़हबे फ़ितरत को क़ायम और जारी किया। (ऐसा मालूम होता है हिन्दुओं का ब्रह्मा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही हैं) यहूदियत और ईसाईयत तो अस्ल इब्राहीमी है, उनका दावा भी यही है --- यहूदी हज़रत इब्राहीम को इब्राम कहते हैं और ईसाई अब्राहम)। तारीख़े इन्सानियत (मानव इतिहास) मे इनको दीने फ़ितरत का दाई (Preacher) कहा जा सकता है। दीने फ़ितरत की सारी किरणें इसी सेन्टर से फूट रही है। क़ुर्आन में तक़रीबन 67 आयतों में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नामे नामी आया है। बाज़ आयतों में उनके

तौहीद के पैग़ाम का ज़िक्र और उनकी पैरवी की ताकीद (ज़ोर डालना) की गई है। (क़ुर्आन : सूरए बक़रा, आयत 135, 136, 258 --- सूरए आले इमरान, आयत 67, 95, 125 --- सूरए अनआम आयत 161 --- सूरा अज़ज़ख़रफ़ आयत 26 --- सूरए हज आयत 26)

ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर टोनी ब्लेयर का एतराफ़ (Confession)

इस्लाम के मुतअल्लिक़ जो ग़लत तास्सुर पेश किया जा रहा है उसका हक़ाइक़ से कोई ताल्लुक़ नहीं। इस्लाम निहायत पुर अम्न और ख़ूबसूरत दीन है जो तमाम मख़लूक़ (Creatures) को मुहब्बत सिखाता है और माफ़ कर देने व नज़र अन्दाज़ करने की शिक्षा देता है। मुसलमानों से मेलजोल और ताल्लुक़ात का सबको फ़ायदा पहुंचेगा।

(मुआरिफ़े रज़ा, कराची, अप्रैल 2000 ई. पेज 32)

आठवां बाब (Chapter 8)

दीने फ़ितरत – इस्लाम

अब हम दीने फ़ितरत के बारे में अर्ज़ करेंगे जो तमाम रसूलों का दीन है, तमाम नबियों का दीन है, जो तमाम इन्सानों का दीन है यानी "इस्लाम"। इस्लाम का अर्थ है --- झुकना, न पत्थरों के सामने, न पेड़ों के सामने, न सितारों के सामने, न चांद व सूरज के सामने, न अपने और न अपने जैसे इन्सानों के सामने बल्कि एक अल्लाह के सामने। तौहीद का यही वह तसव्वुर है जिस ने इन्सान की बिखरी हुई क़ुअतों को यकजा करके कमज़ोर व नातवां इन्सानों को इतना ताक़तवर और बाहिम्मत बना दिया कि दुनिया देख देख कर हैरान हुई जाती थी। यह ख़्याल सिर्फ़ ख़्याल नहीं एक ऐतिहासिक सत्य है। हमें हर तरह के पक्षपात को छोड़ कर इस्लाम को इस नज़र से देखना चाहिए कि वह हमारा अपना मज़हब है, हम उससे जुदा हो गए, हमने उसको छोड़ दिया, हम खाइयों में भटक रहे हैं, हम जंगलों और सेहराओं में ख़ाक छान रहे हैं, हमें अपने घर आते शर्म आती है। भला अपने घर में आते भी किसी को शर्म आती होगी? ज़रा ग़ौर तो करें – इल्म–ओ–दानिश नई करवटें ले रहे हैं, बरसों का जुमूद (जड़ता – Inertness) ख़त्म हो चुका है; नया ज़हन बेदार होने के लिए अंगड़ाईयां ले रहा है, आंखें मसल रहा है, इधर उधर देख रहा है --- ऐ काश! इल्म–ओ–दानिश दीने फ़ितरत को देख लेते --- हम ने तंग दिली से बहुत कुछ गंवाया --- अगर साइंस दां होश–ओ–अक़्ल और दिल की आंख से क़ुर्आन पढ़ लेते --- अल्लाह की किताब की बिजलियों को छोड़कर अक़्ल–ओ–दानिश की बैसाखियों के सहारे लंगड़े लोलों की तरह घिसट रहे हैं --- हां! इस्लाम का यह सारे इन्सानों पर एहसान है कि उसने हमें तौहीद का तसव्वुर

देकर हमारे फ़िक्र-ओ-नज़र में एक इन्क़लाब पैदा कर दिया --- हम को जीना सिखाया, हमको मरना सिखाया, क़ुर्आने करीम में इस हक़ीक़त को यूं बयान फ़रमाया :

तर्जमा : "और उस से बेहतर किसका दीन है जिसने अपना मुंह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकी वाला है और उसने इत्तबा (follow) की इब्राहीम की मिल्लत (यहां मिल्लत से तात्पर्य है faith या Religion) की जो हर बातिल (झूठ, false) से जुदा था।" (क़ुर्आन : सूरतुन्निसा, आयत 125)

इन्सान ही क्या अल्लाह के आगे आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ भी है सब झुके हुए हैं --- इस हक़ीक़त को क़ुर्आन शरीफ़ में यूं बयान फ़रमाया :

तर्जमा : "और उसी के हुज़ूर (सामने) गर्दन रक्खे हुए हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं और मजबूरी से और उसी की तरफ़ फिरेंगे।" (क़ुर्आन : सूरए आले इमरान, आयत 83)

इन्सानी वजूद में ख़्याल एक बड़ी शक्ति जो पूरे वजूद को कन्ट्रोल करता है। जब ख़्याल अल्लाह की तरफ़ लग जाए तो एक महान शक्ति साबित होती है चुनान्चे क़ुर्आने करीम में इरशाद होता है :

तर्जमा : "तो जो अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुका दे और हो नेकोकार तो बेशक उसने मज़बूत गिरह थामी।"

(क़ुर्आन : सूरए लुक़मान, आयत 22)

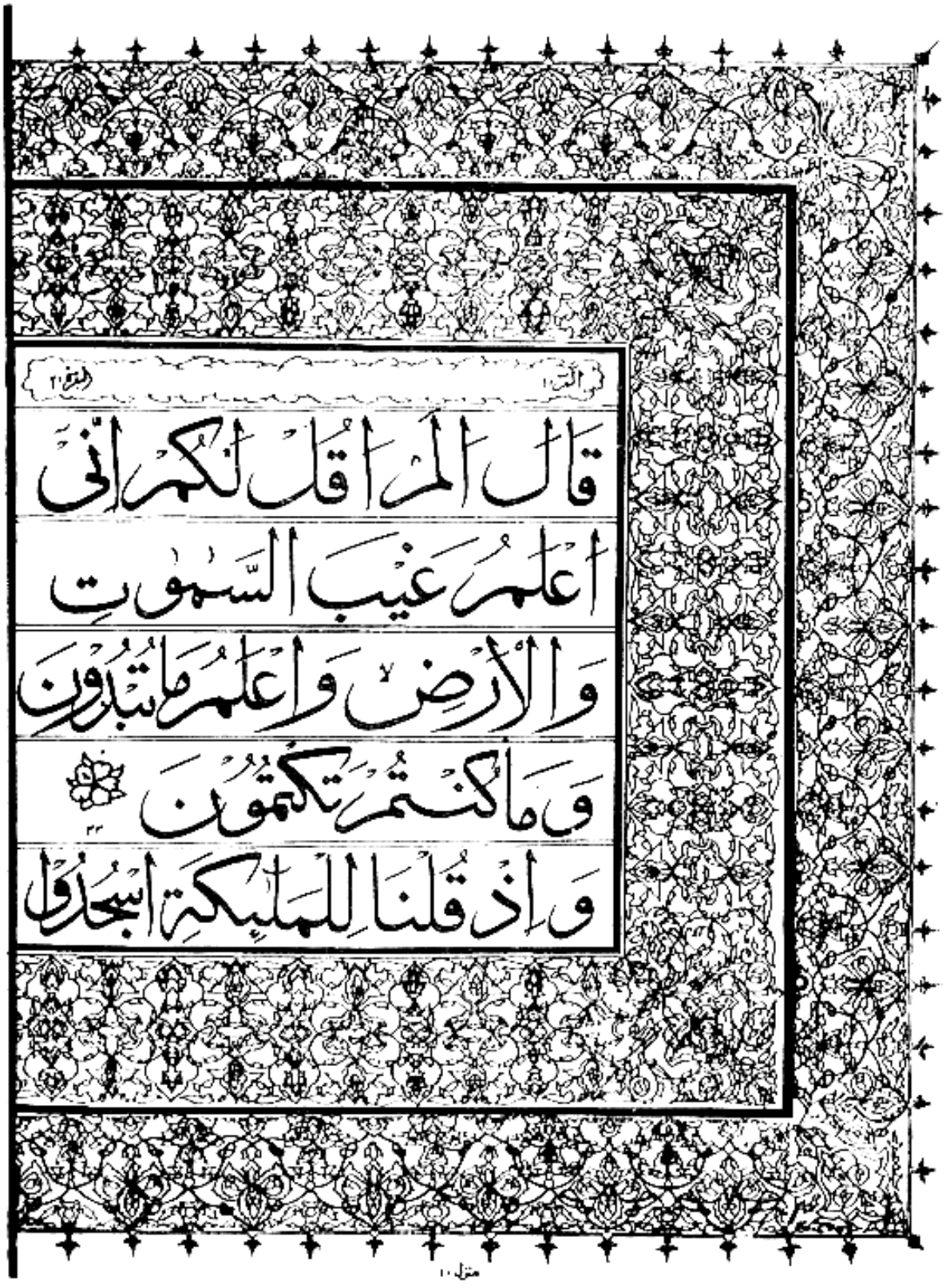
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ
اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا

अजाइबुल कुर्आन, मकतूबा ख़ुर्शीद आलम,
गौहर रक़म, मतबूआ लाहौर

आमतौर से यह समझा जाता है कि मज़हब को हमारी ज़रूरत है लेकिन क़ुर्आन बार-बार इन्सान को यह समझाता है कि दीने फ़ितरत यानी इस्लाम उनकी ज़रूरत है इसीलिए जिन लोगों ने मुसलमान होकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर अपना एहसान जताया तो अल्लाह ने फ़रमाया :

तर्जमा : "वह तुम पर एहसान जताते हैं कि मुसलमान हो गए तुम फ़रमाओं अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रक्खों बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।" (क़ुर्आन : सूरा हुजरात, आयत 17)

जैसा कि अर्ज़ किया गया कि दीने फ़ितरत का आग़ाज़ (प्रारंभ) उसी वक़्त से हो चुका था जब नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तख़लीक़ (Creation) हुई और उसकी तकमील (पूर्ति) भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाई उस का ज़िक्र इस तरह क़ुर्आने करीम में है :

तर्जमा : "और आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम दीन को पसन्द किया।"

(क़ुर्आन : सूरा माइदा, आयत 3)

यह ख़िताब (सम्बोधन) दुनिया के सारे इन्सानों से है इसलिए सब इन्सानों को इस आयत की तरफ़ तवज्जो करनी चाहिए। दीने फ़ितरत इस्लाम सच और हक़ है, उसकी हक़्क़ानियत की यह भी एक रौशन दलील है कि जब ,दूसरे धर्म वालों ने प्रेक्टिकल लाइफ़ से मज़हब को दूर करके इबादत ख़ानों (Places of worship) तक महदूद किया तो तरक़्क़ी की लेकिन उसके बर ख़िलाफ़ मुसलमानों ने जब अमली ज़िन्दगी से दीने फ़ितरत (इस्लाम) को दूर किया को तो पस्ती में गिर गए। अगर

दीने फ़ितरत बेजान होता तो उस पर अमल करके मुसलमान तरक़्क़ी नहीं करते मुसलमानों की तरक़्क़ी और तनज़्ज़ुली (अवनति Demotion) दोनों दीने फ़ितरत की हक़्क़ानियत की दलील है। जब अमल किया तो तरक़्क़ी की और जब छोड़ दिया गिरते चले गए। दीने फ़ितरत की सच्चाई के बारे में एडवर्ड क्लार्ड लिखता है :

"एक मज़हब जिसने 1300 बरस तक लाखों इन्सानों की प्यास बुझाई, मकरो फ़रेब के गहवारों में नश्वो नुमा (Development) नहीं पा सकता।" (Islam the Religion About Prophet, Karachi, 1982, p 47-48)

दुनिया में दीने फ़ितरत अर्थात् इस्लाम के मुक़ाबले में बहुत से निज़ामहाए हुकूमत (शासन पद्धतियां) हैं जैसे : सरमायादाराना निज़ाम (पूंजीवाद) जिसमें मेहनत के मुक़ाबले में दौलत को अहमियत (महत्व) दी जाती है। सोशलिज़्म (Socialism) जिसमें न दौलत को अहमियत दी जाती है न मेहनत को बल्कि समाज को अहमियत दी जाती है।

कम्युनिज़्म जिसमें न समाज को अहमियत दी जाती है न दौलत को बल्कि मेहनत को अहमियत दी जाती है। इन निज़ामहाए ज़िन्दगी (जीवन पद्धतियों) के मुक़ाबले में दीने इस्लाम समाज को भी अहमियत देता है, मेहनत को भी अहमियत देता है और दौलत को भी अहमियत देता है। दीने इस्लाम इन्सानी बहदत (मानव इकाई) का दाई (Preacher) है। इसमें सब इन्सानों को हुक़ूक़ (अधिकार) हासिल हैं; सब इन्सान आज़ाद हैं; उनको इज़हारे राय (अपनी राय ज़ाहिर करने) की भी आज़ादी है; रहने सहने की भी आज़ादी है; तालीम (शिक्षा) की भी सहूलत है; हर एक चीज़ की सहूलत है।

इस्लामी ख़लीफ़ा की यह ज़िम्मेदारी है कि उसकी रिआया (Subjects – आम जनता) चाहे मुसलमान हो या ज़म्मी (ज़म्मी उस ग़ैर मुस्लिम को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत की हिफ़ाज़त

में रहता है और विशेष टैक्स जिसे जुज़िया कहते हैं, भी अदा करता है) उसको दाख़िली (अन्दरूनी) और ख़ारजी (बाहरी) अम्न मिलना चाहिए, भोजन मिलना चाहिए, कपड़ा और मकान मिलना चाहिए, तालीम मिलनी चाहिए और अदल-ओ-इन्साफ़ मिलना चाहिए।

दीने फ़ितरत (इस्लाम) में ख़लीफ़ा और हाकिमे वक़्त क़ानून से ऊपर नहीं, वह अल्लाह के बन्दों के सामने जवाबदेह है; जनता के किसी भी एक के आदमी मुक़ाबले में उसको किसी तरह का ज़ाती अख़्तियार हासिल नहीं, उसको बुनियादी क़ानून के ख़िलफ़ कोई नया हुक्म जारी करने का हक़ नहीं, वह हुकूमत की किसी चीज़ का मालिक नहीं, वह मुल्क और जनता का अमानतदार (Trustee – ट्रस्टी) है; आला हाकिम अल्लाह और उसका रसूल है। जो ख़लीफ़ा या हाकिमे वक़्त अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करे उसको बरतरफ़ (Dismiss – हटाया) किया जा सकता है; वह मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम ज़म्मी रियाया का ख़ादिम है। हदीस में आता है :

तर्जमा : "मख़लूक़ (सभी प्राणी) अल्लाह का घराना है बस ख़ुदा के नज़दीक सब से ज़्यादा महबूब वही है जो अल्लाह के घराने यानी मख़लूक़ के लिए मुफ़ीद तर (हितकारी) हो।" इसी अर्थ और सेंस की दूसरी हदीसें भी हैं जैसे :

(1) मख़लूक़ अल्लाह का घराना है बस अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब वही है जो अल्लाह के घराने की भलाई चाहे।

(2) मख़लूक़ अल्लाह का घराना है बस अल्लाह के नज़दीक सब से महबूब वही है जो उसके घराने के लिए फ़ायदेमन्द हो। (तबरानी कबीर, तबरानी औसत, हिलयतुल औलिया 1. शोअबुल ईमान, हदीस न. 7445, 7446, 7447; 2. मुसनद अबू याला मूसली हदीस न. 3315, 3370, 3478; 3. मजमउल ज़वाइद, जिल्द 8, पेज 191)

दीने फ़ितरत इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदीअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रदीअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जो ख़िताबात फ़रमाए (जनतासे address किया) उनके सार पेश किए जाते हैं जिनसे अन्दाज़ा हो कि इन हज़रात ने किस सच्चाई से हुकूमत की जिस की मिसाल इस दौरे जदीद (आधुनिक युग) में नहीं मिलती।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने ख़िताब करते हुए फ़रमाया :
तर्जमा : "अगर मैं अच्छे काम करूं तो तुम मेरी मदद करना और अगर मैं बुरा करूं तो तुम मुझे ठीक कर देना।" (इब्ने असीर : तारीख़ुल कामिल (d 630); बैरूत, जिल्द 2, पेज 224)

और हज़रत उमर ने ख़िताब करते हुए फ़रमाया :
तर्जमा : लोगो! मुझ पर तुम्हारे हुक़ूक़ (अधिकार) हैं जिनको बयान करता हूं, तुमको उनके मुतअल्लिक़ मुझ से जवाब तलब करने का हक़ हासिल है।" (मुह़म्मद रज़ा : अलफ़ारूक़ उमर बिनिल ख़त्ताब, मक्का शरीफ़, पेज 56)

दीने फ़ितरत इस्लाम की यह ख़ूबियां हैं जिनकी वजह से ग़ैर मुस्लिम की भी इस्लाम की तारीफ़ में जबान नहीं सूखती।

पंडित स्वामी विवेकानन्द लिखता है :

"अगर इस्लाम में अच्छाई नहीं होती तो वह एक दिन क़ायम न रहता, इस मज़हब में बेशुमार ख़ूबियां हैं।" (Swami Vivekanand : Hero of the world, p 120-130)

और एच. ए. आरगिब लिखता है :

"अगर कभी पूरब और पश्चिम की मुख़ालिफ़ क़ूवतें मिल बैठने के लिए सोचें तो इस्लाम का बीच में आना लाज़िमी शर्त होगा।" (Wither Islam, London, 1932, p 389)

और जार्ज बरनार्ड शाह लिखता है :

"मैंने मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मज़हब के लिए पेशिनगोई की है कि यह कल सबके लिए क़ाबिले क़बूल (Acceptable) होगा जैसा कि आज युरोप के

लिए क़ाबिले क़बूल हो रहा है।" (Collection of Writings of some eminent scholars, 1935, p 77)

और ग्रीनलीज़ कहता है :

"हक़ीक़त यह है कि इस्लाम की बुनियादों पर एक मुकम्मल आलमी (Global) मज़हब फ़ार्म किया जा सकता है।" (Duncan Green Lees, The Gospel of Islam, 1948, p 27)

एक और स्कालर लैसी टोन लोटन लिखता है :

"मैं तो यह कहूंगा कि इस्लाम सारी दुनिया के लिए मुनासिब है और इसमें कोई शक नहीं है।" (The Spaire, London, 1928)

टोन लोटन ने जिस हक़ीक़त का इज़हार किया है क़ुर्आन ने सदियों पहले उसका ऐलान कर दिया था, क़ुर्आन में है :

तर्जमा : "और ऐ महबूब (The Prophet) (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हमने तुमको न भेजा मगर ऐसी रिसालत (Prophet hood) से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है, ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता।"

(क़ुर्आन : सूरए सबा, आयत 28)

और क़ुर्आन में यह भी है :

तर्जमा : "और हमने तुम को न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए।" (क़ुर्आन : सूरतुल अम्बिया, आयत 107)

इस्लाम की इस हमःगीर (सब को गले लगाने वाली) दावत (Call) ही की वजह से इस नए युग के ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर मज़हबी हुकूमतों ने सोच समझ कर या बे सोचे इस्लाम की जिन बातों को अपनाया उन बातों में कभी नाकामी नहीं हुई। यही वजह है कि हिन्दोस्तान के एक हिन्दू स्कालर ने चन्द साल पहले अपनी हुकूमत से मांग रखी थी कि वह हिन्दोस्तान में कम से कम ताज़ीरात (Islamic Penal Code) और हुदूद के क़वानीन (Islamic Restrictive law) ही लागू कर दे। यह मांग निहायत ही उचित थी क्योंकि पहली बात तो यह है कि इस्लाम दुनिया

की हर क़ौम और इन्सान का मज़हब है, दूसरी बात यह है कि दुनिया में जहां कहीं ताज़ीरात व हूदूद के क़वानीन लागू किए गए वहां कहीं बद अमनी नहीं हुई। इस्लाम के मिज़ाज में सख़्ती नहीं नरमी है, वह ग़ैर मुस्लिमों का दुश्मन नहीं दोस्त है, उसको दुश्मनी उस ग़लत सोच से है जिसने उसके दिमाग़ में बसेरा किया है। जितनी इस्लामी हुकूमतें हैं वहां ग़ैर मुस्लिम अमन-ओ-अमान से रह रहे हैं। मिसाल के तौर पर पाकिस्तान ही को ले लीजिए यहां किसी भी ग़ैर मुस्लिम को मज़हबी बुनियाद पर क़त्ल किया गया न यहां इस तरह का कोई क़त्ले आम हुआ। हाल के (2002-2003) दहशत गर्दी के वाक़ियात में ग़ैर मुस्लिम अक़लियतों के साथ जो चन्द एक ज़ुल्म और बेरहमी की मिसालें पाई गई हैं उनका इस्लामी या मुल्की क़वानीन से कोई ताल्लुक़ नहीं बल्कि इस तरह की सारी कार्यवाहियां लानत और मलामत के क़ाबिल (निन्दनीय) हैं। यही वजह है कि उलमाए हक़ ने और ज़िम्मेदार दीनी हल्क़ों ने इसकी हरगिज़ ताईद (Support) नहीं की बल्कि कठोर शब्दों में निन्दा की गई है। आपस में लड़ते मरते ज़रूर हैं लेकिन ग़ैर मुस्लिम अमन-ओ-अमान से रह रहे हैं। दुनिया की हुकूमतों का माज़ी व हाल (Past & Present) हमारे समने है। कोई भी ग़ैर मुस्लिम आलमी सतह पर जायज़ा ले तो इस नतीजे पर पहुंचेगा कि दीने फ़ितरत अमन-ओ-सलामती का मज़हब है। हां! अगर किसी के हुकूक़ (Rights) कुचले जाएं तो यह इन्सानी नेचर है कि पहले वह सुलझे हुए ढंग से अपने हुकूक़ की मांग करता है फिर वह अपना हक़ लेने के लिए लड़ने मरने से नहीं डरता। इस्लाम ने चूंकि इन्सानों को बेदार किया (जागृत किया) उनको हौसला दिया इसलिए वह हुकूक़ लेने में ज़ालिमों से संघर्ष करने में आलमी सतह (विश्व स्तर) पर निहायत मुमताज़ (Distinctive) नज़र आते हैं मगर अधिकारों के लिए संघर्ष करना किसी भी सही इन्सान की नज़र में दहशत गर्दी नहीं बल्कि ऐसी जद्दोजहद मुस्तक़बिल (Future)

में काम आती है। दीने फ़ितरत इस्लाम की बाज़ ख़ूबियों का ऊपर ज़िक्र किया गया है अब बाज़ मुमताज़ ख़ूबियों का सरसरी जायज़ा पेश करते हैं ताकि दीने फ़ितरत की तस्वीर और निखर कर सामने आ जाए और यह मालूम हो जाए कि दीने फ़ितरत तमाम इन्सानों का दीन है।

प्रोफ़ेसर रामाकृष्णा राव
हेड आफ़ दी फ़िलास्फ़ी डिपार्टमेन्ट,
आर्ट्स कालेज, मैसूर, भारत

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की शख़्सियत की पूरी सच्चाई बयान करना इन्तहाई मुश्किल है। मैं सिर्फ़ उसकी एक झलक बयान कर सकता हूं। मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) बहैसियत पैग़म्बर, मुहम्मद बहैसियत जरनैल, मुहम्मद बहैसियत बादशाह, मुहम्मद बहैसियत सिपाही, मुहम्मद बहैसियत ताजिर (Businessman), मुहम्मद बहैसियत मुबल्लिग़ (Propagator), मुहम्मद बहैसियत फ़िलास्फ़र, मुहम्मद बहैसियत सियासतदान, मुहम्मद बहैसियत रिफ़ार्मर, मुहम्मद बहैसियत यतीमों के सरपरस्त, मुहम्मद बहैसियत ग़ुलामों के मुहाफ़िज़ (Guardian), मुहम्मद बहैसियत औरतों के नजातदहिन्दा (Salvator), मुहम्मद बहैसियत जज, बहैसियत रूहानी पेशवा --- इन तमाम आला किरदार (उच्चतम चरित्र) और इन तमाम इन्सानी क़दरों (Human Values) में आप हीरो की तरह थे।"

(माहनामा (Monthly) पेशवा, देहली, रसूल नम्बर, 1927 ई.)

नवां बाब (Chapter 9)
दीने फ़ितरत के ख़िलाफ़ तहरीकें (Movements)

दीने फ़ितरत के लिए आलमी बेदारी की लहर ने उसके मुख़ालिफ़ीन को मजबूर किया कि वह ऐसे बाग़ियाना मज़हब को ईजाद करें जो दीने फ़ितरत के असरात (प्रभाव) को ख़त्म कर दे। इस ईजाद में ग़लतकार मज़हबी रहनुमाओं का भी हाथ हो सकता है और मज़हब के बाग़ियों का भी।

माडर्न ऐज में मज़हबी रहनुमाओं से मायूस होकर इन्सान बहुत ही पस्ती में चला गया जहां से ऊपर उठ पाना बहुत ही मुश्किल नज़र आता है अलबत्ता और पस्त होना आसान मालूम होता है। 1969 ई. में कैलीफ़ोर्निया स्टेट के मशहूर शहर "सानफ़्रन्सिसको" के "डाक्टर ऐंथोनी लाफ़ी" ने शैतानी मज़हब का दावा किया और इंजीलुश्श्यातीन के नाम से एक किताब भी छापी। जिसका मरकज़ी ख़्याल (Central Idea) यह है कि बुराई और ग़लत काम एक पाक अमल हैं; शैतान इबादत के लायक़ और आदर के क़ाबिल है (मआज़ल्लाह Allah Forbid!); उसकी भक्ति पूजा की बुनियाद है। डा.लाफ़ी ने शैतान की इबादत के लिए एक इबादत ख़ाना बनवाया जिसका नाम "कलीसा" या "माबदश्शैतान" (The worship place of Satan) रक्खा। यह हक़ीक़त उस वक़्त ज़ाहिर हुई जब रमज़ान के महीने 1317 इस्लामी शताब्दी / 1997 ई. में मिस्री फ़ौज ने क़ाहिरा में छापा मार कर इस मज़हब के मानने वालों को गिरफ़्तार किया जिसमें ज़्यादातर स्कूल, कालेजों के स्टूडेन्ट्स और यहूदी ईसाई खाते पीते घरानों के नवजवान थे।

इस मज़हब में म्यूज़िक को मुक़द्दस (Holy, Sacred) समझा जाता है। पोप म्यूज़िक (Pop Music) का ताल्लुक़ इसी

से है जो हमारी सोसाइटी में दाख़िल हो चुकी है। यह लोग शिनाख़्त के लिए चमड़े के बने हुए लिबास पहनते हैं जिन पर खोपड़ियों की डरावनी तस्वीरें और ज़ोरदार जुमले (Sentences) होते हैं। अक्सर इन्सानी खोपड़ियों पर ज़रब यानी गुणा के निशान (X) की सूरत में हड्डियां बीच में होती हैं; यह इनका मज़हबी निशान है। इन लोगों की चन्द निशानियां यह हैं :

(1) लम्बे बाल रखते हैं।

(2) नाख़ुन बढ़ाना सवाब का काम समझते हैं।

(3) अपने जिस्मों पर मुख़तलिफ़ जंगली जानवरों की शक्लें या अपना मोनोग्राम बनाते हैं।

(4) औरतें चेहरे को काला रखती हैं, गहरा लाल रंग इस्तेमाल करती हैं।

(5) नौजवान लड़के और लड़कियां आज़ादाना जिन्सी मिलाप (Sexual Intercourse) करते हैं।

(6) ख़ास तरीक़े से आग की पूजा करते हैं और "इन्जीलुश्शयातीन" पढ़ते हैं जिसमें शैतान की मज़लूमियत का ज़िक्र होता है।

(7) तबलीग़ के लिए फ़ाइव स्टार होटलों में म्यूज़िक का प्रोग्राम रखते हैं।

(8) बच्चों के क़त्ल को पुन्न समझते हैं कि इससे शैतान ख़ुश होता है।

मिस्री आलिम शैख़ नसर फ़रीद ने इस मज़हब के लोगों को मुर्तद (Apostate) और वाजिबुल क़त्ल (Deserving Death) क़रार दिया है। जिसकी अज़हर यूनिवर्सिटी क़ाहरा के शैख़ुल जामिया (Vice Chancellor) सय्यद तन्तावी ने तस्दीक़ की है।

शैतानी मज़हब की तफ़्सीलात (Details) आपने देखीं। यह नतीजा है मज़हबी रहनुमाओं की बदआमालियों का और विश्व स्तर पर दीने फ़ितरत को न अपनाने का। अगर दीने फ़ितरत को उसकी अपनी सही स्प्रिट के साथ अपनाया जाता तो यह

हाल न होता। एक ख़बर देखें :

"ब्रिटेन की "जिन्न एण्ड कम्पनी" ने एक किताब छापी है जिसका नाम है "God and Godesses" यह आक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस ने पब्लिश की है। यह किताब इस्लामाबाद के फ़ाबेल्ज़ इन्टरनेशनल स्कूल (Fraebel's International School) में साइलेबस (Syllabus) में दाख़िल थी और इस एहतियात से पढ़ाई जाती थी कि कानो कान किसी को ख़बर न हो। कोर्स की यह किताब स्टूडेन्ट्स को बाहर ले जाने की इजाज़त न थी। इस किताब का मक़सद बच्चों को अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत पर उकसाना, नबीए करीम (The Holy Prophet) सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मज़ाक उड़ाना और इस्लामी तसव्वुरात (इस्लामी विचारों) के बारे में उनके ख़्यालात को छिन्न भिन्न करना है।

एक और ख़बर देखें : इन्टरनेट पर क़ुर्आन मजीद की चार जाली सूरते पेश की जा रही हैं जिनके नाम और मज़ामीन (Subjects & Matters) दिल से गढ़ लिए गए हैं और यह सब कुछ इन्टरनेशनल लेबिल पर हो रहा है। सूरतों के नाम और मौज़ुआत (सब्जैक्ट मैटर) यह हैं जिन से उनके उद्देश्य का ख़ूब अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

(1) सूरा तसज्जुद (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में 15 आयतें)

(2) सूरतुल ईमान (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और आपके हवारियों के बारे में 10 आयतें)

(3) सूरतुल मुस्लिमून (ग्यारह आयतों में तौरैत और इंजील छोड़ने वालों के लिए वईदें (Threats) और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को गुमराह करने वाला कहा गया है (मआज़ अल्लाह - Allah Forbid)

(4) सूरतुल वसाया (सोलह आयतों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ात्मुन्नबीईन (Last Prophet) और शरीअत को मन्सूख़ (Cancel) करने का मुख़्तार (Authority) बताया गया है)

(महानामा दावते तन्ज़ीमुल इस्लाम, गुजरांवाला, सितम्बर 1998 ई. पेज 25-29)

एक और ख़बर अमरीका के डाक्टर शब्बीर अहमद की किताब "दस्तक" से मालूम होती है। (पाकिस्तान स्टार, कनाडा, ईशू 26 मई से पहली जून 1998 ई. - दस्तक "नया क़ुर्आन" - डा. शब्बीर अहमद (फ़्लोरिडा, अमेरिका))। और वह कि कलामुल्लाह (The Quran) के अल्फ़ाज़ बदले जा रहे हैं; हुरूफ़ (अक्षर) तब्दील किए जा रहे हैं; आराब (Vowel Points यानी ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह) गिराए जा रहे हैं; आयतों के नम्बर आगे पीछे किए जा रहे हैं; यहां तक कि क़ुर्आने करीम की सूरतों के नाम बदल कर नए नाम दिए जा रहे हैं। यह सब कुछ ख़ादिमुल हरमैन शरीफ़ैन मलिक फ़हद बिन अब्दुल अज़ीज़ के नाम से 1410 हिजरी / 1990 ई. में मलिक फ़हद प्रिन्टिंग प्रेस, मदीना मुनव्वरा से छपने वाले मसहफ़ुल मदीना में मौजूद है। यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि यह ज़माना जब पश्चिमी देशों ने सहराए तूफ़ान के नाम से इराक़ पर हमला किया था --- पश्चिम की यलग़ार (चढ़ाई) अरब वालों की जदीद महकूमी (नई ग़ुलामी); मुसलमानों पर बुनियाद परस्ती के इल्ज़ामात, इस्लामिक नेशन में बेदारी के आसार और क़ुर्आन की तरफ़ लौटने की धीमी आवाज़ के बैकग्राउन्ड में इस तब्दीली को समझने में दिक़्क़त न होगी। जिसका हम ने ऊपर ज़िक्र किया।

बेहतर तो यही था कि आधुनिक युग के स्कालर "जार्ज बरनार्ड शाह" की इस पेशिनगोई पर सोच विचार करते जिसका हमने ऊपर ज़िक्र किया लेकिन इसके विपरीत एक तो वह कोशिशें की गईं जिनका हमने ऊपर ज़िक्र किया और एक यह कोशिश की जा रही है कि "वहदतुलअदयान" (Oneness of the Religion) का एक नया आइडिया पेश किया गया। यहूद-ओ-नसारा ने मैग़ज़ीनों, अख़बारों और दूसरे मीडिया के ज़रिये दुनिया भर के इन्सानों को दावत दी कि वह इस्लाम, ईसाइयत, यहूदियत में

से कोई सा भी मज़हब रखते हों उस बुनियाद पर वहदतुल अदयान के प्लेटफार्म पर जमा हो जाएं। यह तीनों अदयान आसमानी सहाइफ़ (Heavenly Books) पर आधारित हैं --- इसके लिए उनकी तजवीज़ यह है कि यूनिवर्सिटीयों, हवाई अड्डों और दूसरी जगहों पर मुसलमानों की मस्जिद, ईसाईयों का गिरजा और यहूदियों के हैकल एक साथ बनाए जाएं और क़ुर्आन, तौरैत और इन्जील को एक ही जिल्द में पब्लिश किया जाए --- ज़ाहिर में यह ख़्याल अच्छा मालूम होता है लेकिन जब ईसाईयत व यहूदियत दोनों इस्लाम से टूट कर वजूद में आई हैं तो फिर क्यों न यह दोनों अपने घर इस्लाम में चले जाएं --- इसके इलावा क़ुर्आने करीम तारीख़ (इतिहास) की सबसे सच्ची किताब है तो यह तौरैत व इन्जील के साथ क्यों पब्लिश किया जाए जबकि उनके नाम ही नाम हैं और अस्ल (Text) रिसर्चर्स के लिए मशकूक है जिसमें इन्सानी रचनाएं भी शामिल हैं।

अरब दुनिया में "वहदतुल अदयान मूवमेन्ट" के ख़िलाफ़ काफ़ी चर्चा है। (मज़ीद तफ़्सीलात के लिए (For Further Details) नीचे लिखे हुए हवालें देखें :

(1) माहनामा मिनारुल हुदा, बैरूत, ईशू 52, मार्च 1997 ई.
(2) वीकली अलमुसलिमून, 31 जनवरी 1997 ई.
(3) वीकली लन्दन, ईशू 9 से 10 फरवरी 1997 ई.
(4) माहनामा नूरुल हबीब, बसीरपुर, पाकिस्तान, मई 1997 ई.
(5) महानामा कंज़ुल ईमान, लाहौर, अगस्त 1997 ई.)।

अख़बारुल मुस्लेमीन के मुतअल्लिका सफ़हात (Related Pages) में डाक्टर मुहम्मद जीराल अल्फ़ी ने लिखा है कि जब वह फ़्रान्स मे पढ़ते थे तो वहां "उख़ूवते इब्राहीमी" के नाम से एक तहरीक चलाई गई जिसमें कहा गया कि मुसलमान, ईसाई यहूदी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मानवी औलाद (Spiritual Children) हैं इसलिए इन मज़हबों के मानने वालों को एक झंडे तले जमा होना चाहिए। यही तहरीक आगे चलकर "वहदतुल

अदयान" के नाम से सामने आई।

फिर सुन्द्रम समां नहीं होई
(फिर यह सुन्दर समां नहीं होगा)
तुलसी बचन सृत मत गोई
(तुलसीदास यह बात सच कहता है)

बाबा नानक की नसीहत

पहला नाम ख़ुदा का दूजा नाम रसूल
तीजा कलिमा पढ़ ले नानका जो दरगाह पवैं क़बूल
यानी पहला नाम ख़ुदा का और दूसरा नाम रसूल का –
तीसरा कलिमा पढ़ ले नानका ताकि अल्लाह की दरगाह में क़बूल हो जाए।

गोस्वामी तुलसीदास की नसीहत

काशी पर्वत या धन तीरथ सभी नाकाम
बैकुंठ बास न पाई बिना मुहम्मद नाम

गुरू कबीर दास की नसीहत

ला इलाह का ताना इल्लल्लाह का बाना
दास कबीर बुनन को बैठा उलझा सूत पुराना

और बहुत सी बशारतें (Glad tidings) आँ हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की हर एक मज़हब की किताबों में मौजूद हैं। मैटर बढ़ जाने की वजह से इतना ही लिखा जा रहा है। हक चाहने वाले के लिए इसी क़दर काफ़ी है। अब हम आँ हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सदाक़त और मक़बूलियत पर ऊपर ज़िक्र की गई किताबों के इलावा वह शहादतें पेश क़रते हैं जिनको आपके रब (Lord) ने उस ज़माने के अन्दर भी मुख़ालिफ़ीन के लिए मज़बूत दलाइल और खुले हुए सबूत क़ायम कर दिए है और उनके बाद वही इन्कार कर सकता है जो हमेशा का बद नसीब है।

दसवां बाब (Chapter 10)

दीने फ़ितरत की चन्द झलकियाँ

दीने फ़ितरत अल्लाह की रहमत है लेकिन बहुत से इन्सानों ने इस रहमत को जाना न पहचाना, जाना तो यह जाना कि :-

1- यह ज़ालिम ओ जाबिर है, यह जंगजू है, यह ख़ून बहाने वाला है (मआज़ अल्लाह)

2- यह औरतों को क़ैद करता है, औरतो पर ज़ालिमाना पाबन्दियाँ लगाता है।

3- सूद को हराम करके मईशत (Economy) को तबाह करता है। (मआज़ अल्लाह)

4- यहाँ सरसरी तौर पर इन्ही तीन प्वाइंटस पर रौशनी डालकर हम बताएँगें कि दीने फ़ितरत इस्लाम कितना खादार (Liberal) है, कितना ग़मख़्वार है, औरतो पर कितना मेहरबान है, कैसा रहीम ओ करीम है, डूबती ईकॉनामी को किस तरह संभाला देकर तरक़्क़ी की ऊंचाई तक पहुंचाया कि समाज में कोई मांगने वाला नहीं रहता, सब देने वाले बन जाते है। दीने फितरत एक नज़रिया ही नहीं एक अज़ीम तजुर्बा है जिस पर प्राचीन युग और आधुनिक युग के इतिहास गवाह हैं। अस्ल बात यह है कि यह अय्याशियों को पसन्द नहीं करता, दुनिया के अय्याश इसको पसन्द नहीं करते और इसका उलट पुलट करने की फिक्र में रहते है। इनको यह डर खाये जाता हे कि दीने फितरत लागू न हो जाए, कहीं अय्याशियां खत्म न हो जाएं, कहीं मुहब्बत की अमलदारी न हो जाए, कहीं नफरतें खत्म न हो जाएं, कहीं मज़लूमो के हाथ ज़ालिमों के गरीबान तक न पहुच जाएं, कहीं फ़रियादी की दादरसी (इन्साफ़) न हो जाए, कहीं कमज़ोर जबरदस्तों पर न छा जायें, कहीं ग़ुलाम आक़ा न बन जाएं, कहीं भीख मांगने वाले भीख न देने लगें, कहीं ग़रीबों को चैन न मिल

जाए, कहीं फक़ीरो को आराम न मिल जाए, कहीं तड़पते भूखों को खाना न मिल जाए, कहीं सिसकते प्यासों को पानी न मिल जाए, कहीं बिलकते बच्चों को माँ का दूध न मिल जाए, कहीं इन्सानियत का बोलबाला न हो जाए, कहीं हमदर्दी न जाग उठे, कहीं निर्दयता सोती न रह जाए, कहीं खूँरेजी पामाल न हो जाए, इन्हीं अन्देशों ने अय्याशों की नींदें हराम कर रखी है। इस लिए ज़रूरी है कि दीने फ़ितरत इस्लाम पर जो इल्ज़ाम तराशियां की जाती हैं, उनकी व्याख्या की जाए ताकि आज के नए दौर का पढ़ा लिखा इंसान इंसाफ कर सके, अपनी सोच बदल सके, खरा और खोटा अलग कर सके। यहां दीने फ़ितरत इस्लाम की सिर्फ चन्द झलकियाँ पेश की जाती है। जहां तक दीने फ़ितरत इस्लाम के जब्रो जुल्म का ताल्लुक़ है तो मैं अर्ज़ करूंगा कि यह ऐसा सहनशील है कि शायद इतिहास ने भी ऐसी सहनशीलता न देखी हो।

रवादारी (सहनशीलता)

दीने फ़ितरत इस्लाम में रवादारी का जो अज़ीम तसव्वुर है वह इतिहास में कहीं नहीं मिलता, यहाँ तक कि दौरे जदीद में भी नहीं मिलता, जो तहज़ीब ओ कल्चर का दावेदार है। मैं यहाँ सरसरी तौर पर इस्लाम के इस रौशन पहलू पर रौशनी डालता हूं, ताकि रीडर्स हक़ाइक की रौशनी में यह फ़ैसला कर सकें कि जंग करने और लड़ाई वगैरह के हवाले से दीने फितरत इस्लाम के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह सरासर झूट है और तारीखी हक़ायक़ पर आधारित नहीं है।

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 570 ई0 में मक्का शहर में पैदा हुए, 610 ई0 में दीने फ़ितरत इस्लाम की तरफ बुलाना शुरू किया और उसके नतीजे में अपने हम वतनों के जुल्म ओ सितम सहे, यहां तक कि 622 ई0 में प्यारे वतन को छोडकर मदीने शरीफ़ हिजरत फरमाई लेकिन हथियार न

उठाये फिर भी आपके दुश्मनों ने आपको चैन न लेने दिया और मक्का से 400-500 कि0मी0 का रास्ता तय करके मदीना शरीफ और उसके आसपास के इलाक़ो में एक के बाद एक हमले किये चुनांचे 2 हिज्री (इस्लामी शताब्दी) 623 ई0 में गज़वा ए बद्र (गज़वा उस जंग को कहते है जिसमे होली प्राफिट खुद शामिल रहे हों, बद्र जगह का नाम है) पेश आया। 3 हिज्री / 625 ई0 में गज़वए उहद पेश आया। 14 हिज्री / 625 ई0 में गज़वए बनी क़ैनक़ाअ पेश आया। 5 हिज्री / 628 ई0 में गज़वए खंदक पेश आया यह सारे हमले मक्का वालों ने किये फिर ताज्जुब की बात यह है कि 6 हिज्री 628 ई0 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिना किसी हथियार के अपने साथियों के साथ शहरे मक्का की तरफ़ हज ओ उम्रे के इरादे से रवाना हुए जहां से पिछले चार साल से बराबर हमले किये जा रहे थे जो आपके दुश्मनों का मरकज़ था। आपने अपने अमल से यह बता दिया कि आप जंग नहीं मुहब्बत चाहते है। कोई फौजी जरनैल ऐसा नहीं कर सकता कि जिस शहर से उसके ख़िलाफ़ जंग लड़ी जा रही हो उस शहर में वह अम्न का पैग़ाम लेकर जाये। बहर हाल आप मक्का की सरहद हुदैबिया पर ठहर गये और मक्का वालों से अन्दर आने की इजाज़त चाही । उन्होने इजाज़त नहीं दी और एक एग्रीमेण्ट हुआ जिसके नतीजे में आपको हज ओ उम्रे के बिना चार या पॉच सौ कि0मी0 वापिस जाना पडा। आपने इस परेशानी को बर्दाश्त किया और मक्का वालों से झगडा न किया। इससे आपकी सियासी सूझबूझ और सहनशीलता का अन्दाजा होता है। 8 हिज्री / 630 ई0 में जब मक्का वालों ने अपने अमल से यह एग्रीमेण्ट खुद तोड़ दिया तो आप पूरी तैयारी के साथ मक्का रवाना हुए और उस शहर को फ़तह किया मगर इस शान से कि तलवारें मियान में रखने और हाथों को ख़ून ख़राबे से रोकने का हुक्म दे दिया गया जो निहायत ही अचम्भे की बात है। ऐसे मौक़ों पर तो दुनिया के फौजी जरनैल और बादशाह

अपने दुश्मनों की लाशों के ढेर लगा दिया करते है।

इस फ़तह मक्का में किसी बेगुनाह को क़त्ल नहीं किया गया और ऐलान कर दिया गया कि "आज के दिन तुम पर कोई पकड़ नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो।" इन आज़ाद होने वालों में हिन्दा नामक वह औरत भी थीं जिन्होने उहद की लड़ाई में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपने ग़ुलाम वहशी से ख़न्जर से वार कराकर शहीद करवाया था और उनके एक-एक अंग को छिन्न भिन्न किया था। हिन्दा ने हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने उनके चचा के जिगर को चबाया था और क्या कुछ नहीं किया। (ज़रक़ानी Volume 2, Page No. 328)

ऐसी औरत को कौन मुआफ कर सकता है। मगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको भी मुआफ कर दिया। इससे आपकी इन्तेहा दर्जे की दरिया दिली का अन्दाजा होता है। 11 हिज्री / 632 ई0 तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नें 8-9 सालों में अपने दुश्मनों से जो जंगे लड़ी उनमे दोनों तरफ के एक हज़ार से ज़्यादा लोग शहीद और क़त्ल न हुए। इतने लोग तो हमारे बड़े शहरों में हर साल मर जाते है और कुछ हासिल नहीं होता। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इतना कम ख़ून बहाकर इतना बड़ा इन्क़लाब बरपा किया। इस तारीखी हक़ीकत पर ग़ौर ओ फ़िंक्र करनी चाहिए। अस्ल ग़लतफ़हमी उन आयतों से फैलाई गई जो हंगामी क़िस्म की थी और जिनमे काफिरों और मुशरिकों और यहूद ओ नसारा को क़त्ल करने का हुक्म दिया गया। (क़ुर्आन : सूरए बक़रा, आयत 191; सूरए निसा, आयत 89-91; सूरए तौबा आयत 111; सूरए सफ़, आयत 4; सूरए मुज़म्मिल, आयत 20) यह हुक्म हर वक़्त के लिए न था बल्कि एक ख़ास वक़्त और ख़ास सूरते हाल के लिए था और है। और इस हक़ीक़त को नजर अन्दाज़ नहीं करना चाहिए चूंकि मुसलमान अपने

दुश्मनों से जंग में मसरूफ थे, और क़ुर्आन नाज़िल हो रहा था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ जिहाद कर रहे थे और मौक़ा ओ महल से अल्लाह के अहकाम (आदेश) मिल रहे थे। इस तरह की आयतों में उन्हीं लोगों का क़त्ल करने का हुक्म दिया गया है जो क़त्ल करने के लिए आए थे दूसरों को नहीं, जबकि इस दौर में तहज़ीब ओ तरक़्की की दावेदार क़ौमें बेगुनाह इन्सानों को बेदरेग़ क़त्ल कर रही हैं। यह बात भी ज़हन में रखना जरूरी है कि इस्लामी जेहाद या इस्लामी जंग न औरत के लिए होती है ओर न दौलत के लिए और न ज़मीन के लिए। इसका मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह कें बन्दों को दीने फितरत पर अमल कराना और इन्सानों की भलाई के लिए दीने फितरत की हुकूमत कायम करना होता है। इसलिए कोई किसी क़ौम की औरतों को छीनने या भगाने के लिए जंग करता है या किसी की दौलत लूटने के लिए जंग करता है या किसी की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के लिए जंग करता है या किसी को बेवजह दबाने और ग़ुलाम बनाने के लिए जंग करता है तो यह दीने फितरत में हराम और नाजायज़ है। ऐसी जंग कोई भी मुसलमान लड़े वह हराम है वह हरगिज़ जेहाद नहीं। दीने फितरत में जिहाद बडी मुक़ददस जंग है। इस जंग में जिस रवादारी से काम लिया जाता है दुनिया की तारीख में उसकी नज़ीर नहीं मिलती। यहां सिर्फ एक मिसाल पेश करता हूं। 11 हिज्री / 632 ई0 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शाम की तरफ एक लश्कर भेज रहे थे। उसी साल आपका विसाल (death) हुआ। फौज को आपने जो हिदायात (निर्देश) दिये वह सुनहरी अक्षरों से लिखने के क़ाबिल है। किसी कमाण्डर ने अपनी फौज को यह हिदायत नहीं दी होगी। देखिए आपनें फरमाया :

1– वहां तुम्हें ख़ानक़ाहों में गोशा नशीन (एकांतवास), राहिब (सन्यासी) भी मिलेंगे ख़बरदार उन्हें कुछ न कहना।

2- देखो औरत, दूध पीते बच्चे को और बूढे को क़त्ल न करना।

3- न खजूर या दूसरा पेड़ काटना, न कोई इमारत गिराना। (अब्दुल क़य्यूम खुतबाते नबवी, लाहौर पेज 180, 186)

नोट: डा0 हांस क्रोन्ज़े ने जंग की हालत में इस्लाम की रवादारी का ज़िक्र किया है। The foundation of International Islamic jurisprudence, Karachi P-17(11) डा0 गुस्तावली वान : तमददुने अरब, हैदराबाद, दकन, पेज 124)

दौरे जदीद (आधुनिक युग) में तहज़ीब और कल्चर के दावेदार इबादत खाने भी तबाह करते हैं। आबिदों को भी कत्ल या शहीद करते हैं, आन की आन में औरतें, दूध पीते बच्चे, बूढे सब क़त्ल कर दिये जाते हैं, इमारते ढाह दी जाती हैं, गुलशन घीरान कर दिये जाते हैं। अफ़सोस हम दीने फितरत की रहमतों से महरूम हैं।

"मजमूई तौर पर गैर मुस्लिमों ने मुसलमानों की हुकूमत में जिस शान की रवादारी से लुत्फ उठाया उसकी मिसाल यूरोप में इस जदीद दौर में भी नहीं मिलती।" टी0डब्लू0 आरनल्ड ने बड़ी दिल लगती बात कही है "On the whole, belivers have enjoyed under Muhammdan rule a measure of tolerance the like of which is not to be found in Europe, until quite modern time". (T.W.Arnold: The Preaching of Islam Lahore, 1950; page 420)

औरत

दीने फितरत ने औरतों के बारे में मर्दों को बेहतरीन शऊर (चेतना) दिया। अरब में लड़कियों को जिन्दा दफ़न किया जाता था जिसकी गवाही क़ुर्आन से मिलती है (क़ुर्आन : सूरा-तकवीर आयत 8-9)। सब काण्टीनेंन्ट में विधवा औरत को मुर्दा शौहर के साथ जिन्दा जला दिया जाता था (डा0 गस्तावली बान तमददुने हिन्द, उर्दू तर्जमा, कराची 1962, पेज न-238, सफ़रनामा इब्ने

बतूता, कराची 1986 ई0 पेज न-36, 37)। यूरोप में जादूगरी और बहुत से मामूली इल्ज़ामों में हजारों औरतों को जिन्दा जला दिया गया (नियाज़ फ़तेहपुरी : सहाबियात, पेज न-11), इसकी शहादत भी तारीख़ से मिलती है। हमारे युग में नई तहज़ीब के मतवाले इस तरह के क्राइम कर रहे है। जाहिलियत के ज़माने में लड़की के पैदा होने पर बाप मुहं बिसोरा करते थे जिसका ज़िक्र क़ुर्आन में मौजूद है। (क़ुर्आन सूरा ज़ख़रफ़, आयत-17)

दीने फितरत इस्लाम ने औरत को ज़मीन से उठाकर आसमान तक पहुचांया और यह आईडिया दिया कि जन्नत मां के पैरों तले है (इब्ने माजा पेज नम्बर-460)। इस्लाम ने औरत को इज़्ज़त दी, समाज में एक मुक़ाम दिया, जो माल की वारिस न थी बल्कि ख़ुद बपौती माल समझी जाती थी उसको वारिस बनाया (माल का हक़दार बनाया) घर का मालिक बनाया, मलका बनाया, मां की सेवा को बाप की सेवा से तीन गुना ज़्यादा माना गया (बुखारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ)। मां-बाप को बड़ा वक़ार दिया (क़ुर्आन, सूरए असरा, आयत-23-24) जबकि मौडर्न सोसायटी में मां-बाप के लिए अपनी ही औलाद के घर में कोई जगह नहीं। यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनकी गुज़र बसर का इन्तेज़ाम हुकूमत करती है। उनकी आबादियाँ भी अलग है जहां सिर्फ़ बूढ़े मां-बाप रहते हैं। वह अपनी औलाद की ख़िदमत से महरूम हैं। एक-एक को तरसते हैं दिल मसोस कर रह जाते हैं।

दीने फितरत इस्लाम ने शादी-शुदा तअल्लुक़ (वैवाहिक सम्बन्ध) को मुक़द्दस बनाया, मसली निकालने का ज़रिया क़रार न दिया (क़ुर्आन सूरतुन्निसा, आयत 24,25, सूरए माइदा, आयत-5) बल्कि मुहब्बत और स्नेह का वसीला क़रार दिया (सूरए रूम, आयत-21) ताकि समाज में ठहराव पैदा हो, घर सुकून (शान्ति) और चैन का गहवारा बन जाए और इन्सान की जिन्दगी आराम से गुज़र जाये। बेआसरा और बेकस बेवा औरतों

को बेबसी और बेकसी की जिन्दगी से निकाल कर शादी के लिए उभारा (सूरए बक़रा, आयत-234, 235)। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने 25 साल की उम्र में 40 साला बेवा से शादी की और कई बेवाओं से शादी कीं, (ज़रक़ानी volume-2, P-282 व मदारिजुन्नबुआ volume-2, page no.815)। औरतों पर मेहरबानी फरमाई, कि ऐसी मेहरबानी न इस ज़माने में नजर आती है और न उस ज़माने में। दीने फितरत ने मेहनत को तक़सीम किया और औरत व मर्द की जिम्मेदारियों को इस तरह बांटा कि समाज किसी तरह की बेचैनी का शिकार न हो क्योंकि अस्ल चीज दौलत व अमीरी नहीं चैन व सुकून है। धन दौलत एक ज़रिया है, वसीले को उददेश्य न बनाना चाहिए। इस्लाम ने घर से बाहर की जिम्मेदारियॉ मर्द के सुपुर्द की और घर के अन्दर की जिम्मेदारियां औरत के सुपुर्द कीं गोया फारेन मिनिस्ट्री मर्द के पास रखी, और होम मिनिस्ट्री औरत के पास। अगर होम मिनिस्ट्री फारेन मिनिस्ट्री में मदाख़लत करे या फारेन मिनिस्ट्री होम मिनिस्ट्री में तो हुकूमत नहीं चल सकती और अम्न ओ अमान ख़्वाब बनकर रह जाता है। जिस समाज में मर्द व औरत ने अपने अपने सर्किल में रहकर मेहनत व मशक़्क़त की वह समाज, उलझनों और बेचैनियों का शिकार न हुआ। पहले समाज में यह खूंरेजियां कहां थीं, यह असमत दरिया (औरतों की इज्जत लूटना) कहां थीं, यह खुदगर्जियां (स्वार्थ) कहां थीं, यह नफ़्स परस्तियां कहां थीं, यह लूटमार, ख़ूनख़राबा, क़त्लो ग़ारतगरी कहां थी? मशहूर हिसटोरियन टोएम्बी ने लिखा है कि समाज की तबाही में औरत की बेलग़ाम आज़ादी एक अहम तत्व और सबब (कारण) है। और डा0 इक़बाल ने भी औरत की ऐसी आज़ादी जिसमे मां बनने का जज़्बा मुर्दा हो जाए इन्सानियत के लिए मौत क़रार दिया है। सच्ची बात यह है कि हम दीने फितरत पर चलकर ही विश्व शान्ति की ज़मानत दे सकते है वरना जिस राह पर हम चल रहे है उससे परेशानियां बढ़ती ही जायेंगी और अम्न चैन बरबाद होता चला जाएगा ।

ग़ुलामी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दौर में ग़ुलामी की जड़ें बड़ी मज़बूत थीं जिसको उखाड़ फेंकना एक दम मुम्किन न था। इसलिए इस्लाम ने आक़ा और ग़ुलाम के फ़र्क को मिटाकर बता दिया कि हर इन्सान आपस में बराबर है। वही महान और पसन्दीदा है जो पाकबाज़ और सच बोलने वाला हो और अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहकाम की सबसे ज्यादा पैरवी करता हो चाहे आक़ा हो या ग़ुलाम। इस्लाम में बाज़ (कुछ) जुर्मों की सज़ा यह रखी गई कि ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया जाता।

ग़ुलाम को आज़ाद करने की बड़ी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) बताई गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खुद ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद कराये और आपके सहाबा ने भी ऐसा किया। अलग़र्ज़ (इन शार्ट) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नें अपने क़ौल ओ अमल (कथनी व करनी) से हमको यह बता दिया कि ग़ुलामी का क़दीम तरीक़ा आपकी नज़र में नापसन्दीदा है।

मआशियात (इकॉनॉमिक्स)

इन्सान की फितरत है कि वह माल ओ दौलत से मुहब्बत करता है। (क़ुर्आन : सूरए हमज़ा, आयत 1-3; सूरए मआरिज, आयत 15-18; सूरए बक़रा, आयत 261) ज़रूरत के लिए चाहना तो एक फितरी (नैचुरल) बात है मगर दौलत से बेवजह मुहब्बत करना और जमा करके अम्बार लगाना सिर्फ नफ़्स की ख़ुशनूदी के लिए एक अनुचित बात है। समाज की सारी बुराईयों की जड़ दौलत की मुहब्बत है इसलिए दीने फितरत इस्लाम ने इस मुहब्बत पर गहरी चोट लगाई, नफ़्सियाती (मनोवैज्ञानिक) चोट यह लगाई कि हर मुसलमान के लिए ईमान की यह शर्त क़रार दी कि उसको अल्लाह और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो